रामायणरामानुरागावली का विज्ञापनपत्र ॥

प्रत्येक सज्जन रामानुरागियों को विदितहो कि इस पुस्तक को पण्डित शिवसहायजीके पुत्र और पं० जानकीवरशरणजी अयोध्या निवासी के शिष्य पंडित बैदेही शरण प्रसिद्धनाम बैजू ज़िला लखनऊ गोसाईंगंज निवासी ने ध्रुपद, बिहाग, चंचरीक, सोरठ, लावनी, ठुमरी, मलार, होली, बसन्त, गजल, ख्याल इत्यादि अनेक प्रकार के मनोहररागों में अत्यन्त परिश्रम से रचना किया है और अत्यन्त शुद्धता से स्पष्ट अक्षरों में छापीगई है जिसके पढ़ने से रामानुरागियों के चित्त में अत्यन्त आनन्द प्राप्तहोताहै गानेकी पुस्तकों में यह बहुत अद्भुत पुस्तक बनीहै इसकी प्रशंसा कहांतक कीजावै देखनेही से उत्तमता विदित होसक्ती है ॥

मनजर अवध अखबार

रामायणरामानुरागावली ॥

देवबन्दना ॥

बन्दों प्रथमें शंभुसुत सूर्यनको करि ध्यानि । कृपा कीजिये पवन सुत औ शारद महरानि ॥ भूल चूक जो कुछपरै नरै दोष नहिंमानि । बैजूपरदायाकरौ दास आपनो जानि ॥ गुरुचरणन परतापसे भईराम में प्रीति । तुलसिदासको सुमिरि के गाऊं हरिगुण गीति ॥ सब सन्तन के पगतरे रहौं सदा ह्वै नीच । जिनकी कृपाकटाक्षसे छूटत जगकीकीच (रागकाफी २) गाइये गणपति शिवनन्दन मंगल करन सकल दुख भंजन । जन्म जन्म के पापहरतहैं बुद्धि विशाल नयन के अंजन १ ऋद्धि सिद्धि सबदेत पलकमें जोजन भजत सकल तजि फंदन २ पहिले पहिल सकल देवनमें सदा होत इनकी नित पूजन ३ बैजूकहैं दान मोहिं दीजै भूलैनहीं दशरथ के नन्दन ४ (रागआसावरी ३) गणपति मंगलरूप तिहारे सिद्धकरो सब भजन हमारे । माता सती पिता

शिवशंकर तिनके भूषण बिषधरकारे १ ब्रह्मा विष्णु
महेश आदि दै इनसबमें तुमहीं अधिकारे २ वेदपुराण
जहाँ जहँ देखा पहिले लिखा तेरे नाम पियारे ३ बिनय
करतहौं दोउ करजोरे मांगन एक देहुबड़े भारे ४ बैजू
राम कि लज्जाराखौ रामचरणउर बसैं हमारे ५ (रागचं-
चरीक४) अगन भगन सगन माफकीजिये प्रभु मेरे। हौं
तौ पापी पतंग शरणआये तेरे रोग दोष दूरकरौ दश-
रथ सुतहेरे १ पाप दोष जौनकिहौं गनिजातना गनेरे
अबकी बेर दायाकरौ धर्म के निहोरे २ बैजूकहैं बारबार
दोनों करजोरे एहौ करुणानिधान मैं अधीन तोरे ३
(रागआसावरी५) चलब अब तुलसीके बचन प्रमाने।
भरमत फिरौं मोहमायामें मिथ्या जन्म सिराने॥ माता
पिता मोहिं समझायो पढ़िलेउहोहु सयाने। उनकाकहा
कछू नहिंभायो खेलकूद लपटाने १ माया मोह लोभ
रह्यो घेरे नेम बिचार न जाने। औसर बीतिगयो अब
मेरे काहहोत पछिताने २ विद्या ज्ञाननहीं कुछ मेरे करि
हौं नहिं झूंठ बहाने। हरिकी कृपा संतकी दाया रामच-
रण मनमाने ३ बैजूकहैं दोऊ करजोरे सुन मन मूढ़ दि-
वाने। कबहूं नाभूल्योचरणनको सदा रह्यो यहु जाने ४
(रागझँझोटी ६) गुरुचरणों में लागी प्रीति हमारीरे
प्रीति हमारी देखो रीति हमारीरे। सुंदर शीलस्वभाव
उजागर रीति भांति सबको करैं आदर उनकी सुरति
मोहिं अति लागै प्यारीरे १ दौ अरुणनयन बोलैं मीठे
बयन सरयूतट बैठे करत चयन सबछोड़ि दिहिनि ममता
की बकोरीरे २ बैदेही शरण कहैं करजोरे कृपा कीजिये

अब प्रभु मोरे तुम्हरे चरणकी मैं बलिहारीरे ३ (राग विलावल ७) आजु महा उत्साह अवधपुर कौशल्या सुत रामजयेरी। गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य बुलाके जातकर्म बहुभांति भयेरी। मणिन केथार भरायभवनसे मुनिसँग दशरथ पहुँचाय दयेरी १ और द्विजनको रतन पदारथ महराजन कोराज दयेरी । सुरभि नवीन सहित बछरन के खुरसींगे मढ़वाय दयेरी २ घरघर सखियां मंगलगावैं सोहर बिबिध अनेक नयेरी । याचक लोग अयाचक कैगे औरनको उइदान दयेरी ३ बर्षैं सुमन दुन्दुभी बाजैं देवतन अनँद बधाव दयेरी। नाचहिंनभ अप्सरा मुदित मन बरहेंतक यहचार भयेरी ४ लुटेगज बाजि संपदा सारी गिने गुने नाहिं जात कहेरी । शेषशारदा कुछनहिं भाषत ऋषिमुनि यहि छबिदेखि रहेरी ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे सकल लोकसुख छानिछयेरी। रोगपाप सब तनके भागे जबसे रसना राम कहेरी ६ (राग बधाई काख्याल ८) माई अनँद बधाई बाजै। कौशल्या सुत रामजयेहैं देखि सकल दुखभाजै १ ऋषिमुनि वाकीक-रत प्रशंसा पूरनब्रह्म विराजै २ जातिकर्म बहुभांतिकियो नृप कहिन जात छबि आजै ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे प्रकटभयोजन काजै ४(रागबधाईकाख्याल ९) सखियां सबमंगल गावैं। देखिदेखि मुखराम विलोकैं परमअनंदै पावैं १ गाय बजाय रिझाय रामको अपनो जन्म बनावैं २ कौशल्या सुतदेखत हरषत दशरथ सम्पदा लुटावैं ३ बैदेहीशरणकहैंकरजोरे हमहूं अबमांगनपावैं ४ (राग भैरवी १०)चितैइतमोहिलियामनमोर। भौंहैं कमान नैन

कमलनसम पलकैंहैं शिरमोर १ बारबार मैं धीरधरतहौं मानत ना हिय मोर २ घरिपल छिनमेरे चितसेनभूलै दश रथसुत नवलकिशोर ३ बैदेहीशरणकहैं करजोरे चितवनि यहचितचोर ४ (रागभैरवी ११) देखाकरौं निशिदिनहरि मुखतोर। घरि पलछिन मेरे चितसे न भूलै मोहिलियो मन मोर १ पलक एकबिन दरश कलपसम भावै नहीं कोई ठोर २ रंग रंगीलो छैलछबीलो तिरछी चितवन चित चोर ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे जीवन प्राणहैं अवध किशोर ४ (राग भैरवी १२) लगे जब नयना दोऊरामसे लगे। माया मोहलोभ लालचमें औरनहीं कहुंजायठगे १ काम काजमें राजपाटमें सोयरहैं चाहै येजगे २ औरप्रीति सबझूठी जगतकी हरि अनुराग में जायपगे ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे प्रभुपद त्यागिके कहुंनभगे ४ (राग जयतश्री १३) संतनकी गतिकाहुनजानी। सदा अनन्द विमल चितराखत हरि मूरतिके ध्यानी १ अगम निगम सुन्दर यशगावत छविनहिं जातबखानी २ सुन्दर अंग स्वभाव अति शीतल बोलत अमृतबानी ३ जिनको हेत प्रेमनित प्रभु से है सुरपुरकी निशानी ४ बैदेही शरणकहैं करजोरे क्यों भूला अज्ञानी संतनकी खिद-मति करौ नित उठि देत मुक्ति मनमानी ५ (राग जयत श्री कीठुमरी १४) राम कहु मूरुख मन अज्ञा-नी। अजामील गजगणिका तार्यो औ कोटिन खल कामी १ शवरी कोल किरात महाखल भे बैकुण्ठ निशा-नी २ रामनाम संतन को सर्वस महिमा उन सबजानी ३ हरिकी कृपा संत की दाया तौ पावत कोई प्रानी ४ घरि

पलछिन चितसे नहिंभूले जपाकरो यहबानी ५ दीनद-याल कृपाके सागर देतमुक्ति मन मानी ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे काया आयबुढ़ानी अबनहिं गाहक है कोई मेरो रघुबर हाथ बिकानी ७ (रागजयतश्री की ठुमरी १५) मनतेरो कुटिल स्वभाव न कारो। ऐसी वैसी नित उठि भरमत जानत नाहिं नीक बेकारो १ चाटत फिरत श्वान ज्यों पातरि घरघरजातहैमारो २ माया मोहलोभ नहिं त्यागत गर्ब अधिक अहँकारो ३ दुनियाँ दौलत माल खजाना तेहिका कहत हमारो ४ ना कुछ लायो ना लै जैहो छुटि है कुलपरिवारो ५ अजहूं चेत हेत करु प्रभु से कहेना मानुहमारो ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे सन्तन के चरण पखारो इन से अधिक दान तप नाहीं सुरपुर कोहै द्वारो ७ (राग जयतश्रीकी ठुमरी १६) रा-खहु पति अवधेश बिहारीरे। ई पतितन मोरी अपति बिचारीरे घरिपलछिन मेरी फिकिरि न भूल्यो जाउँकहाँ तजि शरण तिहारीरे १ नेम धर्म बुधि ज्ञान हीन हौं म-मता नहीं यह छुटत हमारीरे २ कौड़ीदाम पासनहिंमोरे केहि से कहौं मैं आपनि लाचारीरे ३ बैदेहीशरण कहैं करजोरे आशमोहिं सब भांति तिहारी रे ४ (रागला-वनी १७) सुनिये श्रीअवध बिहारी हरियेदुख पीरह-मारी। अतिमोहिं लोभ अधिकारी घेरे दिनरैन बिकारी तुमबिन को नाथ उबारी हरिए सब पीर हमारी १ करै जपतप संयम आचारी कुछुरीत भांतिगति न्यारी मू-रति हृदय में तिहारी मन देखहु खोजि विचारी २ अद्भुत गति कठिन करारी पावै कोउसन्त सुनारी जिन लोक

लाजताजि सारी तनमनधन तुमपरवारी ३ कहैं बैजूक-
रि खिद्मतिगारी चितओ अब ओरहमारी सब दासन
के हितकारी गहिलीजिये बाहँहमारी ४ (रागसोरठ १८)
सब सुख राम चरणनतीर । पापदोष सब जरत छिनमें
रहत ना तनपीर १ कहत हों मन मूढ़ मूरुख निश्चय
भजुरघुबीर २ अमृतछोड़ि विषैरसचाखत पीवत मैलो-
नीर ३ बैजूकहैं दोऊकरजोरे राखु मनमें धीर ४ (राग
लावनी १९) राम बिन को मेरे दुःखहरै । तकैनीच जो
मीचहमारी आपै वह दुष्टमरै १ रामभले तो भला सब
मेरो चहै कोई कोटिकरै २ अनेकिन जाल कियोपापिनने
काहूकी कुछ न सरै ३ हरनाकुश प्रहलाद भक्तसे हठिह-
ठिबैरकरै ४ मेरा कहा करत क्योंनाहीं औरै और करै ५
कोटिन दण्ड दियो मूरुखने ताको नहिं सूझिपरै ६ म-
हिंमा त्वहिमा खड्ग खम्भमा जितदेखौ तित रामहेरै ७
खम्भफोरि नरसिंह रूपधरि अभिमानी को बधन करै ८
बैजू आस बिश्वास रामकी निडर ह्वै कबहूं न डरै ९
(रागजयतश्रीकीठुमरी २०) एकही नाम पदारथ
जगको । निशिदिन जपत छकत शिवशंकर वैजानत
फलजनको जिनको हित चित प्रिय नहीं लागत धृग
जीवन जग तिनको १ संतनको तनमन धन येई रा-
खत हिरदयहरिको मायामोहलोभनहिं व्यापतछूटिजात
सब खटको २ जब तक जीवत यह रसपीवत और देत
दासनको दाया धर्म्म बसत मन चित नित अन्त जात
सुरपुरको३वैदेहीशरणकहैं करजोरे हरिदर्शनमन अटको
बिनहरिकृपा साधुबिन सगंति को देखा मुख प्रभुको ४

(रागजयतश्रीकीठुमरी२१)प्रभुतजि सेवतचरण बिराने। चाटत फिरत श्वान ज्यों पातरि कबहुं न उद्र अघाने मायामोह लोभ परनिन्दा निशिदिन कलि मलसाने १ सन्तन देखि जिया नहिं हुलसत बेश्यन हाथ बिकाने अजहूं चेतत ना मनमूरुख खोवत कर्म पुराने२ अबहीं चेतुहेतु करुहरि से तिसरापन नगिचाने अन्त समय कोइकाम न अइहै क्वैहै कह पछिताने ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे वे नर परमसयाने मातपिता घर बंधु छोड़िकै राम प्रीतिलपटाने ४ (रागलावनी २२) दगाजो करते हैं बेई मान रहत राजी नहिं हैं भगवान। यक दिनबीते दो दिनबीते निशिदिन रहतभुलान १ दाया धर्म मर्म नहिं जाने दम्भ भरे अभिमान २ बुरे का बुराहोत है दर्जा बेदलिखा परमान ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे रा-खोयार ईमान ४(रागभैरवी२३) हितू रामचाहैं और न कोई। और प्रीति सब झूंठिजगत की इंकरैं प्रीति जाइ अघधोई १ इनहीं जन्म दियो मानुषको एई चहैं सोई सबहोई २ भूलारह्यों मोह मायामें इतनी उमर मुफत सब खोई ३ हे मन मूढ़जपो निशिबासर मुक्ति पदारथ को फल एई ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे हरिको भजो करो जनसोई ५ (रागभजन २४) लगीरहै रैनिदिन रटना समुझमन कोई नहीं अपना जगत में झूंठ सब जतना करो तुम कोटि बहुरचना १ देखु ज्यों रैनि का सपना लोकमें जीवना केतना २ राखुदाया धर्म घटमा किसीको दुखित मत करना ३ कहैं बैजू समुझि यतना रहो रघुनाथकी शरना ४ (राग जयतश्री

की ठुमरी २५) रामको नाम अमीरस नीको और काम मोहिं लागत फीको। राम कहत गजराज उबरि गये देर न लागत एको पलको १ सुनु मन मूढ़जपो निशिवासर एकहुक्षण छोड़ोनहीं इनको २ भरि भरि उद्र बिषयरस चाख्यो जानतना कछुलज्जत इसको ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे कौनभक्त जानत जर इसको ४ (राग जयतश्रीकीठुमरी २६) रघुबंशिनकी प्रीति अनोखी सुन्दर खासी मीठी चोखी। धीरज धर्म्म शील के सागर रुचिर बिचार बड़े संतोखी १ जे जन जानत हैं इस पदको तिनकी कायाहै निरदोखी २ सदा संग दासन के घूमैं ऐसी प्रीति हम कहूं नहीं देखी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे ऐसी रीति हम इनकी देखी ४ (राग जयतश्रीकी ठुमरी २७) भजुमन राम नाम निशिबासर। और काम में नितउठ भरमत एक काम यह लागत आंकर १ ऋषि मुनि इनको ध्यानकरतहैं तिन को परै सपनेहुं नहिंसांकर २ ऐसानाम अमीरस छोड़िकै चाटत फिरत श्वान ज्यों पातर ३ बैदेही शरणकहैं कर जोरे रहौं गुलाम चरणको चाकर ४ (राग जयतश्रीकी ठुमरी २८) रघुबंशिनकी रीति निराली देखत गये बिपुल दिन आली। दाया सदा दीनपर राखत कृपादृष्टि देखै करिहाली १ सबसे अधिक दासको राखत सन्त वाक्य कहुंजात न खाली २ भक्तनके सँग नित उठि घूमत ऐसी प्रीतिराखत अघशाली ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे इनकी टहलकीहे जैहैन खाली ४ (राग जंगला की ठुमरी २९) निशि दिन रामतुम्हैं मैं ध्यावत यहघट

भीतर पाँच मवासी बारबार भरकावत। तिनसों भजन करन नहिं पावत चित हमार भरमावत १ जो गति योग बिराग यतन करि नहिं मुनिवर जन पावत। सो गतिदई गीध शवरी को सकल वेद यश गावत २ कोटिन कोटि उपाय किहेसे जप तप ध्यान न आवत। जापर कृपाकरो करुणानिधि सो तुम्हारपद पावत ३ वैदेही शरणकहैं करजोरे चंचल मन चहुंदिशि धावत। बिन हरि कृपा सन्त बिन दाया ज्ञान नहीं दृढ़आवत ४ (राग जंगलाकी ठुमरी ३०) निशिदिन रसना रामहिं गाओ। छोड़िदेहुपरपंचजगतको अपनाजनम बनाओ। इनसे अधिक आननाहिं देख्यों नाहकमन भरमाओ १ जाके कहत रहत दुखनाहीं सो निश्चय मन लाओ। प्रीति रीति इनसों करो सांची सकल पदारथ पाओ २ हरिदासनसे हेत प्रीतिकरु भोजननीके खाओ। हरिकी कृपा संतकी दाया तो तुम सुरपुरजाओ ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे प्रभुचरणन चितलाओ। यह संसार मोह को सागर यहिसे जन पतिआओ ४ (राग जंगला३१) हरि से प्रीति लागि गई मोरी। घरि पलक्षण मोरे चित से न बिसरे सदा रहत हिरदे बिचघेरी सकल पदारथ के फल एई सुख सम्पति की ढेरी १ भरमत फिरोंमोह माया में रही मोरिमति थोरी। अब प्रभु कृपा कीजिये मोपर रहत आश नित तेरी २ सुरनरमुनि निशिवासर ध्यावत आश छोड़ि जगकेरी। सदा मगन आनँद चित राखों देखि तुम्हारी ओरी ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे सुनिये अरज यहमेरी एकबार दर्शन मोहिं दीजे छूटि

जाइ भ्रम वेरी ४ (राग जंगलाकीठुमरी ३२) जिनके प्रेमराम सेनाहीं । वृथा जन्म धृग जीवन जगमें खरशूकर सम ताहीं तजिये तिनहिं कोटि वैरी सम वैठोजनि परछाहीं १ पिता वैर प्रहलाद सह्यो बहु दण्ड लह्यो घरमाहीं । कोटिन कोटि भांति समुझायो राम सिवाय कहत कछु नाहीं २ रामनाम अमृत रसनीको जो संतन घटमाहीं । विन हरिभक्ति साधु विन सेवाको पावत जग माहीं ३ वैदेही शरणकहैं करजोरे मिथ्या जन्म बिताहीं। अजहूं चेतुहेतु करु हरिसों नहिं औसर असनाहीं ४ (राग धनाश्री की लावनी ३३) भजेनहिं हरिकातें बूढ़भये । पहिले कहे भजन हरि करिहौं अबकस भूल गये १ ऐसी वैसी परघर झांके वेश्यन संगलये २ बिनहरिभजन संतबिन संगति कोउनहिं पारगये ३ अजहूं चेतुहेतु करु हरिसों नाहक झखत ठये ४ वैदेही शरणकहैं करजोरे प्रभुकेहि नहिं चितये ५ (राग धनाश्रीकी लावनी ३४) करम गति काहुन बांचि कही । चक्र से एकगुणी बहुदेखे पास दरबि न रही १ वहि बहि मरे बैलकीनाई सुंदर देहदही २ परदारा धन आश लगाये जबतक श्वास रही ३ नहिं हरिभजन संतनाहिं सेवा पावत दुःखसही ४ वैदेही शरण कहैंसुख तबहीं जब धुनिराम गही ५ (राग धनाश्रीकीलावनी ३५) अबहीं तक भूला क्यों रोजरहे । लरिकाई लरिकन सँगखोयो ज्वानी कामिनि करगहे १ जिनसेहेत प्रीति बहुकीन्हे तिन से दुःख सहे २ सुतदारा परिवार आदिदै तिनके संग बहे ३ वृद्धभये तन कांपन लाग्यो हरिसे नेहचहे ४ वै-

देही शरण आश निशिबासर प्रभुसे नेहलहे ५ (राग झँझौटी की ठुमरी ३६) माफकरो औगुण रामहमारो। भलाबुराहौं बाजत तेरो बिगरी बात सुधारो १ जबतक जियों करूं हरिसेवा नितउठि नाम तिहारो २ जहँ जहँ जन्म कर्मबश मेरो होउँ मैं दास तिहारो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे रामनाम चितधारो ४ (राग झँझौटीकी ठुमरी ३७) रामनाम संतनको प्यारा। और काम सबनीक बिकारा यह निर्मल उजियारा १ भवसागर को उतरब गाढ़ा नावयही जानत संसारा २ मूरुख मन तुम शोच विचारो अंत समय यह मित्र हमारा ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे दशरथ सुतपर तन मन वारा ४ (राग झँझौटीकी ठुमरी ३८) अंत समय कहो कौन तिहारो। पहिले कहो भजन हरिकरिहो भूलिगयो देखत संसारो १ पानी के बुंदसे पिंड प्रगट भयो ताको कहतहौ आय हमारो २ बिन हरि भजनपारकसपैहो भवसागर को कठिन उतारो ३ यमके दूत घेरि जबलेहैं तब तोहिं कौन बचावनहारो ४ बैदेही शरण कहत करजोरे राम नाम यक पल न बिसारो ५ (राग देवगंधार भजन सादे ३९) मेरो मन रामनाम भजुनीके। भरमत फिरत मोहमाया में धावत लाभ महीके १ प्रभुको नाम सकल सुखदायक और काम सब फीके २ और नातसब झूठ जगतके यहनाते सुरपुर के ३ यहि के जपे अंग निरमल होइ रोग जात सब तनके ४ सुत दारा परिवार मित्रगण साथीसब मतलब के ५ बैदेही शरण कहैंकरजोरे सदा गुलामरहौं यहिघर

के ६ (रागकेदार भजन सादे ४०) भजुमनरामछोड़ु सब खटका । निशिदिन प्रीति राखुमन हरिसे पटकि देवसब टटका १ मायामोह लोभ मदमत्सर इन में रहत क्यों अटका २ अबहीं चेतु तोरि बनिजैहै नहिं फिरिहै इतउत तोइभटका ३ सोवत जागत कामकाजमें भूलो न प्रभु हरिपदका ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे चरण-न मों रह लटका ५ (राग केदार भजन सादे ४१) रहुमन रामनाम में अटका । दाया धर्म्म राखु हिरदयमें कामकरो संतनका १ सुन्दर भोजनखाउ खवावहु यही लाभनरतनका २ हरिदासन को दासरहौ नितछोड़ि क-पट औ छलका ३ गुरुचरणनको निशिदिन ध्यावो राखु हृदय कसिमनका ४ बैदेही शरणकहैं करजोरे छूटिजात मन खटका ५ (राग केदार भजन ४२) भजुमन राम चरण अबहीसे । नरतन पायभज्यो नहिंहरि को भूलिग-यो तबही से १ लरिकाई लरिकन सँग खेल्यो जङ्गकिह्यो सबही से २ संतनको सतसंग न कीन्हों दानदिह्यो नहिं कर से ३ बारबार मैं तोहिं समुझावों सीखसुनो श्रवणन से ४ बैदेहीशरणकहैं करजोरे मूरुखमन चेतोजबहीसे५ (राग बिलावल ४३) कहोमन राम सजीवनमूरि । करैंगे पाप दोषसबदूरि ॥ भजोप्रभु को निशिदिन चितलाय। लोभ माया को फन्द छुटाय ॥ तेरेघटही में व्यापेभूरि १ करै सब दासन को कल्यान । हमारे ऐसे कृपानिधान ॥ सीख यह मानु मोह भ्रमतूरि २ कहैं वैदेही शरण चित लाय । बसो हरि मेरे हिरदैआय ॥ करौ अब आशा मेरी पूरि ३ (रागठुमरी ४४) प्यारे तेरे अरुणनयन रतनारे ।

जित देखत तित बशकरि राखत मोहत प्राणहमारे रे १ करधनुषबाण पीताम्बर पट सबजग के रखवारे रे २ सरयू के तीर धीरधरि बैठे दशरथराज दुलारे रे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे काटोपाप हमारे रे ४ (राग बिलावल ४५) यकादशि मुक्तिपदारथ चीज। सुन्दर नेम धर्म्म ब्रत हरिको जो सबब्रत को बीज १ गाय बुझाय रिझाय राम को करि सुमिरण तजवीज २ प्रातसमय मज्जन तन करिकै ध्यावो रामसुखीज ३ सेवासाधुसंतकी संगति मनबच कर्म्म करीज ४ बैदेहशिरणकहैं करजोरे यहिब्रत रसनित भीज ५ (राग जंगलाकी ठुमरी ४६) सुरति दिखलाय जाया करोयार रहतादिल निशिदिन लाग हमार। भौंह कमान बानदोउनैना काले घुंघुवारे बार १ क्रीटमुकुट पीताम्बरसोहै गले पुखराज को हार २ अँगअँग की छबिबरणिसकौं किमि शोभा अगम अपार ३ बैदेही शरणकहैंकरजोरे दशरथसुतराजकुमार ४ (रागबिहागकी ठुमरी ४७) अबकुछ कहि न जात क्या कहिये हरिचरणन तर रहिये। दुख सुख हैं दोउजीव के साथी ह्वै प्रसन्न चितरहिये १ जो इच्छाप्रभुकी होइ जैसी औचुक आचरण गहिये २ दाया धर्म्म बसै उरअंतर दीनसबन से रहिये ३ झूठ बचन कबहूं नहिं भाषो मुक्ति आपनी चहिये ४ बैदेही शरण कहत करजोरे संतन को सँग गहिये ५ (रागबिहागकीठुमरी ४८) मनुसंतन सँग शरणहिं गहिये। जन्म जन्म के होउ पातकी मुक्ति कबहुँ नहिं बनिये १ जो कुछ संतकहै सो कीजै चरणन में रत रहिये। दुःखपरैचहै सुक्खजीवकोदण्डअनेकनसहिये।

हरि मूरति देखो उर अन्तर जो दासन को चहिये २ संत सुजान जानिहैं घटकी कमतीकबहुँ न रहिहै। अंत समय सुरपुर को जैहो भक्ति अभयपद पइहै ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे राम चरण रति रहिये। इन से अधिक दान तप नाहीं नाहक बहि बहि मरिये ४ (रागठुमरी ४९) ऐसे कपटी से न बोलो जी चलोजाने देरे। पहिले कहेरहैं भजनमैं करिहौं अबतो करत नित झूठेओ बहानेरे १ हे मनमूढ़ फिरत क्यों भटका पररी चीजको क्यों ललचानेरे २ परदारा पैनीहै छूरी गोरीसुरतिपर क्यों तूलोभानेरे३ सांचीबात कहूँनहीं देखा झूठी बातके भरेहैं खजानेरे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे राम चरणपर रहुतुइ दिवानेरे ५ (रागकल्यान ५०) रघुपति राखिदास अपणलीजै। बारबार यह अरज करतहौं माफखता सब कीजै १ सदागुलाम राखियो अपनो विनय मेरी सुनिलीजै २ तुमसिवाय को हितूहमारो जो मांगों सोदीजै ३ बैदेही शरण आश नित येही रामचरण रसपीजै ४ (रागकल्यान भजन ५१) रघुपति तुम सिवायको मेरे। सदा दीनपर दायाराखत सुनिये टेर सबेरे १ ऋषिमुनि प्रभुतोहिं ध्यान करतहैं बिरले पावतहेरे २ जब जब नाथ मनुजतन धाखो तब तब माखो दुष्ट घनेरे ३ मेरे रिपुनको देरलगायो निशदिन हरंत जीविकाएरे ४ उनसे भजन करन नहिं पावों चिंतारहत लागि है हियरे ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे तुमहीं दुःखहरो तनकेरे ६ (रागखेमटा ५२) कोहू से हम अबना नेह लगैबे। नेह लगायकै बड़ादुःख पायन दूरिसे देखिडरैबे १

लरकाई ज्वानी दोउमेरी बीती बुढ़ापामें नाम न धरैबे २ अपने घरपर भजन करेंगे जो मिलिहै सोखैबे ३ वैदेही शरणकहैं करजोरे रामचरण चितलैबे ४ (रागखेमटा ५३) बहुत दिन बीति गे मेरे प्यारे दरश नहिं पायन यार तुम्हारे। निशिदिन मेरी आश लगी है निरखों सांझ सकारे १ घटघट में सबके तुम व्यापित जाहिर सरयू किनारे २ जोकोउ शरण जात प्रभुकेरी जारत पातकभारे ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे काटहुपापहमारे ४ (रागबैरागिया धुनि ५४) नैननमें रहो रामहमारे। रोगदोष सब नाश करो प्रभु दूरिकरो सब पापहमारे १ पलएक भूलो न चितसे इतनादेहु मोहिं माँगन प्यारे २ जन्मजन्म के पातकटारो माफकरो अवगुण अति भारे ३ औषध मूरि तुम्हीं हो मेरे दूरिकरो तीमुर अँधियारे ४ वैदेही शरण कहैं करजोरे हमैं आश चरणन की तिहारे ५ (राग बैरगिया धुनि ५५) भजन कबकरिहो जन्म सिरान। यकपन बीते दुइपन बीते तिसरो आय बीति नगिचान १ भरमत फिरत मोह माया में चाटत फिरत पातरि ज्यों श्वान २ बारबार मैं तोहिं समुझावों समुझत नहिंमूरुख नादान ३ रामचरण कोमलपद उरधारि कहिगे बातयह सन्त सुजान ४ वैदेही शरण कहैं करजोरे लागरहे चरणनमें ध्यान ५ (रागभैरवी भजन ५६) भजुमन राम काम सब तजुरे। भरमत फिरत मोह मायामें धरतनहीं यह बातहियेरे १ अबहीं तक भूला फिरै जग में रोग पापतोहिं नितरहैघेरे २ बूढ़भये पौरुष सबथाके अजहूँ चेतु मूढ़मन मेरे ३ सुतदारा परिवारमें भूला मतलबके

साथी सबतेरे ४ वैदेही शरण कहैं करजोरे मानुषतन के फलहैं येरे ५ (रागजंगलाकी ठुमरी ५७) बिनाहरि हितू हितू को तोर। सुत दारा परिवार में भूला तिनहिं कहत ई सबहैं मोर १ इस घट भीतर पांचमवासी नाहिं राखत चित यकठौर २ बिनप्रभु भजे पार कसजैहौ भव-सागर नदिया बहैजोर ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे श्री प्रभुबाँहकोजोर ४ (रागभैरवी ५८) देखाकरों निशिदिन हरिमुखतोर। घरी पल क्षण मोरे चित से न भूलै मोहि लियो मन मोर १ पलकएक बिन दरश कलपसम भावै नहीं कोइठौर २ रंग रँगीलो छैल छबीलो बांकेनैन चित चोर ३ बैदेहीशरणकहैं करजोरे जीवनप्राणहैं अवधकि-शोर ४(रागलावनी ५९) निशिदिन जपु मन कैलास पती। सोहै भस्मअंग शिरजटा गंग कर बामअंग बैठी हैं सती १ गरे मुण्डमाल लपटायव्याल डमरू धुनि बाजत तालगती २ जाके कहत दहत दुखदारुण पापरहत नाहिंएकरती ३ बैजू ये कहैं करजोरिजोरि शिवशम्भुनाथ हौं शरण तोरि मेरीबांह गहौ वैरागजती ४ (रागलाव-नी ६०) कहुं देखा नाहिं अस योगयती। बैलचढ़े शिव विचरत हैं अरधंग संग लिहे पारबती १ जेहि से पूछौं कोउ न बतावै कहां गये गौराकेपती २ चन्द्रभाल दोउ दृग विशाल तिसरे में ज्वाल अद्भुतहै गती३ बैजू ए कहैं करजोरिजोरि मेरेपापरहैं नहिं एकरती४ (रागचंचरीक ६१) शंकरजी पारबती अति पियार लागैं। बैलकी सवारी अरधंगी छबिछाजे एकबार नामलिये कोटिपाप भागैं १ गावैं नित रामनाम उमा सहित जागै तुम से

अधिक कौन देव जासे कछु मांगे २ बैजू कहैं बार २ च-
रणचित्तलागे दायाकीजै कृपालरोगदोष भागै३(रागचं-
चरीक६२)महादेव दूरिकरो औगुनसबमेरे। हौंतो पापी
पतंग शरण आयेतेरे तुम सिवाय कौनहितू नाथ और
मेरे १ दारासुत बन्धुसबै मतलबके चेरे अन्तसमय कष्ट
परे आवत नहिंनेरे २ हौंअनाथ नाथ हाथ बातमोरितेरे
उमा सहित आयकरो हृदय बीचडेरे ३ बैजू कहैं बारबार
दोनों करजोरे निशिदिन चित लागरहैचरणनबिचहेरे ४
(राग लावनी ६३) कहुँ देखे सखी बैरागयती गौराके
पती। जाके देखे सब दुःखहरैं तन व्याधिरहै नहिं एक
रती १ छके भङ्ग रङ्ग सोहै भस्मअङ्ग लपटे भुजङ्ग अ-
द्भुतहै गती २ बैजू ये कहैं करजोरि२ गुणबरणिसकैनहिं
मोरिमती३(रागचंचरीक ६४) शंकरको योग जागजानै
नहिं ज्ञानी। गावत गुणगण गणेश पावतनहिं पारशेश
ध्यावत सुरनर मुनेश शारदा भुलानी १ गङ्ग भङ्ग दोऊ
संगलाये अब भस्मअंग लायेंकर बैठीजगदम्बा महरा-
नी २ मन चित शिव लागिरहै ध्यावैं जे ध्यानी जायकै
कैलास बीच बासकरै प्रानी ३ बैजू कहैं बार २ मनमें
बिचारु यार शंकरसम और नहीं तीनलोक दानी ४
(रागलावनी ६५) पारबती पति जगसे न्यारे। अंग
अंग लपटे बिषधर कारे। सोहै जटागङ्ग छके भङ्ग रङ्ग
अलमस्त बैठ भूमैं मतवारे १ लोचन त्रिशाल हैं ला-
ल २ माथेमें सोहै शशिरसाल तन बिभूति बाघम्बर
धारे २ शेष शारदा गुणनहिं बरणै वेद ठाढ़ करजोरि
बिचारे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे पाप दूरिकरौनाथ

हमारे ४ (राग लावनी ६६) अरज सुनिये प्रभु कीजे कान जानिकै अपनो मोहिं गुलाम । लगारहै चरणों में मेरोध्यान रैनि दिन तनमन आठौयाम १ नाथ तुमहौ बड़े चतुर सुजान दया करिकीजै इतनाकाम २ बैदेही शरण कहैं करजोरे जपाकरौं शिवनाम ३ (राग लावनी ६७) सहानाहिंजात कुआरका घाम । वरसि दियो पानी है बड़काम । करो शिवशंकर को मनध्यान सिद्धि करिहैं ओई सबकाम १ करैं सुरनरमुनि जाकोध्यान रहौ तुम उनके रोजगुलाम २ कहैं बैजू करि२ प्रणाम शम्भु तुम जीतिलियोहै काम ३ (राग झँझौटी ६८) माफकरो औगुण राम हमारे । भलाबुराहौं बाजत तेरो बिगरीबात सुधारो १ जबतक जीहौं तबतक जपिहौं निति उठिनाम तिहारो २ जहँजहँ जन्म दीजियेमेरो होउँ मैं दास तिहारो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे नामयह प्रेम पियारो ४ (राग रामकली ६९) जनकजी कठिन प्रण यह ठानोरे । जो नृप यह कठोर धनुतोरिहै सोई सियाबर जानोरे १ देशदेश के भूपति आये सुनत हाल हुलसानो रे २ मुनिसँग राजकुवँर अबधेश के आये परमसयानोरे ३ देखिस्वरूप राजसब सकुचे बैठेमन मुरझानोरे ४ तूरयो धनुष जनक प्रण राख्यो मुनिके चरण करि ध्यानोरे ५ लै जयमाल जानकी करसौं पहिराय दियो सुखमानोरे ६ सुनिकै घोर शोर तिहुँपुरको परशुराम रिसियानोरे ७ तरक भरक बहुभांति दिखायो नामप्रभाव जब जानोरे ८ बैदेही शरण कहैं करजोरे तपका कियो पयानोरे ९ (राग जयतश्री ७०) गावहिं सुजन बिमल

शुभबानी। सकल कोटि कल्याण कृपानिधि रामरूप र-
सखानी। जन्म धरेको दोऊफल पाइनि अवधेश कौश-
ल्यारानी १ राम लक्षमण भरत शत्रुहन दशरथकेसुत
नामी। गुरु बशिष्ठ आशीश देत हैं अचल तुम राज्य
करौ रजधानी २ जनक नगर में धनुष यज्ञमें मुनिसँग
गेबरदानी। तूख्यो धनुष जनक प्रण राख्यो काहूकी कुछ
न बिसानी ३ लै जैमाल जानकी करसों सखियां संगस-
यानी। पहिराय कै हार राम मुख निरखत छबि नाहिं
जात बखानी ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे लौटि अवध
पुरआनी। पापरोग सब दूरिकीजिये तुम से अधिकको
दानी ५ (राग जयतश्री ७१) जबसे राम दृष्टि परेमेरी।
कोटिन पाप देखिकै भागे काटि दिहिनि भ्रमबेरी १ बार-
हिबार बिलोकत सखियां देखिरहीं ज्यों चन्द चकोरी २
तीन लोककी सकल सम्पदा जनक नगर में भैयकठौ-
री ३ बरषाहिं सुमन देव सब हरषाहिं यह छबि कहि न
सकत मति मोरी ४ बैजूकहैं दोऊ करजोरे बलि २ जा-
उँ सियापति तोरी ५ (राग ईमनका ध्रुपद ७२) राम
को निहारिरूप शोभा अद्भुत अनूप देखिकै अनेक भू-
प मन में सकुचानेरी। जनक प्रण अति गंभीर धनुहां
जो तूरै वीर जानकी बिवाहि देउँ करत ना बहानेरी १
मुनिको प्रभुकरि प्रणाम लीन्ह्यो धनुहांको तान ऐसो
धनु तूख्यो जैसे जन्म को पुरानेरी २ परशुराम सुनिकै
शोरलीन्हों फरसा कठोर चितयो जबधनुकी ओर क्रो-
धकरि रिसानेरी ३ बोलतनाहिं बचन सीध जानत नाहिं
हरिकी रीभ क्षत्रिन से जीति २ भूल में भुलानेरी ४

मन में कीन्ह्यों बिचार जान्यो अबभा औतार काम क्रोध त्यागितप में जीलोभानरी ५ बैजूकहैं बारबार महिमा प्रभुकी अपार जानकी लै हाथहार रघुपति पहिरायोरी ६ (राग रामकली ७३) धनुतूरि राम लउटि घरआयेरे। मंगलचार नगर में छाये घरघर बजत बधायेरे १ मात कौशला करत आरती सुफलजन्म ऐसा सुतपायेरे २ दशरथ मुनिके पाँयपखारे तुम्हरीकृपासे सकलफल पायेरे ३ गुरुबशिष्ठ औ ऋषि मुनिआये राम को देखि हरषि उरलायेरे ४ याचक लोग अयाचक होइगये जो जसमाँगा सो तसपायेरे ५ मन्त्रिनसे सल्लाहकियो नृप होहुतयार ब्याह नगचायेरे ६ बैजूकहैं दोऊ करजोरे मैं तो खुशीरामगुणगाये रे ७ (राग बनरा ७४) ब्याहन आये अवधेशके ललना। द्वारचार होनेजबलागा देखो जनकनगरमा। देशदेशके भूपतिआये देखिस्वरूप छकितभयेनैना १ घरघर सखियां मंगल गावैं शोरमचा सबपुरमा। धन्यधन्य जिनके ईबालक धन्य मात जिनके ई छौना २ जनकभवनमा होत भाँवरी बेदनध्वनि सब रचना। जोयाचक मुखसे जसमाँगै ताको दशरथ देतहैं उतना ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे बरणि सकौंनहिं उपमा। एकदान हमहूंकोदीजे कीजेगुलाम सियापति अपना ४ (राग मंगलकार ७५) देखुसखी लखुआजरी कैसोसुन्दरबर। केसरिया पीताम्बरसोहै अंगअंग भूषणसाजरी चलो राजद्वारपर १ भौंहैं कमान नैनकमलन सम सबराजनको महराजरी मानोहैकलपतरु २ होत भाँवरी जनकभवन में दूनौसमधीसमभागरी धनिजनक

पुर३ बैजूकहैं दोऊकरजोरे मेरेबहुरेदिन आजरी रहिहौं मैं चरणांतर ४ (राग जयतश्री ७६) बलिबलिजाहुँ सियाबरकेरी। एक से एक सखीमिथिलापुर निरखत मुख ठाढ़ीकरजोरी १ ब्याहसमय शोभितबितानतर यहछबि कहिनसकत मतिमोरी २ जनकनगरमें शोरमचोहै सुख सम्पति दोनोइकठौरी ३ इतदशरथ उत जनकरायजी देतदान नेगिनकोढेरी ४ बैदेही शरणकहैं करजोरे कृपा करो चितओमेरीओरी ५ (राग कल्यान ७७) देखो अबरामरूप नखशिख शोभाअनूप ऐसो अबआनभूप जक्तमें न दूसरोरी। धनुषबाणलीन्हेहाथ सुन्दरसमाज साथ दशरथसुतकी समान छैलकौन बाँकुड़ोरी १ दहिने करलषणलाल बायें भारत बिशाल आगे शत्रुघ्नलाल जनकनगरमोरी २ बैजूकहैं बार २ देखो कौशलकुमार सन्तन को अति पियार मूरतिमन बसीरी ३ (राग बनरा ७८) देखुसखीछबि अवधललेकी। भौंहैं कमान नैनकमलन सम क्रीटमुकुट शोभागजरेकी १ जित देखत उतबशकरि राखत मोहीं नरनारी मिथिलेकी २ भारत लखन लाल शत्रोहन चालगयंद गरूर कलेकी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे अवाज बनाराखो मेरे गले की ४ (राग भैरवी ७९) जनकपुर आये राजकुमार । देखि स्वरूप भूप सबडरपे काहकरै करतार १ तोड्यो धनुष जनक प्रण राख्यो मचिरह्यो जै जैकार २ बैदेही शरण कहैं करजोरे सियाडारयो गरेहार ३ (रागबनरा ८०) देखु अली छबि अवध ललाकी। श्यामल बदन केशरियाजामा कोटिभानु छबि उदय कलाकी १ भौंहैंकमान

नैनरतनारे चंचलपलक चितचोर चलाकी २ जित दे-खत उत बशकरि राखत मोहैं नरनारी मिथिलाकी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे धन्यभाग बिदेह सुताकी ४ (राग बनरा ८१) देखुअली छबि अधिक भलीरी। साजि बरात राज जब आये देखनको चलो कुवँर च-लीरी १ होत भाँवरी जनक भवन में दुल्लहराम सिया दुलहीरी २ तीनि लोककी सकल सम्पदा आई जनक पुर आजु चलीरी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुघर बेलि फल फूल फलीरी ४ (राग भैरवी ८२) जनकपुर छाये मंगल चार। साजि बरात राजजब आये होत दु-वारेकाचार १ होत भाँवरी जनक भवन में वेदनकी झ-नकार २ उतदेखो तो जनक राजजी इत दशरथ लिहे राजकुमार ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मोहि लियो सं-सार ४ (रागबनरा ८३) बनाबनोराम सियाबनरीरी। साजी बरात जनकपुर आये द्वारचार देखोरी। यकटक ठाढ़ि नारिनर निरखत जैसे चन्द्रचकोरी १ इतदशरथ उत जनक राजजी कुलशोभा यकठौरी। ब्रह्मा विष्णु महेश देखि छबि शारदकी मति बौरी २ होत भाँवरी जनक भवन में दोनों समधी समबोरी। कोटिभानु छबि भै वितानतर यह गति कहि न सकत मतिमोरी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे धन्य भाग्य सियातोरी। गुरु वशि-ष्ठ आशीश देतहैं चिरंजू रहै यह जोरी ४ (राग बनरा ८४) बनामेरो अवध पुरीसे आयो। यकटक ठाढ़नारि नरनिरखत कौने बिधि इनको बनायो। दशरथ पिता मातु कौशल्या अद्भुत बालक जायो १ ब्रह्मा विष्णु म-

हेश देवसब भूप बराती लायो। ऐसा बना दिखानाहिं कबहूं कोटिन काम लजायो २ नेगचार नेगिनको दीन्हों सम्पति बहुत लुटायो। ऐसे बने की मैं बलिहारी सबही के मनभायो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सब लोकनमें यशछायो। धन्य भागि विदेह सुताकी जिन ऐसो बर पायो ४ (रागबनरा ८५) बना अवधेश कुमार सजीलो। जित देखत उत बशकारिराखत सुन्दर अंग छबीलो। भौहैं कमान नैन कमलनसम है सखी रंगरँगीलो १ क्रीट मुकुटकर धनुष बिराजै सुन्दर लोल कपोलो। बैजंती पीताम्बर सोहै देखुसखी अनमोलो २ लोचन लाल भेंटिले सजनी खुशी प्रीतिकर बोलो। ऐसे स्व-भाव शील को सागर सन्मुख से नहिं डोलो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे चेतु मूढ़मन मैलो। इनसे अधिक आननहिं दूजो होउचरण को चेलो ४ (रागबनरा ८६) बना अवधेश कुमाररँगीलो। चम्पक बरण बि-राजत पागो सुन्दर सुभाव अति शीलो १ क्रीट मुकुट करधनुष बिराजै पटपीताम्बरपीलो २ जब से प्रीति किह्यो राघव से संगजात नहिंढीलो ३ वैदेही शरणकहैं करजोरे करतनहीं कोइगीलो ४ (राग बनरा ८७) बनेकी क्या वजहआली देखुहमपर मोहनीडाली। ल-टकि लटरही मुखपर काली आँखियाँदोनों मतवाली १ गलेसे पीताम्बरशाली क़तासब सांचेकीढाली २ करैं सब तन मन धन वारी जनकपुर के सबनरनारी ३ कहैं बैजू सुनुहरिहाली बात मेरी नाजावे खाली ४ (राग बनरा ८८) दशरथराज बनरा बनि आयोरी। भौहैं क-

मान नैन कमलनसम क्रीट मुकुटकर धनुष सुहायोरी १
सुघर माल पुखराज गले बिच केशरिया जामा झलका-
योरी २ जितदेखत उत मोहिलेत मन अंग २भूषणपरम
सुहायोरी ३ धन्य भागि श्री जनकसुता की जिन ऐसो
सुन्दर बरपायोरी ४ (रागबनरा ८९) बना सबभांतिसे
रूप रँगीलो। ब्याहन आयो आजु जनक पुर अँग २
भूषण पीलो १ जित देखत उत बशकरि राखत है सब
अंग सजीलो २ इस बनरे पर तनमनवारों हमसे जात
नहिं ढीलो ३ बनरी ब्याहि लौटि घरआयो करत कोई
नहिं गीलो ४ बैदेहीशरण कहैं करजोरे अब तो मुखसे
बोलो ५ (राग मुबारकबादी९०) ऐ आबाद रहैशादीहै
भली। बनरा श्रीअवधेश लाड़िलो बनरी श्रीजनकल-
ली१ब्रह्माविष्णु महेशआदि दै सुंदर साजिबरातभली२
द्वारचार जबहोनेलागो देखनको नरनारिचली ३ होत
भावँरी जनकभवनमें वेदनकी ध्वनि होत अली ४ कोटि
भानु छबि भै बितानतर सुघर बेल फल फूल फली ५
बैदेही शरण कहैं करजोरे मेरीआशपूरिकरु रामबली ६
(रागलावनाकी ठुमरी ९१) अवधेश नगरको ब्याहि च-
ले दशरथ सुत सुंदर सांवरिया। सोहैं कमल नैन अति
मधुर बैन तिरछी चितवनिहै बांकुरिया १ छबि अति
अनूप सब संगभूप सीता शुचि सुंदरि नागरिया २ सुं-
दर तुरंग बहुरंग रंग चंचल गति नाचत डागरिया ३
गज अति बिशाल तिनपर नृपाल मगभूमत झलकत
झालरिया ४ घनघोर शोर मगहोत जोर घेरत आवत
जानो बादरिया ५ आवत बरात नगिचात जात पहुँची

दशरथ की पांवरिया ६ युवतिनके साथ सब आई मात परछैं दुलिहिन गुण आगरिया ७ बैदेही शरण सियाराम चरण भवसागर के मेरी नावरिया (राग जयतश्री ६२) अब मोहिं रामकी प्रीति हितानी। और प्रीति सब रूखि जगत की यह अमृत रससानी। दशरथ सुत श्रीजनकनन्दनी सुख सम्पतिकी खानी १ जल थलमें सबमें ब्यापित कहत वेद असबानी। ऋषि मुनि के तन मन धन येई इनकी गति काहू नाजानी २ जोजो प्रीति कियो है हरिसे भै बैकुण्ठनिशानी। हरिकी गति हरिके जनजानैं मूरख मुख धूरि उड़ानी ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे अद्भुतगति प्रभुकी बखानी। अपनो भलो रामनामहिं सों करिहौं दिनरैनि गुलामी ४ (रागजयतश्री ६३) मन तुम ध्यान करो नित इनको। दशरथसुत अरुजनकनन्दनी बास देइ सुरपुरको १ सुत दारा परिवारआदिदै प्रीति करत मतलब को २ यहसंसार झूठ सबनातो अंतसमय को किनको ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे मैं गुलाम सियपतिको ४ (राग जयतश्री ६४) सीताराम जपोमन मेरे पूरण काम करैंगे तेरे। घरि पल छिनतेरे चितसे न बिसरैं अजहूँ चेतु सबेरे १ हिरदै बिचराखो दोऊ मूरति तुमरे काल न आई नेरे २ हरिदासनके दासरहौं नितहोब चरणके चेरे ३ सुतदारा परिवार आदिदै अंत समय साथी नहिंतेरे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे रामनाम की डोरी गहु रे ५ (राग जयतश्री ६५) रामसिया भजु बारम्बारा भवसागर उतरा चहुँपारा। ऐसानाम आन नहिं दूजो सब जगका

निशि दिन रखवारा १ सुनु मनमूढ़ मन्दमतवारे खर्चं नहीं कुछहोइ तुम्हारा २ ऋषि मुनिके तन मन धनएई इनसे अधिक नहिं फल संसारा ३ बैंदेही शरण कहैं करजोरे महिका लागत प्राणसे प्यारा ४ (रागजयतश्री ९६) दोनों नाम मात पितुमेरे। माताहैं श्रीजनकनन्दनी पिता हमारे दशरथसुत एरे १ हे मनमूढ़ जपो निशिबासर कालठाढ़ रहि हैं करजोरे २ नरतनपाय भजै नहिं इनको दृग जीवन जग है तिनकेरे ३ ऋषि मुनि इनको ध्यान करत हैं तिनके पाप न आवत नेरे ४ बैंदेही शरण कहैं करजोरे अबहीं करुचेतु सबेरे ५ (रागजयतश्री ९७) दशरथ सुत मेरे प्राणसे प्यारेरे डारिदियो कछु टोना से हमारेरे। बामअंग सोहत सिय प्यारी दहिने लषण सब जग उजियारेरे १ घरी पल क्षण मेरे मनसे न भूलैं मांगतहौं दोउ हाथ पसारेरे २ क्रीट मुकुट कर धनुष बिराजै सुघर पितम्बर हैं तन धारेरे ३ चौदह भुवन चराचर जल थल तुमहींहौ उनके रखवारेरे ४ बैंदेही शरण कहैं करजोरे ऐसी सुरति पर तन मन वारेरे ५ (रागजयतश्री ९८) दशरथ सुत औ जनक ललीरी इनकी प्रीति सब भांति भलीरी। सदा दीनपर दायाराखत बिसरत ना क्षण एक घरीरी १ भौंहैं कमान नैन कमलन सम अँग अँगकी छवि कैसी खिलीरी २ चौदह भुवन चराचर जल थल जानत हैं सबकी घटकीरी ३ बैंदेही शरण कहैं करजोरे दोनों मुरति मेरे प्राणकलीरी ४ (रागजयतश्री ९९) दशरथ सुत औ जनक दुलारीरे। इनकी सुरति मोहिं अति

लागै प्यारीरे। घरी पल क्षण मेरे चित से न बिसरे मैं ना जानों मुझे कछु जादू करिडारीरे १ क्रीट मुकुट औ धनुष बिराजै माथे में तिलकदिहे अवधविहारीरे २ बामअंग राजित सियप्यारी चौदह भुवन सब जग उ-जियारीरे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे दोऊ स्वरूपपर तन मन वारीरे ४ (रागजयतश्री १००) राम सियासे मुख नहिं मोरो निशिदिन नाम दोऊ ये टेरो। ममता लोभ क्रोधपर निंदा ये चारो दुष्टन को छोरो १ दाया धर्म्म राखु उरअन्तर परण कामकरे सब तेरो २ यकटकठाढ़ि बिलोकों नैनन जैसे चन्द चकोरो ३ सन्तनकी सेवाकरो नित उठि सुरपुर बासरहैगा तेरो ४ बैदेही शरण कहैं कर जोरे सदा गुलाम चरणको चेरो५ (रागजयतश्री १०१) निशिदिन प्रीति राम हित तोरी। जब से प्रीति किह्यों प्रभु तुम से कोटिकहै कोइजात न छोरी १ घरी पल क्षण मेरे चित से न उतरै सीतापतिकी यह जोरी २ अब मेरी मति ऐसी राखौ भूलिजाय मतिभोरी ३ तुम से काहछिपो करुणानिधि कीनचहै कोउ चोरी ४ जल थल में घट घट तुम ब्यापित भूल मूढ़ मनकेरी ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे राखिलेहु पति मोरी ६ (राग जयत श्री १०२) कसतुम राम सिया को न गायो मिथ्या जन्म मनुषको पायो। यकपन बीता द्वै पनबीते तीसर बीततहीपछितायो १ लरिकाई लरिकनसँग खोयो ज्वान भयो कामिनि सँगधायो २ बृद्धापनमें पौरुष थाके भयो लाचार ज्ञान तब आयो ३ बैदेही शरण कहैं कर जोरे अजहूं चेत किह्यो औसर आयो ४ (रागजयत

श्री १०३) रघुबंशिन की रीति भलीरी । दाया धर्म दीनपर राखत जाहिरहै सब लोक गलीरी १ सदारीति याही चलिआई भयउ नहीं कुलकोउ छलीरी २ लषण लाल दहिनी दिशि राजित बामअंग श्रीजनकललीरी ३ घटघटमें सबकोई सोहै कठिनबात बड़ी टेढ़िगलीरी ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे इनकी प्रीति कबहूं न खलीरी ५ (राग लावनी १०४) वजा नितनई अजब आला । करे सखि दशरथ को लाला ॥ कान में कुण्डल औबाला । गरे में बैजन्ती माला १ करै सबजीवन को पाला । मुक्तिपद का देनेवाला २ दुष्टदल कोटिन हनि डाला । अवध पुरका रहनेवाला ३ संगसीता औ लषण लाला । कोटिछबि भानुसों उजियाला ४ कहैं बैजू सुनिये हाला । अचल कीजै मेरा च्वाला ५ (रागमलार१०५) दरशदेउ दशरथ सुत प्यारे । तुमबिनकौन हितूहै हमारे । वामअंग सोहैं सियाप्यारीभूषण वसन बिचित्र सवाँरे १ लषण लाल दाहिन दिशि दीपित शेषाकार मनुज तनधारे २ धर्म्म हेतु प्रभु जन्म लियो है बिचरतहो सरयू के किनारे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे रोगदोष करौ दूरि हमारे ४ (रागजंगला१०६) अबमोहिं लगत राम रंगनीको । मिथ्या जन्म अभीतक खोवत तिसरो पन मेरा जातहै बीतो १ यह संसार झूठसब नातो देखिपरो सबहमको २ संत स्वभाव सुधाको सागर और प्रसंग लगत सबफीको ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सदागुलाम रहौं सियपतिको ४ (राग जंगला १०७) निशिदिन रहत प्रीति हरितोरी । सोवत जागत राहबाट

में लागी रहत नितडोरी। दशरथ सुत श्रीजनकनन्द-
नी तुमसे कौनिहै चोरी १ अपने हाथसाथ रह्यों छोड़े
तोरिनहीं कछुखोरी। अबप्रभु कृपा कीजिये मोपर छूटि
जाय मतिभोरी २ तुमसों अरु तुम्हरे दासन सों रहौं
सदाकर जोरी। घरीपल क्षणमोरे चितसों न बिसरे सि-
याराम की जोरी ३ बैजू कहैं सुनो करुणानिधि सुनेउँ
रीति यहतोरी। आये शरण तजत नहिं काहू खतामाफ
करुमोरी ४ (राग जंगला १०८) जानकीनाथ से नेह
निबैहौं। उरबिच प्रीति रीति बहु रखिहौं। भूलि कबहुँ
नहिं जैहौं। रामसिया पितु मात हमारे जूठनि नित उठि
खैहौं १ और नात सबझूठ जगतको अब नहिं धोखा
खैहौं। रटिहौं मैंयह नाम रैनिदिन सकल पदारथपैहौं २
सुरनर मुनि सबके हित येई अब नहिं मन भरमैहौं।
रोकिहौं नैन देखिहौं इनहीं चंचल चित न चलैहौं ३
मनबच क्रमसे सत्य कहतहौं हिरदै बीच वसैहौं। यह
दरबार दीनको आदर इनहींको दीन कहैहौं ४ बैदेही
शरण कहैं करजोरे इनमें मन समझैहौं। गाय बजाय
रिझाय रामको नित चरणन चितलैहौं ५ (राग जंग-
ला १०९) अबमैं रामसिया गुणगैहौं। नैनन ओटकरौं
नहिंदोनों अपनामनसमझैहौं। रामचंद्रकोनाम अमीरस
भरिभरि उदर अघैहौं १ मिथ्या जन्म सबैहम खोया पार
सिन्धु कसपैहौं। रामनाम यकनाव चहूंयुग सो अब
निशिदिन ध्यैहौं २ सुनुमन मूढ़ मन्द मतवाले कबतक
तोहिं रखैहौं। तोर कहा मैं अब नहिं करिहौं हरिच-
रणन चितलैहौं ३ जाके कहत दहत दुख दारुण

भजि त्रयताप नशैहौं। रोकिहौं नैन बिलोकत औरें चंचलमन न चलैहौं ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे नरतन फिरि कबपैहौं। नित उठि हरिपद सुनिसुनि श्रवणन प्रीति रीति सरसैहौं ५ (राग जंगला ११०) अबमन छोडु कुटिलता तनकी बारबार मैं तोहिं समुझावत मानत नाहीं हटकी। निशिदिन रामसिया पद चितधरि मानुकहामेरोअबकी १ श्वासश्वास पररामराम कहुबाजी पौपर अटकी। येमन मूढ़मन्द मतवाले जानत है को कल्हकी २ सुतदारा परिवार आदिदै प्रीति करत क्यों इनकी। अन्तहि तोहिं तजैंगे पामर झूठि प्रीति मतलबकी ३ बैदेही शरणकहैं करजोरे आश राखु नित हरिकी। कौशलसुतअवधेशलाड़िलो बासदेत सुरपुर की ४ (रागजंगला १११) देखौं अब बिचारि मन माहीं। भरमत फिर्‍यौं मोह माया में पायो सुख कहुँ नाहीं। बिन हरिभजन साधुबिन संगति ज्यों तरुवर बिन छाहीं १ बारबार मनतोहिं समुझावों छोड़ कपट छल छाहीं। निशि दिन राम सिया पद चित धरु इनसे सरिस कोउ नाहीं २ भरिभरि उद्रबिषै रसचाखत ज्योंशूकर जगमाहीं। हे मतिमन्द महाखल कायर अबहिं बीति कछु नाहीं ३ रामनाम संतन को जीवन सकल पदारथ आहीं। कोटिन जन्म को पाप जरिजैहैं रहत बिकारी नाहीं ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे तकत तोरि प्रभु राहीं। तन मन चित्त हित धन तुम मेरे भूलों पलक छिन नाहीं ५ (राग जंगला ११२) हरि मुख देखि चितैमन रहिये। निशि दिन चर्चा प्रभुकी कीजै कुटिल बात नहिं कहिये। करि

सतसंग संतकी सेवा कैप्रसन्न गुण गहिये १ तीरथ व्रत योग जपको फल सो सब इनसे लहिये। चहै उपहास करैकोइ कितनो सो चितमें नाहिं धरिये २ ममता मोह लोभ सब खोवत इनसे नेह न करिये। हे मन मूढ़ मन्द मतवारे संत संग नित चहिये ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे शोचि यही मन रहिये। सीता रामनाम जपु हियमें सबै काम तेरा सरिहै ४ (राग जंगला ११३) हरिगुण कहत सुनत हरषाहीं। वे जन सन्त सुजान जगतमें ज्यों सुरसरिकी नाईं। सदा अनन्द मगन चित राखत लोभ मोह कुछ नाहीं १ तीरथ करत जगत बिच विचरत आज यहां कल वाहीं। तिन सन्तनके दरस परस किये रहत पाप तन नाहीं २ हे मन मूढ़ महाजड़ मूरख तोहिं चेत कछु नाहीं। निशिदिन राम सियापद उर धरि छोड़ कपट छल छाहीं ३ बैदेही शरण कहैं कर जोरे हैं सबके घट माहीं। बिन हरिकृपा मिलैं नहिं सत गुरु देखत हैं कोउ नाहीं ४ (राग जंगला ११४) देखों रघुबर की प्रभुताई। सदा हेत दासन से राखत दिनदिन अति अधिकाई। सपनेमें भूलत जनको रहत निकट सुखदाई १ बेद पुराण सुयश सब गावत गति पावत कोउनाहीं। अगम अथाह नाथ की लीला रही सकल जगछाई २ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सुनो जानकीमाई। निशिदिन मनसे चितसन बिसरो यह माँगन हम पाई ३ वैदेहीशरण कहैं करजोरे उमरबीतिसब आई। तीसरपनमें दरशनदीजै चरणनमें चितलाई ४ (राग जंगला ११५) अब मोहिं राम सिया को भ-

रोसो । भरमति फिर्यों मोहमाया में सूझिपरो अब ऐ-
सो । जहँजहँ प्रीति रीति किहौं जेहिसे सबहिन दीन्हों
धोसो १ निशिदिन रसना रामनाम जपो राखो हिरदै
हरिको । इनसे अधिक और नहिं दूजो प्रीति रीति नित
सरसों २ चितमन से याही नितमेरे लागनेह रहै हरि
सों । सपने में भूलों नहिं कबहूँ रहौं गुलाम सदा इस घ-
रको ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे राखिलेहु प्रणजनको ।
एकबार प्रभु दर्शन दीजै सुफल कीजिये हमको ४
(राग जंगला ११६) तुम रघुबीरहि कबमन भजिहौ ।
कुटिल कुचाल कुसंगति बैठक इनसबका कब त्यगिहौ ।
भूले फिरत मोह मायामें राम प्रीति कब पगिहौ १ विन
हरिभजन चहूंदिशि भरमौं ठीक कहूं नहिं लगिहै ।
अबही चेतुमान मन मूरख नाहीं तौ दुख भोगिहौ २ बार
बार मन तोहिं समुझावों सोवत से कब जगिहौ । सीता
राम नाम धरु मुखमें कोटिपाप तेरो भगिहै ३ वैदेही
शरण कहैं करजोरे चौथापन जब लगिहै । मलिमलि
हाथ माथधरि शोचिहौ काम कोई नहिं सधिहै ४ (राग
जंगला ११७) अबहम रामके हाथ बिकाने । भरमति
फिर्यों मोह मायामें मिथ्या जन्म सिराने । माता पिता
बहुत समुझायो पढ़ब गुनब नहिंजाने १ उनका कहा
कछूनाहिं भायो खेलकूद लपटाने । ऐसी चूकपरी हरि
हमसे शोचि समुझि पछिताने २ विद्याज्ञान कछूनाहिं
मेरे वेद पुराण न जाने । गुरुकी कृपा संतकी दाया सीता
पति मनमाने ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे गावत वेद
। इनसे अधिक और कोउनाहीं चारों युग में

बखाने ४ (राग जंगला ११८) नित उठि रामसियाको रिझानो। ऐसी वैसी क्यों तू भरमत बूढ़भये नहिंजाने। अजहूँ मोहलोभ नहिं त्यागे माया मद लपटाने १ सुत दारा परिवार आदिदै इन क्योंहाथ बिकाने। अंतसमय कोई काम नऐहै कहिगये संत सयाने २ इनसे अधिक आन नहिं कोई वेद पुराण बखाने। नारद शारद सब मिलिध्यावत जातनहीं गुणजाने ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे भगतन के मनमाने। सपने में नहिं भूलत जन को हैं प्रभु पर्म सयाने ४ (राग जंगला ११९) दोनों नाम सजीवनि येरी। दशरथसुत श्रीजनकनन्दनी सुख सम्पति की ढेरी। सपने में नहिं भूल्यो इनको काटि देयँ भ्रमबेरी १ सुरनर मुनि सब इनको ध्यावैं लोक लाज कुल छोरी। तिनको चित नित निर्मल राखत पाप भाग करजोरी २ जबतक जीवत यह रसपीवत चितवत प्रभुकी ओरी। प्रीतिरीति इनहींसे राखत और आश सब छोरी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे बहुत बीति रहीथोरी। इतनेउँको प्रभु पारलगाओ दशरथ सुतपतिमोरी ४ (रागजंगला १२०) मैं गुलाम सीता पतितेरो। माफ़कसूर कीजिये मेरो अपनी ओर निहारि के हेरो १ आयों शरण नाथ मैं तेरी दूरिकीजिये संकट मेरो २ समदर्शी प्रभु नाम तिहारो गुण औगुण ना हेरो ३ क्षणभंगी यह खोटी काया तुम सिवाय मालिक को मेरो ४ बैदेहीशरणकहैंकरजोरे मोहिं भरोसा चरणन केरो ५ (राग भजन १२१) तुम बिन नाथ हितूको मेरे। भरमत फिरयों मोह माया में जान्यों नहीं हाल कछु

तेरे १ लरिकाई लरिकन सँगखोयों ज्वान भयों तो काम रहेघेरे २ सुतदारा परिवारमें भूल्यों अंत समय सब देत हैं छोरे ३ जो जो प्रीति कियो प्रभु तुमसे तिनका दियो सुरलोक बसेरे ४ बैजूकहैं दोऊ करजोरे रहिहों गुलाम सियापति तेरे ५ (राग झँझौटी १२२) राखहु नाथ हाथ पति तोरे। यद्यपि औगुण हैं बहुमोरे माफ कीजिये धर्म्म निहोरे १ यह संसार झूठ सब साथी तुम सिवाय साँचा को मोरे २ मांगतहों करजोरि विनय करि एक बार दर्शन मोहिं देरे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुनहु टेर सीतापति ओरे ४ (रागमलारकी ठुमरी १२३) इनमें राजत राजयईरे। दशरथसुत श्री जनकनन्दनी हैं शिरताज दुईरे १ जित देखत उत ब-सि करिराखत तनमन मोहिलईरे २ घरि पल क्षण मोरे चितसे न बिसरत मैं इनकी बलिगईरे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुन्दरता नखशिख न बहीरे ४ (राग झँझौटी १२४) मन तुइ छांडु भरमना चितकी। सी-ताराम भजन करु नित उठि बात तेरे है हितकी १ जल थलमें घट घटमें व्यापित राखिलेत पति जनकी २ खम्भफोरि प्रहलाद उबार्‍यो देर कियो नहिं छिनकी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे इनसे प्रीति कियो नहिं छल की ४ (रागदेवगन्धार भजन १२५) सीता राम कहो मन मेरे। बार बार मैं तुइ समुझावों अबहीं चेतु सबे-रे १ निशिदिन जपाकरो दोऊ आखर पाप दोष आवत नहिं नेरे २ और काम सबचंद रोज़के ईहै बीज घनेरे ३ दाया धर्म्म राखि हिरदे में होउ चरणके चेरे ४ बैदेही

शरण कहैं करजोरे रहु अधीन दशरथ सुतकेरे ५ (राग देव गन्धार भजन १२६) मनमेरे मानु कहा तुइ अब की। सीता राम भजन करु नित उठि छोडु कुटिलता तनकी १ दाया धर्म्म सदाउर राखो बात सुनो सुरपुर की २ भरमत फिरत मोह माया में खबर नहीं उस घर की ३ संतनकी खिदमतकरो नितउठि छोड़िदेव भ्रमघट की ४ बैदेहीशरण कहैं करजोरे बात बड़े मतलबकी५॥

इति श्रीरामचरितबालअनुरागावलीप्रथम
स्कन्धसमाप्तम्॥

अथ द्वितीयस्कन्ध प्रारम्भः॥

(रागख्याल धनाश्री १२७) मन मानुकहा कहु राम राम। सुन्दरतन ऐहै कौनकाम। अजामील गज गणिका तरिगई जमनतरयो कहतैहराम १ खम्भफोरि प्रहलाद उबारयोबालमीकि जपि उलटानाम २ निशिदिन जपत छकत शिवशंकर जिन जीतिलियो सब क्रोधकाम ३ भरमत फिरत मोहमाया में अन्त समय को ऐहैकाम ४ अजहूं चेतु हेतुकरु प्रभुसों सीतापतिको होगुलाम ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुरपुर में पैहो आराम ६ (रागकान्हरा १२८) सीताराम सजीवनि मेरे। राजादशरथ घर जन्म लियो है ऋषि मुनि ध्यावत नितउठि एरे १ जनक नगर में जनकनन्दनी ऐसी सुरति कहुँ मिलत न हेरे २ निशिदिन जपो नाम मन मेरें तुम्हरे पाप न ऐहैं नेरे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे दर्शनदीजै

धर्म्म निहोरे ४ (राग भजन गन्धार १२९) सुनु मन मूढ़ फिरत क्यों भटका । पहिले कहे भजन मैं करिहौं आय जगत में अटका १ बालापन बालक बनिखोयो लोगकहैं अबहीं है लरिका २ ज्वानभये तब कामीबाजे संग गहे अबलनका ३ अजहूं चेतु हेतुकरु प्रभुसे पाप जारि हैं तेरे तनका ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे चरण गहौ सियपतिका ५ (राग जंगला १३०) जपोमन निशिदिन सीताराम । जाके कहत दहत दुख दारुण सिद्धि होहिंसबकाम १ अजामील गज गणिका तरिगई कहत रहैं यहनाम २ बैजूकहैं दोऊकरजोरे यही सयानो काम ३ (राग बिलावलकी ठुमरी १३१) राम तुमहीं मेरे जीवनप्रान । राजादशरथ घर जन्म लियोहै धर्म हेत भगवान १ बामअंग सोहैं सिय प्यारी शोभा क्या करूं बखान २ सीतारामबसो उर मेरे बैजूका राखो मान ३ (राग बिलावलकी ठुमरी १३२) मेरोमन राम चरण में अटको १ लागिगया चित हरिचरणन में छूटिगया सब खटको २ घरीपल क्षणमोरे चितसे न बिसरैं भलो स्वभाव सियापतिको ३ रामलक्ष्मण भरत शत्रुहन दशरथ नाम पिताको ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे राखिलेत प्रण जनको ५ (राग सोहनी १३३) बसोमेरे नैननमें सियाराम । मिलत है हमका बहुत अराम । घरीपल क्षणमेरे चितसे न बिसरो लीजै हमसे यहीकाम १ मिथ्या जन्म अभीतक खोया ऐसे निमकहराम २ सीताराम बसो उरमेरे बैजूको राखियेनाम ३ (रागठुमरी १३४) झलक दिखलाकै मनबसि करिलियो मोर । रंगरँगीलो

छैल छबीलो तिरछी चितवत चितचोर १ क्रीट मुकुट पट पीताम्बर तन लटलटकि रही मुख ओर २ बाम अंग सोहै सिया प्यारी दहिने लषण किशोर ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मैं गुलाम प्रभुतोर ४ (राग भजन १३५) सुनो दशरथसुत जनककिशोरी । बिनय करौं दोनों करजोरी । बालापन लड़िकन संगखेल्यो फिकिरि लिहेरह्यो मेरी १ ज्ञान भयों तब सब कुछ दीन्ह्यो कौनिउँ बातरही नहिंथोरी २ जहँ जहँ पर्यो हमेशह गाढ़े तहँ तहँ राखि लियो पतिमोरी ३ बृद्धापनमें सुधि बिसरायो पिछलीप्रीति काहेको तोरी ४ हौंलाचार द्वार को पालक बीती बहुत रही अब थोरी ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे सदा आश कोमल पद्कोरी ६(राग नट १३६) मेरामन रामनाम तू जपतो । लगाय देव चित हरि चरणन में छूटिजाय सब खटको १ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन राखिलेत प्रण जनको २ सुतदारा परि- वार आदिदै प्रीतिकरैं मतलब को ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मैं गुलाम सियापतिको ४ (राग नट १३७) मेरामन रामकाम अब करतो । कर धनुषबाण कटि पी- ताम्बर छबि मोहिलेत सब जगको १ पलक एक भूलै नहिं चितसे भलो स्वभाव सिया पतिको २ माया की बश फिरौं भुलानों जानि पराअब हमको ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मैं गुलाम इसघरको ४ (राग लावनी १३८) राम सियाको नित ध्यावो मोरे भाई रे १ कहति कहति तुम्हरिउ बनिजाईरे २ राजा दशरथ घर जन्म लियो है धर्म्म हेत प्रगटे रघुराईरे ३ मंगलचार अवधमें छाये रे

घर बाजत अनँद बधाई रे ४ बैदेही शरणकहैं करजोरे मोरे तोहै तुमही आदवाईरे ५ (राग ठुमरी १३९) राम तुम राजनके शिरताज। राजा दशरथ घर जन्म लियो है धर्म्म हेत महराज १ सुरनर मुनि सबके हितकारी करिहौ जनके काज २ जल बूड़त गजराज उबार्‌यो सुनत टेर महराज ३ तोर्‌यो धनुष जनक प्रण राख्यो प्रणतपाल महराज ४ दुष्टन के दल खण्डन कीन्ह्यो मंगलरूपधिराज ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे हमारिउ राखो लाज ६ (राग ठुमरी १४०) अरज सुनिये प्रभु कीजै कान। करौं नित हरिचरणन को ध्यान। कुछ जानत नहीं वेद पुरान महा मूरख बिलकुल अज्ञान १ जन्मउत्तम घरदीन्ह्यो रामफिरत मायामें रोज भुलान २ प्रभु तुमहौ बड़े चतुर सुजान उबारो अबकीमेरो प्रान ३ कहैं बैजू मोहिं दीजैदान सियापति मैं हूं तोर गुलाम ४ (राग बधाई १४१) रघुनंदन रूप बिशाला। नितउठि केल करत सरयू तट संग लिये सियाबाला १ कर धनुष बाण कटि पीताम्बर छबि क्रीट मुकुट छबि आला २ जित देखत उत बशि करि राखत पहिरे बैजन्तीमाला ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे है दशरथ को लाला ४ (राग बिलावल १४२) मन तुम नाम जपो सियापतिको। छूटिजाय यमपुरको खटको। बारबार मैं तोहिं समझावों मानत नाहीं हटको। सुन्दर देह पाय पद हरि भजु यह संसार झूठ सब टटको १ राम कहत प्रहलाद उबरिगे खम्भ फोरि हरणाकुश पटको। अजामील गज गणिका तरिगई शबरी किरात जात सुरपुरको २ सुनु मनमूढ़

सिखावन मेरो हाल कहाये तेरे हितको। सुतदारा कोऊ काम न ऐहै मायामोह में क्यों है अँटको ३ पहिले कहै भजन हरि करिहौं भूलिगये देखत सब जगको। बैदेही शरण कहैं करजोरे सदा गुलाम रहौं इस घर को ४ (राग लावनी १४३) हमैं कछु नीकन लागत काम। सियापतिपर दिल मोर लोभान। लड़कपन खेलिकै खोया रहेहम बिलकुल निपट नदान १ युगन युग जाहिर है यह नाम। इनको जानत सकल जहान २ जवानी में बढ़ा अभिमान रहे कामिनि के फन्द भुलान३ बुढ़ापे में आय कुछ ज्ञान धर्यो जब गुरुचरणन पर ध्यान ४ पढ़े नाहीं कछु वेद पुरान यह मूरख बिलकुल अज्ञान ५ कहैं बैजू करिकरि परणाम सदा इनके चरणन को गुलाम ६ (रागठुमरी १४४) चलोमन करोसरयू अस्नान। जपो निशिबासर सीताराम। छोड़सब लोभ मोहके काम। कहालुइ इतना मेरा मान १ बने राघौ के सुन्दर धाम। सन्तजन पूजत शालिग्राम २ मनुष तन पायकै करुयहकाम। लगारहु चितसे आठोयाम ३ कहैं बैजू मूरख अज्ञान। पढ़े नाहीं कछु वेद पुरान चलब तुलसीके बचन प्रमान बने बिगरे के मालिक राम ४ (रागकान्हरा १४५) जानिबूझि मन फिर बौरानेरे। यहि जगमें नहिं प्रीति करतको एकसे एकहैं चतुर सयानेरे १ पहिले कहे भजन मैं करिहौं देखिकै माया फिर ललचानेरे २ मेरा कछु नहिं दोष पापहै चारिउ नैन देखैं मानो बिष सानेरे ३ यहकाया मल मूत्रको बरतन सुरत सलोनी पर इतने गुमानेरे ४ सीताराम जपो निशिबा-

सर यही मंत्र अइहै तेरेकामेरे ५ बैदेही शरण कहैं कर जोरे चारिउ सो बचैंते बड़ेहैं सयानेरे ६ (राग ख्यमटा १४६) बहुत दिन बीतिगे मेरे प्यारे दरश नाहिं पायन यार तुम्हारे १ निशिदिन मेरी आशलगीहै निरखौंसांझ सकारे २ घट घटमें सबके तुम व्यापित जाहिर सरयू किनारे ३ बाम अंग सोहत सिय प्यारी दहिने लषण उजियारे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे काटहु पाप हमारे ५ (राग अद्धा १४७) हमारे मन कबहुँन भूल्यो सियाबरका। राहबाटमें काम करत में रातिहोय चहै अब दिनका १ घरिपल क्षण मेरे चितसे न भूलैं देखा किहेब सुख इनका २ हितैं चितसे जी इनको ध्यावैं कष्ट परत नहिं तिनका ३ घट घटमें सबके ईब्यापित जित देखो तितइनका ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे अन्त में जैहौ सुरपुरका ५ (राग ठुमरी १४८) मनुष तन पायके जपु दोऊनाम। यही है मुक्ति पदारथ काम। दशरथ सुत श्रीजनकनन्दनी सुख सम्पति को धाम १ युगनरमें हैं येजाहिर करिहैं पूरण सब काम २ जलथल में सबमें ई व्यापित घट घट में बिश्राम ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे हरिचरणन के गुलाम ४ (राग कान्हरा १४९) अपना का सब कोऊ समझै सयानेरे। करताकी बात कोऊ नहिंजानैरे। संत बिप्रसे रारिकरैजो तिनके कहूं नहिं लागि है ठेकानेरे १ चारि दिना की हैं जिंदगानी तापर करत हौ इतना गुमानेरे २ दुनियाँ दौलत माल खज़ाना ये नहिं काहूके हाथ बिकानेरे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सियाराम सुनु नित उठिका

नेरे ४ (राग खेमटा १५०) कबहुँ अब हम नामन भरकैबो। लाखतरहसे कोउ भरमावै दूरिसे देखि घिनैबो १ परदारासे प्रीति किहे से कैहै नरक को जैबो २ दरश परश संतनके करिबे अपनो जन्म बनैबो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे रामसिया गुण गैबो ४ (राग खेमटा १५१) क़दर क्या जानै मूढ़ गँवारे। जिनके इश्क नहीं है दिलमें सूझिपरत अँधियारे १ सांची भक्ति प्रहलाद की जानिकै हरनाकुशको मारे २ गजकी टेरसुनी जब श्रवणन काट्यो फंद करारे ३ राजा बलिसे बाचा हारे दरशन देत सकारे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुनिये राम पियारे ५ (राग बैरगिया धुन १५२) तुम रघुनन्दन अति मोहिं प्यारे। अति मोहिं प्यारे दशरथ के दुलारे। बामअंग सोहै सियप्यारी दहिने लषण सब जगउजियारे १ घरि पल क्षण मेरे चितसे न बिसरो लागिरहो हिरदै में हमारे २ बिन देखे मोहिं कल न परत है नैननसे बरषैं जल धारे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे तुमरी सुरति पर तन मन वारे ४ (राग अद्धा १५३) बौरे मन कहँ तक सिखओं मैं तुमका। पहिले कह्यो भजन मैं करिहौं भूलिगयो क़ौल उसदिन का १ बालापन लरिकन सँगखोयो हाल नहीं जान्यो कुछु इनका २ ज्वानभयो कामिनि में लोभ्यो काम नहीं कियो द्विजकुलका ३ वृद्धापा में पौरुष थाके अब तो ध्याओ सियपतिका ४ बैदेहीशरणकहैंकरजोरे कामकरो अब सुरपुरका ५ (रागलावनी १५४) मन मानु कहा तुइ मोर यार राजी में। कुछ मजानहीं करने से दगाबा-

जीमें। किया जो दगा किसीसे यार किसी पाजीने। चढ़ते नहीं देखाकभी उसेताजीमें १ जूठे फल खायो शवरीके जाय भक्तिसांची में। दुर्योधनकी मेवात्यागि खुशी भाजी में २ देखा पण्डित विद्वान् बहुत भागी मैं। सांची नहीं देखा बात कमर बांधी मैं ३ केहि विधिसे मिलैं सियराम करौं आजुइ मैं। बैजू ये कहैं करजोर रहौं उनका ओ द्वार पाजी मैं ४ (रागलावनी १५५) कुछ जरा शोचनहिंकरो यार तुम मनमें। निशिदिन जपिये सियराम बैठि बेगम में। भूलो नहीं एको पलक कहौ दम दम दममें। जब तक यह तेरे सांसरहै ओतनमें १ चहु तीरथ जंगल बियबान बैठिके घरमें। ईचारिउका फल एक देत प्रभु पलमें २ दाया वो धर्म बड़ीचीज राखुनित मनमें। चितलाग रहै दिनरैनि सन्त चरणों में ३ बैजू ये कहैं करजोर खुशी रहु दिलमें। यहु मुक्ति पदारथ नाम तरौगे छिनमें ४ (रागपरभाती १५६) दगा तूने क्यों किया निर्दई। जो जो कौल कियाथा हमसे सो सांची न भई १ इतनी उम्र बीतिगइ मेरी नित प्रति प्रीतिनई २ शोच बिचारि हम चुपरहैं मनमें राखु गई सो गई ३ निशिदिन आशलगी हृदयमें अबतक सुधि न लई ४ बैदेही शरणकहैं करजोरे सबदेखौं मैं राममई५ (राग लावनी १५७) दिल मेरेको मनयार जो भरकाओगे। इनबातों में नहीं नफा कभी पाओगे। परदारा औ परमाल को ललचाओगे। जो कुछ नाहिं लिखा लिलार नहीं पाओगे १ पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण धाओगे। बिनगुरू ज्ञान नाहिं एक रमक पाओगे २ हिरदै

बिच हरिको ध्यान जो तुम लाओगे । सुरपुर में जाय आराम बहुत पाओगे ३ बैजू ये कहैं समुझाय समुझि जाओगे । केवल जपिये सियराम मुक्ति पाओगे४ (राग लावनी १५८) मनमानु कहा तुइमोर छोडु छलछांहीं । इन बातोंमें कुछनफा मिलैगी नाहीं । जपतपकरि योग वैराग फिरौ जगमाहीं । बे सीतापति संयोग सिद्धि कुछ नाहीं१ दाया व धर्मदोउमूलराखुउरमाहीं । क्षैहैक्याकीन्हे योग उठाये बाहीं २ बैजू ये कहैं करजोरि देखु मनमाहीं सीतापति जपु दिनरैनि दुःखसबजाहीं ३ (रागलावनी। १५९) जो कुछ किया तुमने यार वही पाओगे । नेकी व बदीका हाल जानिजाओगे । दोदिनकीहै फस्ल बहार गरूर लाओगे । मानुषतन बारम्बार नहीं पाओगे १ संतोंसे कहिकहि झूठ जो ललचाओगे । इनबातों में नहिं नफाखताखाओगे२सुखचैनदियातूनेखोयइजापाओगे। ऐसा औसर फिर यार नहीं पाओगे३ उसमालिकके अब पास कभीजाओगे। दोनों कर मलमल हाथ औ पछि-ताओगे ४ बैजूये कहैं करजोरि ध्यान लाओगे । सीता पति जपु दिनरैनि मुक्ति पाओगे ५ (रागलावनी १६०) गुस्सा फिक्रदोऊ हैं हराम। इन्हें छोड़ो जपिये सियराम। पापकीमूल गर्भ अभिमान। परोगे भवसागर के धाम१ सीख यह मानु मूढ़ अज्ञान। सियापतिको रहु रोजगुला-म २ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुफल होहि सबकाम३ (राग भैरवी १६१) हमारेओई रखवारे रघुबीर। बाम अंग सोहैं सियप्यारी दहिने लषणरणधीर१ क्रीट मुकुट कर धनुष बिराजै बिहरैं सरयूकेतीर २ जन्मदिये उत्तम

ब्राह्मण घर पहिले पैदाकियो और ३ जोजोयुद्ध लड़े हैं
हमसे ह्वैगये फकत फकीर ४ जालवाल दुष्टन बहुकीन्हा
चली न एकौतदबीर ५ खाना खरचा नितउठिभेजैं पूरी
शक्कर खीर ६ बैदेहीशरण कहैं करजोरे यही से मनमें है
धीर ७ (रागभैरवी १६२) अवधपुरहैसब भांतिभला।
राजत राम बाम सियप्यारी दहिने कर लषण लला १
दरश परश सन्तन के किहे से जाई सबपाप चला २
भारत बीर तीर बहै सरयू शत्रुघ्न की अजब कला ३
बैदेही शरण कहैं करजोरे सुनिये सियरामलला ४ (रा-
गभैरवी १६२) सीताराम प्राणहैं मेरे। आदि शक्तिहैं
जनकनन्दिनी पूरणब्रह्म दशरथसुत येरे १ घरिपल क्ष-
णमेरे चितसे न बिसरैं रहत नैनके नेरे २ जोजो प्रीति
कियो है इनसे सुरपुर जाइ कियो है बसेरे ३ दायासद
दीनपर राखत मारेउ दुष्ट घनेरे ४ चित हितसे जे इ-
नका ध्यावैं तिनके काल न आवत नेरे ५ बैदेही शरण
कहैं करजोरे सुनु मन मूरुख येरे ६ (राग भैरवी १६४
भजुमन मूढ़ पदारथ एई। दशरथ सुत श्रीजनक न-
न्दिनी इनसे अधिक जग आन न कोई १ तीरथ ब्रत
योग जप संयम बिनहरि कृपा सिद्धि नहिं होई २ ना-
तन पाय भजैनाहिं इनको धृग जीवन जग शूकर ओई ३
जल थलमें सबमें ई व्यापित वेद पुराण कहत सब
कोई ४ बैदेही शरण कहहिं करजोरे जीवन प्राण मो-
ई दोई ५ (राग भैरवी १६५) बिन हरिभजे जैहैंना
रोग। माया मोह लोभ में भूला प्यारे लगे घरके स-
लोग १ तीरथ ब्रत किये क्याहोइहै बिन सीतापति

संयोग २ दाया धर्म सन्त की सेवा इनसे अधिक नाहीं जप योग ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे रामसिया से करो न बियोग ४ (राग भैरवी १६६) बिनाहरिहितू हितू को तोर। सुत दारा परिवारमें भूला तिनका कहतहैं ई सब मोर १ ई घटभीतर पांच मवासी चितनाहीं राखत यक ठौर २ बिनहरिभजे पारकस जैहो भवसागर नदियाब-है जोर ३ बैदेहीशरणकहैं करजोरे सियारामकीबाँह कीं जोर ४(रागभैरवी १६७) चेत कर सुन मन मेरोज्ञान। जपो निशिबासर सीताराम। युगन युगनमें है ई जाहिर करिहैं सुन्दरकाम १ याही में मिलिहैं तोहि अराम छोड़ु सब लोभ मोहके काम २ मिलैगी तुमका बहुत समान अन्त सुरपुर करिहो बिश्राम ३ बात यह जानत संत सुजान छोड़ि घरबार जपत हरिनाम ४ कहैं बैजू मूरख अज्ञान सियापति करिये मोहिं गुलाम ५ (राग भैरवी १६८) भरमत फिरत मूढ़ मन एरे। बारबार मैं तोहिं समझाओं समुझत नहीं अंध तोहिं घेरे १ सीता राम जपो निशि बासर पूरण काम करैंगे तेरे २ माया मोह लोभ नहिं त्यागत काम क्रोध नित रहत है घेरे ३ बै-देही शरण कहैं करजोरे राम नाम की निश्चय करुरे ४ (रागभैरवी १६९) हितू रहैं रामँ चहै और न कोई। और प्रीति सब झूठी जगत की ई करै प्रीति तो हितू सब कोई १ इनहीं जन्मदियो मानुष को येई चहैं सोई सबहोई २ भूला रह्यों मोह मायामें इतनी उमर हम मुफ्तमें खोई ३ हे मन मूढ़ जपो निशिबासर मुक्ति प-दारथ को फल येई ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे इनसे

अधिक मोहिं को सुख देई ५ (रागभैरवी १७०) मेरा मन मोहि लियो अवध किशोर। बाम अंगसोहैं सिय प्यारी दहिने लषण बैठे अँगजोर१ भौहैं कमान नैनक-मलन सम तिरछी तकनि चंचल चितचोर२ कीटमकुट कर धनुष बिराजै पीताम्बर सब पर शिरमौर ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे जीवन प्राण यई हैं मोर ४ (राग-भैरवी१७१) राम सिया भजुतजु सब योग। ऋषिमुनि इनकाध्यान करतहैं ढूंढ़त फिरत सदा नितरोज १माया मोह लोभ में भूला संत मेत का बेसहत रोग २ हे मन मूढ़ जपो निशिबासर इनसे कबहुँ ना किहयो बियोग३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मेरे दूरिकरौ सबरोग ४ (रागभैरवी १७२) देखुमन सूझिपरत नहिं तोहिं। बार बार मैं तोहिं समुझाओं निशिदिन रहै विषयफलबोय१ मायामोह लोभमें भूला इतनी उम्र दिहेमुक्त में खोय २ सीताराम भजो निशिबासर तबहीं जन्मसुफल यहुहो-य ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे इनसे अधिक दूजा नहिं कोय ४ (रागभैरवी १७३) चंचल नैन बड़े चितचोर। जब ई चारि भये इकठौरी जी भरकावत मोर १ नारद-मुनि पाराशर मोहे देखि नैनकीओर २ इनको रोको बि-लोको न काहू करत बिरहको जोर ३ बैदेही शरण देखु हरिसूरति सीतापतिकी ओर ४ (रागभैरवी १७४) नैना जुलम करत नितरोज। भरमत फिरत मोह माया में त्यागि ज्ञान जप योग १ दुनिया दौलत माल खजाना मिलत नहीं बे किहे संयोग २ सुत दारा परिवार में भूला छोड़प्रीति करु मुक्तिको ठौर ३ बिन हरिभजन

सन्तबिन सेवा जैहै ना नैननकी मौज ४ बैदेही शरण राखु उरअन्तर जनकनन्दिनी अवधकिशोर ५ (राग-भैरवी १७५) सुनुमेरी आली नैनोंने जुलमकिया। ऐसे कठिन कठोर दोउ कपटी मनमेरेको फँसायदिया १ बार-बार मैं इन समुझाओ दिल मेरेको उलझाय दिया २ अपना कहा करैं ये नित उठि जोहै चाहत इनकोजिया ३ ज्ञान ध्यान जपयोग दानको पांचो चीजैं करने न दिया ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे इनसे बचाओ मोहिंरामसिया५ (राग भैरवी १७६) मानु मन मूरुष जन्म सिरान। लरिकाईं लरिकन सँग खोयो ज्वानभये तब किहे तुइ गुमान १ भरमत फिरत मोहमायामें कबहूँ न उदर अ-घान २ तीरथ बर्त कछू नहिं कीन्हे ना करसे दीन्हे कु-छ दान३ एक पन बीते दुइपन बीते तिसरहु आय बीति नगिचान ४ आँखिन अन्ध श्रवणनहिं सुनियत इतनेउ पर नहिं आयो ज्ञान ५ बैदेहीशरण कहैंकरजोरे सकल पदारथ भजु सियराम ६ (राग भैरवी १७७) नैनैभर कावत मनमोर । बारबार मैं इन समुझाओं मानत ना चितचोर १ परदारा परसंग किहेसे जात काम दाम तन जोर २ मुक्ति पदारथ नहिं परनारी देत नरककोठौर ३ इनका कहा मन कबहूँ न मान्यो तबहीं जन्म सुफल है तोर ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे सीतापति राखौ प्रण मोर ५ (राग भैरवी १७८) खताकीजे प्रभुमाफ हमा-र। जैसेतैसे बाजत तेरो दशरथसुत राजकुमार १ बाम अंग सोहत सियप्यारी दहिने लषण जानत संसार २ अवध पुरीमें बास तिहारो तीन लोक उजियार ३ बैदेही

शरण कहैं करजोरे तुमसे को मेरप्यार ४ (राग भैरवी १७९) लगैं न दोऊ नैना ये बड़ेहैं बलाय। जबसे उलझि जायँ काहू से छूटेना छुटाये चाहै जियजाय १ घरि पल क्षण मेरे चितसे न बिसरै रहिरहि जिय घबराय २ लगे नैन सुलझैं नहिंआली चाहै करिथाके कोई कोटि उपाय ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सियाराम मोहिंलीजे बचाय ४ (राग भैरवी १८०) प्रीतिकरि इश्कका रंग चढ़ा। बारबार मैं मन समुझाओं धीरना जातधरो १ घरिपल क्षण मेरे चितसे न भूलो दिल तुमहीं में धरो २ पलक एक बिन दरश कलपसम नैनन से न ओट करो ३ दशरथसुत श्रीजनकनंदिनी जीवन प्राण मेरो ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे चरणन में रहत परो ५ (राग भैरवी १८१) नहक मन मोहि लियो ओमेरो। बेपरवाहि फिरत रहौं निशिदिन फ़िकिरिमें जानपरो १ ना जानो क्या करि दियो हमको काम काज बिसरो २ दशरथसुत श्री जनकनन्दिनी तुम्हरो नेह खरो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे नैनन से ना ओटकरो ४ (राग भैरवी १८२) मेरो मन लैगयो अवधकिशोर। झलक दिखायके मन बश कीन्हो चितै के मोरी ओर १ बाम अंग राजत सियप्यारी ऐसी सुरति देखा नाहिं और २ जब से दृष्टि परो हरि मेरी नीक न लागत है कोइ और ३ बैदेही शरण को दरश अब दीजै सुफल मनोरथ तबहीं मोर ४ (राग ग़ज़ल १८३) सियारामके गुण गातही दुख रोग मेरा भगगया। गुरु चरणों के परतापसे दिलमें मेरेओआगया १ चारो पदारथ

मिलगये जब ध्यान सच्चा आगया २ चितसे मेरे भूलै नहीं रग रगमें यह समागया ३ हरएकसे मैंने सुनाजो जो जपा इस नामको। बाक़ी नहीं कोई रहा मंशा के फल वह पागया ४ बैजू कहैं सुन मन ओरे तुभको कोई बतलागया। तुलसीदास को गुलामहूं अब ख्यालमुभ को आगया ५ (राग भैरवी १८४) भरोसा मोहिं है सिय रामतेरो। जबसे जन्म दियो प्रभु मेरो औगुण माफ करो १ जल थल में सब में तुम ब्यापित तुमसे कौन बड़ो २ अबही तक भूला रह्यो जगमें अब कुछ सूभि परो ३ जौन करार करिआयो रहै तुमसे कुछ नहिं पूर परो ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे औगुण माफ करो ५ (राग लावनी १८५) यह अरज सुनो शंकर योगी। हरो सब रोग करो भोगी। घरि पल क्षण मेरे चित सें न बिसरै। देखा करौं सिय राम सोहगी १ यही दान मोहिंदीजै जल्दी हरि दरशन को मैं रहौं लोभी २ इन से और हितू नहिं मेरो हम जांचि लिया दुनियां सग-री ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे दस्खत कीजै मेरी अरजी ४ (राग ग़ज़ल १८६) मज़ापायाहै जिसने राम के गुण गाने को। रहानहिं खौफ उनको फिर ज़रा यम-राजके धमकाने को १ परेहैं शौक जिनको हरवक्त दर-शन को रोज़जाने को २ कहा प्रह्लाद ने इस नाम को बहु प्रेमसे कहा माना जरा ना बापके धमकाने को ३ रहते हैं हमेशा संग अपने दासों के दिया करते हैं भोजन रोज तोफा खाने को ४ कहैं बैजू दोऊ करजोरि कै प्रभू तेरे रिभाने को ५ (राग ग़ज़ल १८७) हुई

परतीतिजबसे रामको नित ध्याने को। लगारहताहै दिल मेरा श्री अवधपुर को जानेको १ मिला करते हैं सपने में मुझे ये दिल मेरा उलझाने को २ किया करताहूं खिदमत हर वक्त पाताहूँ रोज हमेशा तोफा खानेको ३ मज़ा इनकी मोहब्बत का अनारी लोग क्या जानै।जौहरी सन्तहैं हरिके बिमल गुणके बतानेको ४ कहैंबैजू दोऊकर जोरिकै हरदम सियापतिसे।बचाओ दासको वातौंबुरीसे चितलगानेको ५ (राग ग़ज़ल १८८) सियाबरकी अदा क्या देखिये आलीनिरालीहै। अजब बांकी वजादिखला केसबको मोहिडालीहै १ शरणमें आगयाहरिके हज़ारों सिन्नतें जोकी किया पूरण सकल मनसा गयानहिं हाथ खालीहै २ क़दर जो जानते हरिकी उन्हींको संत कहते हैं। नशा हरवक्त हरिगुणका लहर जिसकी निराली है ३ कहैं बैजू दोऊ करजोरिकै हरदम सियाबरसे बढ़े नव नेह चरणों में इसी से दिलबहाली है ४ (रागग़ज़ल १८६) श्री जानकीरमन से मेरा प्रेमपगाहै। माथे में तिलक सोहता बांकी ये वजाहै १ सिरताज बिमल पीत बसन कानों में कुण्डल हाथों में धनुषबाणहै तरकसभी लगाहै २ बिना दीदार यारके क्या क्या करूं तदबीर। रहताहै दिलमेरा ये दामनसे लगाहै ३ बैजू कहैं करजोरि कै चरणों में मज़ाहै। इनके सिवाय और कोई न सगा है ४ (रागग़ज़ल १६०) नाहक बेवकूफ गँवारसे मैंने दिलको अपने फँसादिया। मैं हालसे आगाह नथा मन को मेरे भरकादिया १ जो क़ौल था करने को हमसे पूर- ना कोई किया कुछ रोजमें भूलारहा फिर ख्याल मालिक

का किया २ बैजू कहैं करजोरिकै सुनि लीजिये रघुबर सिया। मैं तो भरोसे आपके तुमने मुझे पैदाकिया ३ (रागग़ज़ल १६१) दीनपर हरदम दया सियराम करनाचाहिये। भलाहूं या बुराहूं हरबलायसे बचाइये १ गुलामहूं दुवारको अब दिलचहै सो काहिये २ आपकी मेहरबानगी क्योंकर भला सराहिये ३ बैजू कहैं करजोरिकै मुझको नहीं बिसराइये। निजदास अपनो जानिके चरणों में चित्तलगाइये ४ (राग ग़ज़ल १६२) दीनपर हरदम दया लाजिम तुम्हें रघुनाथ है। जीवन मरण यशहानि अपयश आपके सबहाथ है १ दुनियां व दौलत सल्तनत सबआप की खैरातहै। जिसको चहौसो दीजिये मेहरबानगीकीबातहै २ बैजूकहैं करजोरिकै निशिदिन लगीमेरीआसहै ३ दरशनदयाकरिदीजियेअब इन्तिजारी खास है ४ (राग ग़ज़ल १६३) साहबी रघुनाथ की हमको कोई बतलाइदे। ऐसाकोई मिलता नहीं दरशन मुझे कराइदे १ ध्यानमें आती नहीं क्योंकर कोई लखाइदे २ संतों में हरदम बसैं तुम उनसे पूछोजायके ३ बैजूकहैं करजोरिकै चरणोंमेंशीशनवायके इनको कभी ना भूलना मानुष्यका तन पायकै ४ (राग ग़ज़ल १६४) मुक्ति अपनी जो चहो सियरामके गुण गावरे। निशिदिन जपो इसनाम को अब ध्यान सच्चा लावरे १ संतोंकी खिदमत करो राखो सहजसुभावरे २ दाया धरम चितमें धरो कोई जीवना सतावरे ३ काम क्रोध लोभ मोह पापसे डेरावरे ४ जो कुछ जुरै भोजन सलोना जूठ उनका खावरे ५ बैजू कहैं करजोरिकै यक

पलक ना बिसराउरे ऐसापदारथ नामहै हिरदै में तू ल-
सावरे ६ (राग गज़ल १६५) चोलासंतों के काम आता
तो खासाथा। लड़कपन खेलिकै खोया जवानी इश्कका
तमाशाथा १ नहींमालूमहै मैं कौनहूं किसदेशका बताया
है नहीं अबतक किसीने हाल औ क्या साँचाथा २ रहेहैं
शौक हमको हरवखत हरचीज़ के दिया रघुनाथने खाना
व खरचा आलाथा ३ कहैं बैजू दोऊ करजोरिकै दरबार
ओक्या बांकाथा। सियबरके हुक्मसे ए नगरिया जांचा
था ४(रागगज़ल १६६) एक रामनाम सच्चाहै झूठा ज-
गत संसारहै दुनियां औ दौलत सल्तनत को कुछ यहां
नाहिं कामहै १ इसको नहीं जो गावते बिलकुल नमक
हरामहै २ निशिदिन जपैं जे नाम को तिनको हुआ ब-
रदान है ३ जो कुछ चहैं सो वे करैं कुछ कम नहीं सा-
मानहै ४ रहते हैं पास दासोंके हृदयमें औ बिसराम है ५
बैजू कहैं सुनु मन अरे क्यों भूलमें भूलानहै यकदमइसे
मत भूलना मेरे तो जीवन प्रानहै ६ (रागगज़ल १६७)
सियाबर के हुकुमसे हम यहांको आये हैं १ कहा था जा-
यके जपना हमारे नामको निशिदिन। खता हमसे हुई
अब खूब धोखा खाये हैं २ कहैं बैजू दोऊ करजोरिकै सु-
निये सियाबर जी। दरश अब दीजिये जलदी तुम्हीं से
लौलगाये हैं ३ (रागगज़ल १६८) कभी हमसे नहीं
सिया राम ने बुराई की। दिन पर दिन अक्ल ज्यादः व
दानाई दी १ जन्म उत्तम दिया ब्राह्मण को खानाहररो-
ज तोफा घी और मिठाई दी २ रहै है शौक हमको हरव-
खत हरचीज़के। कभी देनेके खर्चे के नहीं हमसे खोटाई

की ३ खतामेरीहै मैं भूला रहा उसक़ौलको गुलाम अप-
ना समझके फिर उन्हों ने भलाई की ४ कहैं बैजू दोउ
करजोरिकै तारीफ मैं क्या क्या करों। दीन पर दाया
हमेशः चाहिये रघुराई की ५ (ग़ज़ल १९९) जिसदिन
तुम्हारे कूचेमें सिया राम आना होगया। सूरत तुम्हारी
देखिकै अब दिल दिवानाहोगया १ लाखों पदारथ मिल
गये कोटिन खज़ानाहोगया २ सबरोग तनका खोगया
अब साफजामाहोगया ३ बैजूकहैंकरजोरिकै अबहालजा
नाहोगया ४ जोजो जपा इसनामको बैकुंठधामाहोगया ५
(ग़ज़लअद्धा २००) सूरत तुम्हारी सावँले भूलै नहीं
जरा। हीरा जड़ाओ कालँगी शिरपर मुकुट धरा १ बायें
बिराजै जानकी दहिनेभाई तेरा २ क्या आँखियां पियारीहैं
डोरा सुरख़ पड़ा ३ पुखराज पन्ना लालका गजरा गरे
पड़ा ४ बैजू कहैं करजोरि कै गुलाम हों तेरा। दरशन
दया करि दीजिये मुझे आसरा बड़ा ५ (राग ग़ज़ल
२०१) मेरे दवा यकनामहै और कुछ जरानहिं चाहिये।
मरज़ी जो हो रघुनाथ की जो कुछ कहैं सो खाइये १
निशि दिन जपो इस नामको बे ग़म बे परवाहिये २
माया महा जड़ पापको तनसे मेरे हटाइये ३ बैजू कहैं
करजोरि कै कुछ देखिना ललचाइये। ऐसो पदारथ पाय
कै अब दिल नहीं भरमाइये ४ (राग ग़ज़लअद्धा २०२)
सूरत सलोनी रामकी अब दिल मेरा लगा। मालूम मुझ
को है नहीं क्योंकरके जाइ पगा १ सांची तुम्हारी बात
पै रहताहूं मैं फ़िदा २ कुछ ख्यालमें आनेलगा नसीबा
मेरा जगा ३ बैजू कहैं करजोरि कै प्यारी लगी वजह

कभी नहीं दासोंके संग तुमने की दगा ४ (ग़ज़ल २०३) सियावर ने हमारे दिलको मोहि डाला है। लटकते बार घुँघुवारे बदन सांचे का ढाला है १ बिराजैं जानकी बायें दहिने लषण जी लाला है २ गलेमें हार हीरा का चमकता कान बाला है ३ कहैं बैजू दोउ करजोरि कै अवधेश जीको लाला है ४ (राग ग़ज़ल २०४) भूले नहीं चितसे अजब बोली तिहारीहै। लटकते बाल औ काले कता सांचे की ढारी है १ बिराजै जानकी प्यारी वजह जगसे निराली है २ रामकी आँखियां प्यारी मनो काली कटारीहै ३ कहैं बैजू सुनो प्यारे ऐ तुम पर प्राण वारी है ४ (रागग़ज़ल २०५) दिल तो मेरा अब जायके सियराममें मिला। रहता नहीं है खौफ मुझको कोई करै गिला १ सूरत पियारी देखिकै रहताहै मन खिला २ सब रोगतनका खोगया अब होगया जिला ३ बैजू कहैं कर जोरिकै नसीबमेरा खुला ४ (रागग़ज़ल २०६) मेरा दोस्ती में दिलफँसाके अब भुलाने क्यों लगे। सूरत तुम्हारी देखिकै अब दिल लोभाने औ लगे १ सारी मुहब्बत आपकी है ग़मको खाने हम लगे २ जानता हूं मैं जहां तक खोजता निशिदिन तुझे ३ मालूम मुझको खूबहै करने लगे हमसों दगे ४ बायें बिराजें जानकी दाहिनभाई सगे। बैजू कहैं करजोरिकै मुझे राखिये अपने लगे ५ (रागग़ज़ल अद्धा २०७) करना न तुमको चाहिये यारोंके संग दगा। क्या बातियां पियारी हैं मुखरे में दिल लगा १ दोउ आंखियां तिहारी में सुरमा अजब लगा २ रहती है चाह निशिदिन देखौं ज़रा

वजा ३ दरशन दया करिदीजिये रहता है दिल पगा ४ बैजू कहैं करजोरिकै चरणोंमें है मजा सिय राम से ज्यादा नहीं कोई मेरा सगा ५ (राग ग़ज़ल २०८) अदाअब देखिये आली सियावरकी पियारी है। नहीं ज्यादा कोई इनसे ज़रा शौक़ीन भारीहै १ गलेमें हार मणियोंको वज़ा सांचेकी ढालीहै२रहते हैं हमेशः संग अपने दासोंके यही एकबात तोफा छांटिकै उम्दा निकाली है३ कहैं बैजू दोऊ करजोरिकै यही इक़बाल भारी है४ (राग ग़ज़ल २०९) लगी जिसकी मोहब्बतरामसे निशिदिन ओजारीहै। रहा नहिं खौफ उनको फिर ज़रा इकबाल भारी है १ बिराजैं जानकी बायें लषण दहिनेखलारीहै २ यहसूरतसलोनी रामकी हरदम पियारीहै ३ कहैंबैजू दोऊकरजोरिकै यही बस इन्तिजारी है ४ (राग ग़ज़ल २१०) करना न तुमको चाहिये हमसे दगा नितरोज। पाहिले कहा था नामको निशिदिन जपो करियोग १ ख्वाहिश नहीं रहती है तुमको करनेको संयोग २ फ़ायदा नहीं इनबातों में झूठे जगत्के लोग ३ बैजूकहैं सुनमन अरे घटमें तेरे है खोज। निशिदिन जपो सियरामको छोड़ो जगतका रोग ४ (राग अद्धा २११) महराज रामचन्द्र ज़रातो दया- करो। लोभ मोह क्रोध पाप तनके मेरोहरो। करजोरिकै यहअर्जहै कानोंसे तोसुनो। जोकुछ खता हमसे हुई वह ख्याल नाकरो १ गुलामहौं दुवारको मैं आसरे तेरो आन और रावरो तुमसे नहींबड़ो २ माथे में तिलक केसरका सोहता भलो सरयूनदी के तीर छैल बांकुरो खड़ो ३ बैजूकहैं करजोरिकै यहकामहै मेरो दरशन मुझे अब दी-

जिये चरणनमें हौंपड़ो ४ (राग अद्धा २१२) मनमोहि लियो रावरो सरयू निकट खड़ो। देखिकै बांकी अदा धीरजात नाधरो। ऐसा स्वरूप सुन्दर मनमोहिगा मेरो १ क्रीट मुकुट पीतबसन सोहता भलो। फल फूलमें तरु पातमें रगरग में तूभरो २ बैजूकहैं करजोरिकै मुझे आसरा तेरो दरशन दयाकरि दीजिये गुलामहौं तेरो ३ (राग चंचरीक २१३) सीतापति रामचन्द्र अति पियार लागैं। माथेपर क्रीट मुकुट भूषण छबिछाजैं। एक बार नाम लिये कोटिपाप भागैं १ दहिनेपर लषण लाल बायें भारत दराज दशरथ महराजके ई चारिउ सुतलागैं २ बैजूकहैं बारबार सुनिये मेरी पुकार तुमसे प्रभुको दयालतासे कुछ मांगैं ३ (राग चंचरीक २१४) अवध पुरी अति बिशाल रामसिया राजैं। भौंहैं कमान अरुण नैन अति पियार लागैं। बायेंकर जनकलली सुन्दर छबि छाजैं १ नखशिख शोभा अनूप दोनों अद्भुत स्वरूप दशरथ महाराज के पतोहू पूतलागैं २ गावत गुण गणगणेश पावत नहिंपार शेश ध्यावत सुरनर मुनेश प्रेम प्रीति पागैं ३ बैजूकहैं बारबार सुनिये कृपा दयाल रोग दोष दूरिकरौ चरणन चितलागैं ४ (रागअद्धा २१५) सरयू नदी के तीर छैल बांकुड़ो खड़ो। पानी को कर बहाना साखि देखियेचलो। अजब वजा निराली सब भांति से बड़ो १ कर लीन्हे धनुष बाण है शिरपर मुकुट धरो। कुण्डल झलकते कानो में गजरा गले पड़ो २ बैजू कहैं करजोरि मैं गुलामहौं तेरो दाया करिये कृपाल चरणन में हौं पड़ो ३ (रागचञ्चरीक २१६) एक

बार दरश देहु रामजी पियारे। बायें कर जनकललौ दहिने लषण धारे। पापदोष दूरिहोत देखेसे तिहारे १ गुलामहौं द्वारको मैं आसरे तिहारे। तुम सिवाय कौन हितू और है हमारे २ वेदनमें याही लिखा कहतहैं पुकारें। आये शरण त्यागै नहीं कौल ई तिहारे ३ बैजू कहैं वारबार जाउँ काके द्वारे। अबतो चित लागि गया चरणमें तिहारे ४ (राग अद्धा २१७) आकर हमारे कूचे छिपाकर चले गये। भलाहूं या बुराहूं मैं आसरे तेरे। हाथेमें धनुष बाण है शिरपर मुकुट धरे १ जितने हैं लोग दुनियाँ में तुमसे नहीं बड़े। सूरत तुम्हारी देखिकै मोहे व मनमेरे २ क्या आँखियाँ पियारी डोरा सुरख पड़े। बायें विराजैं जानकी दहिने लषण तेरे ३ सरयू नदी के तीर बने धाम हैं खड़े। बैजू कहैं करजोरिकै गुलामहौं तेरे। सुनि लीजिये जड़ासे कान हाल ओ मेरे ४ (राग अद्धा २१८) सरयू नदीके तीरबीर झूमते खड़े। राम लषण भारत शत्रुघ्नहूं हैं रे। कोई गोरे कोई सांवरे ये प्राणहैं मेरे १ हीरा व जड़ेकालँगी गजरे गले पड़े। दशरथ महराज के चारोंये पूतरे २ सुनिकै हवाल प्यारी के धीरजात नाधरे। लैकै सहेली साथचली जानकीवरे ३ पहिरे पोशाक बाकी जेवर नयेखरे। चितवन अजब तरहकी नैनोंमें रंगभरे ४ बैजूकहैं करजोरिकै मैं आसरे तेरे। दरशन मुझे अब दीजिये ये कामहैं बड़े ५ (रागठुमरी २१९) येजी दशरथसुत मन बशकीना रे। भौंहैं कमान नैन कमलन सम तन सुन्दर प्रवीनारे १ क्रीटमुकुट कर धनुष विराजै पीतवसन रंगभीनो रे २

बैजू कहैं दोऊ करजोरे राखिलाज मेरी लीनोरे ३ (राग ठुमरी २२०) आजु छबि देखो अधिक भलीरी। रतन जड़ित सिंहासन बैठे दशरथ सुत औ जनक ललीरी १ ऋषिमुनि इनको ध्यान करतहैं बिसरत नहिं छिनएकघरीरी २ बैजूकहैं दोऊकरजोरे ये दोनों नहिंतन कछुलीरी ३ (राग मारफ़त २२१) रामकहुमन बावरे नाहिंफिरपीछे पछितायगा। दोनोंपन खोया मुफ़त में तीसरा अब आयगा। तिसपर नहीं तू शोचता आखीर में जाके खीयगा १ चौरासी भरमत फिरैगा हरएक घटमें जायगा। मानिलेमेरा कहा सबकाम भी बनिजायगा २ रामको गाता नहीं अज्ञान तुझको आयगा। क्योंनहीं अब शोचता फिर साथक्या लैजायगा ३ बैजू कहैं करजोरिकै तुझको कोई भड़कायगा। ऐसापदारथ छोड़िकै फिर कौनसा फल खायगा ४ (रागमारफ़त २२२) मुफ़्त में तेराजलम आखिर अकारथजायगा। अव्वलो में येकहाथा मैं जपोंगा नामको। हियां आयकै सब भूलिगा कर मींजिकै पछितायगा १ हरदम इसे शिवध्यावते सुखपावते कैलासमें ऐसा पदारथ छोड़िकै तू कौनसा रस खायगा २ अभी तुझे समझावता अब वक्तइसका आयगा। निशिदिन जपो इसनामको सब पापभी उड़िजायगा ३ बैजू कहैं करजोरिकै मेराबुढ़ापा आयगा। ऐसाअमीरस छोड़िकै लाचारहो क्याखायगा। ४ (रागमारफ़त २२३) रामकहु मन रामकहु सिया रामके गुणगावरे। तीरथ बरत क्याचीज़ हैं दुनिया का यहनत दिखावरे। दाया धरम हिरदे धरहु गुरु चरणों

में चितलावरे १ सन्तोंकी खिदमत करो राखो सहज स्वभावरे। संतोंमें हरदम बसै दुबिधा बैरन बिसरावरे२ ऐसापदारथ नामहै विश्वास सांची लावरे। इससे अधिक नहीं आनफल घड़ी पल क्षण ना बिसरावरे ३ बैजूकहैं करजोरिकै मानुष्य का तन पायरे। निशिदिन जपो इसनामको लाखों पदारथ खाव रे ४ (राग अद्धा २२४) बिना राम नाम जपे मुक्तिकैसे पैहोरे। दारासुत बन्धु भाये द्रव्य तोरि खैहैरे। अन्त समय कष्टपरे कोऊ न बचैहैरे १ साराजन्म खोइ दिहे पीछे पछितैहै रे। मूरख मन मानकही यही काम ऐहै रे २ मनमा दृढ़ ज्ञान करो संतनको ध्यानधरो मिलहैं जब संतचरण तबैपाप जैहैरे ३ बैजूकहैं बारबार देखोकरिमन विचारि बिनाएकराम नाम भक्ति कैसे पैहैरे ४ (राग अद्धा २२५) बिनादान पुण्यकिहे साथ काहजैहैरे। जोरिजोरि माया धरो औरकोऊ खैहैरे १ दिया लिया संगचली वहीफेरिपैहैरे। अन्तसमय कालआई तोका बतलैहैरे २ बिनासाध संग किहे ज्ञान कहां पैहैरे। बैजू कहैं बारबार सुनिये यारो पुकारि दारासुत द्वारेठाढ़ि कोऊ ना बचैहैरे ३ (रागप्रभाती २२६) लाज मेरी राखिये महाराज दशरथसुत राजकुमार। बाम अंग सोहैं सियाप्यारी दहिने लषण शिरताज १ जन्म दियो उत्तम ब्राह्मणघर खाना खर्चा अधिकार २ ऋषि मुनि तुमको ध्यान करतहैं सबके प्राणअधार ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे यह मांगन दीजे आज ४ (रागसोरठ २२७) टरो नहिं नैनन से महराज। दशरथसुत श्रीजनकनन्दनी हो

सबपर शिरताज १ घारिपल क्षण मेरे चित्तसे न भूलो करुणा कीजे आज २ जबसे प्रीति किहों प्रभु तुम से नीक न लागै कोई काज ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे बांह गहेकी लाज ४ (रागसोरठ २२८) देखि छबि छकित भयो जियआज । बाम अंग सोहैं सियप्यारी दहिने लषण महराज १ ऋषि मुनि तुम्हरो ध्यानधरत हैं त्यागि शरम कुललाज २ भौंहैं कमान नैन कमलने सम क्रीटमुकुट शिरताज ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे शरणागत महराज ४ (राग सोरठ २२९) अचल यह रहै तुम्हारो राज । लषण लाल भारत शत्रुहन रामसिया शिरताज १ गुरु वशिष्ठ आशीश देत हैं कै प्रसन्न चित आज २ ऋषि मुनि नित उठि करत प्रशंसा करिहो जन के काज ३ वैदेही शरण के रोगपापहरौ तेरो नाम गरीबनिवाज ४ (रागचंचरीक २३०) दशरथसुत अरज करौं सुनो हाल मेरे । हौंतो पापी पतंग शरण आयेतेरे । अवगुण सब माफकरौ मांगत करजोरे

१ एकनसे ... एक अधिक पापी बहुतेरे । पल में प्रभुता- ... रे २ हिरण्याक्ष हरणाकुश मुष्टि- रिदियो अवगुण नाहि ... नासील कंस बधिक मारे ३ क चंडूरएरे । अकाबका ... येही कौशलकिशोर मैं बैजूकहैं बारबार दोनों करजोर ... करुणा करिये कृ- अधीनतेरे ४ (रागचंचरीक २३ ... देहौ अवगुण रहे पाल हरोपापमेरे । जब से प्रभु जन्म ... मेरे १ जपतप घेरे । जौन कौल तुम से किहौं पूरण ... से नहिं दान नहिं करण जानो ज्ञान बुद्धि थोरे । ... सुन्यों हाल दिहौं विप्रन को येरे २ वेदन में है प्रभ...

तेरे। आये शरण त्यागहुं नहिं पूर कौलहैरे ३ बैजूकहैं बारबार दोनों करजोरे। यही दशरथ कुमार मैं अधीन तेरे ४ (रागअद्धा २३२) मेरेपरिवार सियारघुनन्दन। माता पिता त्यागासबमुझको आपु पूरिकारिभजिहौं नि-रंजन १ तुमसेहितू कौनजगमेरो देखिहौंनैनखुशीसेअन-न्दन २ सदादासपर दाया राखत दुष्टनके कोटिन दल गंजन ३ हेमन मूढ़ जपो निशिवासर यहै हमारे सकल दुख भंजन ४ बैदेही शरण कहैं हरिके भरोसे नित उठि खात सजीवन कन्दन ५ (रागमलार २३३) राम बिरहमेंरहौ मनमेरे। बारबारमैं तोहिं समझावों इनसे हेत करु चेतसबेरे १ इनके औ इनके दासन को सदा रह्यों चरणन के चेरे २ जबतक लोभ मोह नाहिं त्याग-हि तबतक अन्धरही तोहिं घेरे ३ राम कहत प्रहलाद उबरिगये शबरी किये सुरलोक बसेरे ४ ऐसानाम अमीको सागर भरि भरि उर पियत नाहिं एरे ५ बैजू कहैं दोऊ करजोरे सदा गुलाम सियापति केरे ६ (रागमलार २३४) उठि बहुजोर घटा घन कारे। जीवन मरण हानि यश अपयश है प्रभु हाथ तिहारे १ गरजिगरजि और रिम झिम बरसैं सबजगके रखवारे २ दशरथसुत श्रीजनकनन्दनी दूनों मेरे प्राण पियारे ३ बैजू कहहिं दोऊ करजोरे काटो पाप हमारे ४ (रागम-लार २३५) घन गरजिगरजि अब करत शोर दामिनि दमकै जिय डरपै मोर। पपिहा पिउ पिउ करैं कुहकैं मोर कोयल देमारी करत जोर १ पिउ छायरहे परदेश भोर नित उठि मैं चितऊं वाकी ओर २ बैजू कहैं

करजोर जोर सीतापति चितवो मेरी ओर ३ (रागमलार २३६) आजु घन बूंदन बरसत जोर सुनि सुनि लरजत हियमोर। बोलत कोयल पिक बक चहुँओरन मोर करत बहुशोर १ सरयू तीर प्रमोद बनमें बिहरत नवल किशोर प्रिय बैदेही की ओर २ बैदेही शरण कहैं करजोरे मैं गुलास प्रभु तोर दूरकीजै सब संकट मोर ३ (राग मलार २३७) आवो बदरा रिम झिम बरसो कहा मानलो मेरा अबतो। सानानाना पवनचलत पुरवाई नवो मेघ बरसो झरलाई राखिलेउ धर्म अब सब जगको १ तीनिरोज निशिदिन तुम बरसौ घरी एकपल छिन नहिं निकसो नद्दी नार बहैं एक बरसो २ श्रीपति नाथ अनाथ के स्वामी कृपा कीजिये बरसै पानी लेउ प्रण बैजू जनको ३ (रागमलार २३८) काहे बदरिया आई। देखि देखि मोहिं अति डरलागै का करौं मेरी माईरे १ झिमिकि झिमिकि औ रिमि झिमि बरसै पवन चलत पुरवाईरे २ माघ मास बुधदिन अनुराधा बैजू मलार बनाईरे ३ (रागमलार २३९) उठि घन घोरघटा घन गरजैं। अतिमोर शोर करि जोर जोर सुनि सुनि कामिनि हिय लरजैं १ सननन पवनचलत पुरवाई नान्हीं नान्हीं बुंदियन सों झरिलाई चहुँदिशि कौंधा तरजैं २ बैजूये कहैं करजोरि जोरिशिव शम्भुनाथहौं शरण तोरि सुनिये गरीब की अरजैं ३ (रागमलार २४०) अब प्रभु बन्द कीजिये पानी दुनियाँ सब अकुलानी। काटि किसान धान घरलावै जोतै बोवैकाम चलावे जारी रहै किसानी १ तेजा परा अन्न नहिं बेचिन भनसारिन ब-

दरेतन देखिन भई नहीं मनमानी २ बैजूयेकहैं करजोरि जोरि गौरी शंकरपति राखु मोर तुम समानको दानी ३ (रागमलार २४१) आजु उत्पात उठे बहुजोर घन तड़फत है बहु जोर। जेठबदी छठि औ शनिबार को पवन चलत झकझोर १ इरवा बिरवा उचरिपुचरि गे प्रश जगत में शोर २ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुनिये अवधकिशोर ३ (रागमलार २४२) काहेको आयो बदरा कारे लउटिजाव घर अपने पियारे। चाररोज बरसयो जलधारे नदी नारेबहे औ पनारे १ अबहीं धान निपट हैं बारे उतरत सावन आयो हमारे २ बनी मलार खौफ के मारे घरकुरिया टपकै जल धारे ३ बैजू कहैं माथपग धारे दशरथ सुत आधीन तुम्हारे लाजशरम के हो रखवारे ४ (रागमलार २४३) काहे बिजुलिया चमकैरे। अतिमोर शोर करिजोर जोर सुनि कामिनि को जिय डरपैरे १ ऋषि मुनि नित उठिकरत प्रशंसा बात कियो प्रभु मनकेरे २ (रागझूलाकीलावनी २४४) सरिस ऋतु सावन की आई युगलछवि झूलममें छाई। बनै झूला सुन्दर अनमोल सिया संग झूलत राज किशोर झिमिकि घन बुन्दनझरिलाई १ पहिरि पीताम्बर भूषण भीर सिया संग बिहरत श्रीरघुबीर परम हित सन्तन सुखदाई २ कहैं बैजू दोऊ करजोर युगल छबि देखि जिय छकित हिम मोर वरणि नहिं सकौं मैं प्रभुताई ३ (रागझूला २४५) जनकलली दशरथ सुत झूलैं हरखि निरखि सरयूजी कल्लोलें। रेशम डोरगुही मुतियनसे रतन जड़ित नौरंग हिंडोले १ रंग भरी सुन्दर दोउ जोड़े एक सांव-

लि-यक गोरी अमोलैं २ भौंहैं कमान नैन कमलन सम तिरछी तकनि औ सुघर कपोलैं ३ बैजू कहैं कौन-गुण बरणों शेष शारदा भईं अनबोलैं ४ (रागझूला २४६) झूलत लली नौरंग हिंडोलैं अनुराग भरी मुख दोनहिं बोलैं। दशरथ सुत दहिनी दिशि राजित बाम अंग सखियां अनमोलैं १ ब्रह्माबिष्णु महेश देखि छबि शेष शारदाभईं अनबोलैं २ ऋषि मुनि देखि हरषि हिय हुलसैं सरयू रहसि मललेत हिलोलैं ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मेरे नैननसे ये कबहुं न डोलैं ४ (राग अद्धाझूला का २४७) झूलैं सिय प्यारी झुलावैंराम रसिया। रंग रंग के सुघर हिंडोला झूंक चलैं झग-झोर बहु भतिया १ सुरनर मुनि सबके मनमोहैं देखि स्वरूप छकित भईं अँखिया २ घट घट में सबकेई व्यापित सरयू किनारे अवध के बसिया ३ बैजूदास कहैं दोऊ करजोरे हृदयमें हमारे बसौ दिन रतिया ४ (राग झूला २४८) हिंडोला झूलत रघुराई गरजिघन बूंदन झरिलाई॥ सिया सुन्दरि संग सुखदाई दहिनेकर लषण की छबिछाई १ नान्हें नान्हें बुन्द पवन पुरवाई घन गरजत हैं माई २ बोलत कोयल पिक बक चहुँ ओरे दादुर धुन मन भाई ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे हम दोनों की बलिजाई ४ (राग झूला २४९) गरजि गरजि घन बरसतकारे नान्हे नान्हे बुन्दन परत फोहारे। जनकलली दशरथ सुत प्यारे झूलैं हिंडोल बने जग न्यारे १ भूषण बसन बिचित्र सँवारे सिया सहित श्री राजदुलारे २ गावत राग मल्लार उचारे सुघर तान मोहे

जगसारे ३ बैजू कहैं ठाढ़ि प्रभु द्वारे तुमहीं जीवन प्राण हमारे ४ (राग झूलाअद्धा २५०) झूला झूलैं सिया रघुनन्दन प्रिया रघुनन्दन। रंग रंग के बने हैं हिंडोला हरएक मन्दिर गलीगली कुञ्जन १ क्रीट मुकुट कर धनुष बिराजै दास हितकारी दुष्ट दल गञ्जन २ इनसे हितू कौन जग मेरो दोनों स्वरूप आनन्द के कन्दन ३ बैजू कहैं दोऊ करजोरे ई हैं हमारे सकल दुख भञ्जन ४ (राग झूला २५१) हिंडोला झूलत श्रीरघुबीर। निकट सरयू तट सुन्दर तीर॥ पहिरि प्यारी पट भूषण चीर जड़ाऊ जेवर अति गम्भीर १ देखि छबि धरत नहीं मन धीर। दूरि सब भये रोग तन पीर २ करौं मैं क्या कैसी तदबीर। रैनि दिन रहौं जो इनके तीर ३ कहैं बैजू मनके दिलगीर। पुलकि नैननसे बरषत नीर ४ (राग झूला २५२) झूला झूलैं अवधपुर राम रसिया। लषणलाल दहिनी दिशि राजत बायें सिय प्यारी संग लीन्हे सखिया १ ऋषि मुनि देखिके छबि सब मोहे डारि दियो अब प्रेम फँसिया २ क्रीट मुकुट पीताम्बर सोहैं करमें धनुष रतनारी अँखिया ३ बैजू कहैं दोऊकर जोरे निशि दिन निहारो नित तोर बटिया ४ (राग अद्धा झूलेका २५३) झूला झूलैं अवधपुर राम सिया। चौदह भुवन चराचर जल थल घटघटमें सबके बसिया १ भौहैं कमान नैन कमलन सम बाँकी चितवनि रतनारी अँखिया २ लषणलाल दहिनी दिशि राजत बायें कर प्यारी श्री प्राणप्रिया ३ बैजू कहैं दोऊ करजोरे सुरति दिखायके मोहि लिया ४ (राग झूला २५४) झूला

झूलैं सिया रघुबीर पिया। सरयू तीर प्रमोद वन में स-
खियां सहेली सब साथ लिया १ अंग अंग की छबि
बरणि सकौं नहिं हरषि निरखि मेरा हुलसेहिया २ भौंहैं
कमान नैन कमलन सम तिरछी तकनि कुछ जादू से
किया ३ बैजू कहैं दोऊ करजोरे झलक दिखाय मन
मोहि लिया ४ (राग झूला २५५) आजु घन शोर
करत बहु जोर। झूला झूलत राजकिशोर॥ रेशम डोरि
गुही मोतियन से झूकचलत झकझोर १ रतन जड़ित
कंचन के खम्भा यक सांवल यक गोर २ प्यारी झूलैं
पीव झुलावैं नैन भये यक ठौर ३ वैदेही शरण कहैंकर
जोरे मैं गुलाम प्रभु तोर ४ (राग बसंत २५६) खेलत
बसंत रघुबंशबीर। लिहे अनुज सखा सरयू के तीर॥
बाजत मृदंग डफ औ मंजीर। कुमकुम भरिमारत मुख
अबीर १ मन धरत नहीं काहू को धीर। सब काम छोड़ि
चलो हरिके तीर २ इत राम संग केसर को रंग उत
सिय समाज छिरकत सुगन्ध सब लाल भयो सरयू को
नीर ३ बैजू ये कहैं छबि अति गँभीर मन लागिरह्यो
मेरो प्रभु के तीर। सब दूरिकरैंगे रोग पीर ४ (राग
बसंत २५७) खेलत बसंत दशरथ को लाल। इत
राम संग सुन्दर समाज बाजत मृदंग डफ अजब ताल
झोरिन में अबिरा औ गुलाल १ उत सिय समाज युव-
तिन की भीर पहिरे पट भूषण सुघर चीर। गावत शुभ-
बानी देत ताल २ राम लषण औ भरत बीर शत्रुघ्न
सखा लिये अति गँभीर झोरिन में अबिरा औ गुला-
ल ३ बैजूये कहैं करजोरि आज ऐसी छबि की दोऊ सम

समाज करैं केलि गले बिच बाँह डाल ४ (राग बसंत २५८) खेलत बसंत रघुबंशराज। लिये अनुज सखा सुन्दर समाज॥ बाजत मृदंग डफ औ रबाब। मिलि मन्द सुरनसों सगरी साज १ उड़ै अबिरा चहूं दिशि औ गुलाल केसर रंग सबपर है सिरताज २ बैजू ये कहैं करजोरि आज शरणागत तेरी हौं महराज ३ (राग बसंत २५९) खेलत बसंत श्री सीताराम। लिये अनुज सखा औ सगरो ग्राम॥ गौरी गणेश को पूजनकरिकै गुरु वशिष्ठको लै कै नाम १ ब्रह्मा विष्णु महेश शारदा सुर आये सब छोड़ि धाम २ अबिरा गुलाल चहूं दिशि छूटैं पिचकारिन में केसर तमाम ३ बैजू कहै छबि देखि छकित मन जन्म जन्म को हौं गुलाम ४ (राग बसन्त २६०) खेलत बसन्त कौशलकिशोर उड़ै अबिरा चहुँदिशि जोरजोर १ बाजत मृदंग मुरचंग और मचिरह्यो फाग सरयू के ओर २ राम लषण सँग सखा और मनमोहि लियेहै आजुमोर ३ बिमानचढ़े देवता सब देखैं बरषैं सुमन मचिरह्यो है शोर ४ बैजूकहैं करजोर २ ऐसो बसन्त नहिं देखा और ५ (रागबहार २६१) आई बसन्त ऋतु करि समान, बोलै कोयल निगोड़ी परत कान॥ बाजत मृदंग डफ औ कृतान गावैं युवती सब सुघर तान १ अम्बा बौरे टेसूफूले सरसों रंग पीलो अति सुहान २ देवता सब देखैं चढ़ि विमान श्री अवध पुरी में मन लुभान ३ सुरनर मुनि जाको करत ध्यान खेलत फगुआ सो नरसमान ४ बैजू ये कहैं मनक्यों भुलान सीतापति को जपु कहे ना मान ५

(राग होरी २६२) सियापति राम रखुपति मोरी । बहुत बीति गई अब रही थोरी ॥ बिनय करतहों दोऊ करजोरिके सुनिये अरज यह मोरी । मैं अधीन अवधेश सुतनके तुम से कौनहै चोरी । बांह गहिये बरजोरी १ दीन दयाल दान मोहिं दीजै प्रीति लागि रहि मेरी । घरि पल छिन चितसे नहिं बिसरै सीतारामकी जोडी । आस लगी प्रभु तोरी २ बैजू कहैं दोऊ करजोरिके आयों शरण हरितोरी । माफ कसूर करो करुणानि- धि देव भक्ति पदकेरी । आस छूटै सब मोरी ३ (राग बहार २६३) आई बसंत ऋतुकी बहार । तेरो नौरंग यौवन करि सिंगार । बोलैं कोयल चकोर करैं जोरजोर शोर । पापी पपिहा करि २ पुकार १ अबिरागुलाल कु- मकुमा केसर लैलै युवती करचलींथार २ सोरहों सिं- गार अभूषण पहिरे । लट लटकी घुंघवारे बार ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे दशरथ जीके देखो दुवार ४ (राग होली २६४) खेलत फाग सियापति ओरी अवध पुरी में लिये सबकोरी । सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रु- हन रंग छिरकैं चहुँओरी । कोई बचैनहिं बिन रंगडारे पकरिलेत बरजोरी परीपरबस में ओगोरी १ बिमान चढ़े देवता सब देखैं ऐसी सुनीनहिं होरी । शिव ब्रह्मा मनमें खड़े शोचैं शारदकी मति बौरी । देखि सकुची छबिकोरी २ तुलसिदास प्रभुके करजोरिकै बैजूकहैंयह होरी । विद्याज्ञान नहीं कछु मोरे मूढ़मन्द मति थोरी । शरण दशरथ सुत तोरी ३ (रागहोरी २६५) सिया पति राम अवधके बासी । काटिदेत यमपुर की फांसी ।

बार बार मैं अरज करतहौं दीजे भक्ति मोहिं आछी। जहँजहँ जन्म कीजिये मेरो होहुँ चरणको दासी। अरज सुनिये अविनासी १ मूढ़मन्द बुधि ज्ञानहीनहौं पर्‌यो मोहकी फांसी। निकसतहौं निकसन नहिं पाऔं ममता रैनि दिन गांसी। लगाय दियो प्रीतिकीलासी २ सुत-दारा परिवार आदिदै मतलब के सब साथी। बैजू कहैं कोई कामन ऐहै करो रामकी झांकी यही संगतिहै खा-सी ३ (राग होली २६६) सियापति रामकी भक्तिहै आछी। राखै नहीं मल लोभकी फांसी। नामपुरातम चहुँ युग जाहिर जानत हैं पुरपुर के वासी १ जोजो प्रीति कियोहै प्रभु से तिनकी काया भै निरमल खासी २ ख-म्भ फोरि प्रह्लाद उबार्‌यो हरनाकुशको उदर बिनासी ३ बैजूकहैं दोऊकरजोरे क्या मूरति अद्‌भुत अबिनासी ४ (राग होली २६७) मूढ़ मन राम नाम जपु लाग रहै नित ध्यान। ध्रुवकी बनी प्रह्लादकी बनिगै शवरी चढ़ि जात बिमान १ गणिका गिद्ध अजामिल तार्‌यो ई नाम को यही प्रमान २ निशिदिन कहत रहत शिवशङ्कर सांची बात मेरी मान ३ दशरथ सुत श्रीजनकनन्दिनी मुक्ति पदारथ खान ४ बैजू कहै दोऊ कर जोरे क्यों भू-ला अज्ञान ५ (राग होली २६८) अवध सुत जनक नन्दिनी हैं मेरे जीवन प्रान। घरि पल छिन मेरे चित से न बिसरै लाग रहत मेरे ध्यान १ ऋषि मुनिके तन मन धन येई ऐसो हितू नहिं आन २ ब्रह्मा बिष्णु महेश प्रशंसे करत सकल सुर गान ३ नारद शारद नित उठि ध्यावत सांची कहै वेद पुरान ४ बैजू कहैं दोऊ करजोरे

हृदय में बसो भगवान ५ (राग होली २६९) राम तोरी सूरत खूब भली। क्रीट मुकुट अरु धनुष बिराजैं बायें कर जनकलली १ घरि पल छिन मोरे चित से न बिसरे देखों नित तोरि गली २ दहिने लषणलाल अति राजत हैं वे प्रबलबली ३ नित उठि फागकरत सरयू तट फागुन में देखो अली ४ बैदेहि शरण कहैं करजोरे चितवन चित चोर चली ५ (राग होली २७०) मूढ़ मन मानु सीख यह तजु माया अभिमान। बार बार मैं तोहिं समुझाओं समुझत नाहीं तू हौ नदान १ सुत दारा परिवार में भूला खोवत कर्म्म पुरान २ हरिपद बिमुख कहूं सुख नाहीं भरमाकरु सकल जहान ३ बैजू कहैं दोऊ कर जोरे राम नाम सुनुकान ४ (राग होली २७१) नीक मोहिं लागै न कतहूं छोड़ि अवधपुर ग्राम। नित सरयू स्नान करन को पूजन को शालिग्राम १ अपने गुरुनकी खिदमत करिहौं ह्वै चरणनको गुलाम २ सब सन्तन के दरश परश करि जामें मिलैं मोहिं राम ३ दशरथ सुत श्री जनकनन्दनी बैजू के बसो उर धाम ४ (रागहोली २७२)फाग दशरथसुतखेलैं अली। लषणलाल भरत शत्रुहन लीन्हे संग जनकलली १ अबिरागुलाल कुमकुमाकेसर छाई चहुंओरगली २ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ निकसत ताल भली ३ सुनि मन मोर धीर नहिं धारत देखिहौं छबि जैहौं चली ४ बैजूकहैं दोऊ करजोरे रघुबंशिन की प्रीति फली ५ (रागहोली २७३)राम तुम हौ नहिं तनके छली। अपने दासको यों करि राखत ज्यों आंखिन में पुतली १ दाया धर्म्म दीनपर राखत

सर्वविधि बहुभांति भली २ लषणलाल दहिनी दिशि राजत बायें बिदेहलली ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे निरखतहौं तोरि गली ४ (राग होली २७४) अरे बाव रेमन क्यों फिरै भरमा। लगायदेव चित सीतापतिमा॥ क्षण माया में क्षण ममता में क्षण में फिरतहो तुम बन बनमा इन बातन में सुख नहीं पैहौ मिथ्या जन्म भयो यहि जगमा १ अबहीं चेतु हेतुकरु प्रभु से तुरतै बात तेरी बनत है पलमा २ फिरि पछितेहौ दोऊ कर मलि मलि प्रभु पद अम्बुज धरु तुइ घटमा ऐसो नाम पतित पावन जग जानतहैं सुर नर मुनि महिमा अमृत छोड़ि विषय रस चाखत अजर अमर चारिउ युगमा ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सत्य बात शुभबैना। मैं अधीन अवधेश सुतन के कृपा करो बसौ हिरदयमा ५ (राग होली २७५) कौनकहै सियराम की महिमा॥ अवध पुरी में प्रगट भये राघौ शुभनक्षत्र शुभघरी लगनमा १ राजादशरथ घर जन्म लियो है अद्भुत सुत करैं केलि अँगनमा २ गुरु बशिष्ठ कुल पूज्य बुलायके जाति कर्म्मकी भई बहुरचना ३ मणिन के थार भराय भवन से लैके चले मुनि खुश अतिमनमा ४ याचक लोग अयाचक ह्वैगये ऐसादान दियो नृप पुरमा ५ ऋषि मुनि सब आनन्द भये हैं बाजै बधाई अवध नगरमा ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे खुशी भये छबि देखिकै मनमा ७ जनकदुलारी संग केलिकरैंगे सदाबसौप्रभुमेरे मनमा ८ (राग होली २७६) प्रीति लगी तुम से मोरीराम। तबसे रहतहो बड़े मैं सुखमा। क्रीटमुकुट

कर धनुष बिराजै बासकरत हौ सबके घटमा। जलथल में सब में तुम व्यापित काहिको सकत नाम की महिमा १ घरीपल क्षण मोरे चितसे न बिसरै लागो रहै चितु तु-मरेचरणनमा ॥ लक्षण लाल दहिनी दिसि राजत बाम अंग सीताजगदम्बा २ राजा दशरथ घर जन्म लियोहै अवधपुरी की भई तब महिमा। ऋषि मुनिके सबकाज सँवारिहौ दुष्टन को मारिहौ जाय दलमा ३ बैदेहीशरण कहैं करजोरे सूरत देखाकरो दिनरैना। औरकाम मोहि कछु नहिं भावै माया मोहके फंस्यो डगरमा ४ (राग होली २७७) मन तुम नामजपो सियपतिके। छूटिजाय यमपुरको खटको। बारबार मैं तुइ समुझावों मानतनाहीं हटको। और काज कछु काम न ऐहै यह संसार झूठ सब टटको १ राम कहत प्रहलाद उबरिगे खम्भ फोरि हरणाकुश पटको। अजामील गज गणिका तरिगई श-बरी किरात जात सुरपुरको २ सुनुमनमूढ़ सिखावनमेरो हाल कहत तेरे मैं हितको। सुतदारा कोऊ काम न ऐहै माया मोह में क्यों है अटको ३ पाहिले करार किहौरहै हरिसे यहां आयकै जगत में भटको। ईबातें कछु पारन जैहैं बैजू गुलाम सदाइसघरको ४ (राग होली २७८) अरे मन मेरातू बडा है अनारी। बारबार मैं तुहिं स-मुझाओं सदारहत सूरति की भिखारी १ परदारा में र-हत रत निशि दिन लोकलाज कुलकी सब छांडी २ नारद मुनि पाराशर मोहे तिनकी कथा तुइ सुने सब सारी ३ अजहूं तौ चेत हो नहीं मन मूरख मुक्ति पदारथ नहीं परनारी ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे रघुनन्दन

मेरी लागो गोहारी ५ हमसे कछू न बना करुणा निधि अब आयों प्रभु शरण तिहारी ६ (राग होली २७९) चेतुकरौं मनमूढ़ गवांरा। खर्च नहीं कुछहोइ तुम्हारा॥ यक पन बीता दुइ पन बीते औगुण गुण कुछ नहीं बिचारा। लालच मोह लोभ में परिकै पिछिलेउ कर्म्म बिगारा॥ होइ केहि बिधि से गुज़ारा १ दाया धर्म्म कछू नहिं जाने बैठेउँ ठौर नकारा। बिन हरिभक्ति साधु बिन सेवा सब जग तोहिं अँधियारा॥ जाउँ केहि बिधि भवपारा २ बैदेही शरण कहैं करजोरे कहना मानु हमारा। सीता राम जपो निशि बासर छोड़ो कर्म्म बिकारा॥ नाम खांड़की धारा ३ (राग होली २८०) धृग जीवन जिन्हैं नाम न प्यारा। घेरे रहै तिनका अँधियारा॥दशरथसुत श्रीजनकनन्दिनी सब लोकनकेहैं उजियारा। तिन्है छोडि मद लोभमें भूला प्यारलगा तुमको परिवारा॥काम बिगरै न हमारा १ युगन युगन में हैं ई जाहिर जानत है सगरा संसारा। जे मतिमन्द हीन यह रससे पीवत नीर बिकारा॥ रोग घेरे तन सारा २ नाम प्रभाव सुधा को सागर सन्तन याही बिचारा। बैदेही शरण कहैं करजोरे हरिचरणन में गुँजारा॥ जन्म तब सुफल हमारा ३ (राग होली २८१) रहो हिरदै में सदा ओ हमारे। जनकनन्दिनी राम पियारे॥ लोभ मोह मोहिं निशिदिन घेरे औगुण करत नकारे। इनसे भजन करन नहिं पावत पति मोरी हाथ तुम्हारे॥ जाउँ मैं काके दुवारे १ दीनदयाल दान मोहिं दीजै मांगौं हाथ पसारे। घरी पल क्षण मोरे चितसे न भूलो दशरथ राज दुलारे॥तुम्हींपर

तन मन वारे २ शवरी के फल रुचि प्रभु खायो गुण औगुण न विचारे। ऐसी चूक भई का हमसे दरश नहिं पावा तिहारे॥ कहत बैजू हैं पुकारे ३ (राग होली २८२) मन मूढ़ कहा मेरो यतना मान। निशिदिन उठि जपिये सीताराम॥ माया मोह लोभ में भूला अन्त समय नहिं ऐहै काम १ सुन्दर देह पायकै भूला क्षणमा बन्दरहै क्षण मा धाम। बारम्बार मन तोहिं समुझाओं समुझत नामूरुख नदान॥ यहदुनिया कागजकी पुतलीदेखिकै भूले गोराचाम। बैदेही शरण कहैं करजोरे सुरपुरमें करिहो अराम ३ (राग होली २८३) मन मूरख ना तोहिं आयो ज्ञान। चोला देखो अबभा पुरान॥ लरिकाई लरिकन सँग खोयो। ज्वानभयो तब भा गुमान। लालच मोह हराम में भूला मिथ्याजन्म यतना सिरान २ तीरथ बर्त कछू नहिं कीन्हो ना करसे कछु दीन्हों दान ३ नाहरि भजे संत नहिं सेये धृग जीवन जग भयोहै आन ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे अब सीताराम को राखुध्यान ५ (रागहोली २८४) कीन्हों सखी हमसे झूठ बहाना। हाल तोर रहै मोरनजाना॥ सुरति दिखाय कै मन बशकीन्हों जिया मोरा अधिक लोभाना। झूठी २ बतियां बनाय कै हमसे दिलकरि दीन्हों दिवाना। काम नहिं कीन्हों सयाना १ चारि दिनाकीहै जिंदगानी तापर इतना गुमाना। औसर बीति जायगो तेरो रंग रूप सुरझाना॥ हालयह सबका है जाना २ प्रीति की रीति कठिन है सजनी बिरलै कोई पहिचाना। मूरख अनारी हाल क्या जानै वैतो भरे अभिमाना। यौवन दिन चारि जमाना३

बैदेही शरण कहैं करजोरे मनतू क्यों बौराना। सीता-रामध्यानधरु मन में रहु दिन रैनि गुलासा। अंतसुर पुर को जाना ४ (रागहोली २८५) दरदनाहिं आवै तुझे कठिन कठोर। तनक चितवत नाही मेरी ओर॥ झलक दिखायके मन बशकीन्हों हाल लिहे नहिंमोर १ घरीपल क्षण मेरे चितसे न बिसरे चितवनि यह चित चोर २ बहुत दिननसे आस लगाये देखतहौं तेरी ओर ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सीतापति मन मो-ह्योमोर ४ (राग होली २८६) नहक प्रीति हम तुमसे लगाई सुनुओ निठुर तुझे दरद न आई। बहुत दिनन से आस लगाये कीननहीं कछु तुमसे बुराई १ चारि दिना कीहै जिन्दगानी नेकी बदी याही सँगजाई २ यहमन वहमन दोनों एकहैं को तुमका चतुराई ३ सांची बात हमैं नितभावै झूठी बातमें निपट खोटाई ४ बैदे-ही शरण कहे करजोरे सदारीति आछी चलिआई५हम से काहखता भई ऐसी सीतापति मोहिं अति बिसराई६ (राग होली २८७) नयन लगे अवधेश कुँवर से। पलक एक बिसरे नहिं हिये से कोटि जन्म के पाप जरत हैं एक बार सिया राम कहे से १ घरी पल छिन मेरे चित से न भूलै सुख पायों मैं प्रीति किहे से २ नर तन पाय भजे नाहिं इनको धृग जीवन जग का है जिये से ३ बैजू कहैं मैं खुशीहूं इसी में रघुनन्दन की गुलामी किहे से ४ (राग होली २८८) हरिके हुक्म से नगर यह जांचे कोई मिले न मित्र यक सांचे। बालापन लरिकन सँग खोया ज्वान भये कामिनि मुख झांके। लाज शरम

सब कुलकी त्यागिके देखि लिया दुनिया के तमाशे ॥ जौन करार करिआयो हुआंसे कौन नहीं कुछ काम हुआंके। मिथ्या जन्म अभीतक खोया बनिके फिरे हम टेढ़े बांके २ तीरथ बर्त योग जप संयम काह होत धूनी के तापे। बिन दाया व धर्म्म बिन कीन्हे पावाको सुरपुरमें बासे३ बैजू कहैं दोऊ करजोरे कोई काम मोहिं लागे न आछे। सीताराम भजो निशिबासर मैं तो करिहौं इनहिन सेनात ४ (राग होली२८६) मैंतो राम रंगमें रहौं नित छाका। और काम यकदम का तमाशा ॥ जबसे जन्म दियो प्रभु मेरो खाना औ खर्चा दिहौ मोहिं आछा १ कोई शौक रही नहिं बाकी पहिरे को पायों मलमल खासा २ और काम में चलै चित नाहीं हरि दरशन को लगी मन आसा ३ बैजू कहैं दोऊ करजोरे सिया राम को सनेह है सांचा ४ (राग होली २९०) राम रंग रंगुरे और रंग फीके॥ सुत दारा परिवारमें भुलाई नहिं साथी तेरे मतलबके १ दशरथसुत श्रीजनकनंदिनी मैं तो बिकाहौं हाथ इन्हीं के २ चित हित से जो इनको ध्यावैं तिनके काम करत हैं नीके ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे हमतो गुलाम रहब सियपति के ४ (रागहोली २९१) डरपत है जियरोज हमारा। भूलि गयन सब कौल करारा॥ बालापन लरिकन सँग खोया गुण औगुण न बिचारा। ज्वान भये कामिनि में लोभे शरम लाज सब छांड़ा॥ काम यह कौन बिकारा १ तीरथ बर्त कछू नहिं कीन्हा योग जाग तप सारा। करसे दान कछू नहिं दीन्हा लोभ मोह अति बाढ़ा॥ जावँ कैसे भव

पारा २ बृद्धापन में पौरुष थाका जिय घबरान हमारा। बिन हरिभजन साधुबिन सेवा मिथ्या जन्म हमारा॥ करब केहि बिधि से गुजारा ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सुनु मन मूढ़ गँवारा। सीताराम जपो निशिबासर यह पद जगसे है न्यारा॥ कोऊ न कुछ करिहै तुम्हारा ४ (रागहोली २९२) लागरहै चित चरणमें प्यारे॥ माया मोह लोभ मोहिं घेरे ऐसी करो लगे आवैन हमारे १ तुम बिन पार कौन मोहिं करिहै भवसागर को पहट है गाढ़े २ जल थलमें सबमें तुम ब्यापित तुमहीं हो जग के रखवारे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे तुमहीं प्राण हमारे ४ (रागहोरी २९३) प्रीति लगायकै जिया लल चायो। पास हमारे कभी नहिं आयो॥ बहुत दिनन से आस लगीहै तुम अवसर काहे बिसरायो १ निशिदिन आस लगी मिलने की तुम छुट्टी कबहूँ नहिं पायो २ घरि पल छिन मेरी सूरत न भूल्यो फुरसत होय तबै तुम आयो ३ बैजू कहैं दोऊ करजोरे सियापति अपने पास बसायो ४ (रागहोली २९४) नेह लगे सियारामसे सांचे। थोरे दिनन से हाल यह जाँचे॥ भरमत फिरो मोह मायामें नित उठिकै घर २ हम झाँके॥ गुरु चरणनको ध्यान धस्यो मनमें सूझिपरे सुन्दर येई खासे १ सुर नर मुनि सब इनको ध्यावैं अद्भुत रूप सुघरई वाके॥ तिन्हैं छोंड़ि मति मन्द मूढ़ मन नित उठि रोज खाक क्यों फाँके २ जन्मदियो उत्तम ब्राह्मणको नरतन सुघर स्वरूपतेरे आछे॥ ऐसे प्रभुकी मैं करिहौं गुलामी हरि चरणनमें रहब नित छाके ३ बैदेही शरण कह-

हिं करजोरे हम इनहींके रंगमें रहब नित माते ॥ और नहीं कुछ काम करनको कौन करै जग झूठ नाते ४ (रागमलार २९५) अब हम प्रीति करब ना तुमसन। देखन को पैहो नहिं दरशन॥ हम जानी कुछ नेह बढ़ैहो झूठीबतियां बनायो बरसन १ जो कुछ कियो सो सब गमखावा कहेन नहीं कछु अपने मुखसन २ निशिदिन रामसिया गुणगैबे बैठ रहब नित अपने घर सन॥ बैजू कहैं दोउ करजोरे जहि से दिल रहिये नित परखन ३ (राग होली २९६) कौनी बिधि पियान खफाहो हम से। जौन करार करिआयोहुवांसे पूर नहींओ भयेयहि तनसे १ घरिपल छिन मेरे चितसे न बिसरै खटका लागरहत हियरसे २ हरिदासन की करौं नित खिदमत तबमेरे पाप दूरिहोहिं घटसे ३ बैजूकहैं ओखताभई हम से अबतो सियापति तुम्हरे भरोसे ४ (रागहोली २९७ प्रीति लगी मेरी तुमसे हियेसे। लालच मोह जराना राखौं मैंतो खुशी दरशन के किहेसे १ खुशीसे रहौ आ-रामकरौ नितजाने रह्यो मोहि अपने जियेसे २ और काम कुछ रुचिनाहिं मेरे मैंतो खुशी सियराम कहेसे ३ बैजूकहैं मैं तुम्हें नित देखौं कुछ कामनहीं जप योग कियेसे ४ (रागमलार २९८) अरज सुनो दशरथ राजदुलारे। दोउकरजोरे विनय करतहौं भागिजायँ घनकारे १ बाम अंग सोहैं सियप्यारी दहिने लषण उजियारे २ अब पानीको कामनहीं है बरसत मेह न-कारे ३ बैजू कहैं दोउकर जोरे मांगन देहु सकारे ४ (रागमलार २९९) जाउँ अब चरण कहां तजिप्यारे।

भला बुराहौं बाजत तेरा काटहु पापहमारे १ घरिपल छिन मेरे कलन परत है बेदेखे दरश तुम्हारे २ दशरथ सुत श्रीजनकनंदिनी तुमसे को अधिक हमारे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे रहिहौं नित आपके द्वारे ४ (राग मलार ३००) लगत मोहिं रामसिया अति प्यारे। सांवल रंग केसरिया जामा दोऊ के नैनरतनारे १ ऋषि मुनि तुमका ध्यान करतहैं हौ दशरथ के बारे २ बाम अंग सोहैं सियप्यारी दहिने लषण उजियारे ३ जलथल में सबमें ई व्यापित सब जगके रखवारे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे तनमन धन इनपरवारे ५ (रागलावनी ३०१) साधु विप्रको जो डहकाई वहु कल कहु कौनी विधि पाई। बेद पुराण यही सब गावैं सदारीति याही चलिआई १ विष्णुके लात दियो भृगु द्विजने पकरि चरण प्रभु अति सोहराई २ केवल निरमल संत जो जगमें मेटि देत ब्रह्मा की लिखाई ३ कोटिन गऊ दियो राजा नृग गिरगिट भयो भूलकी गाई ४ युगयुग खुशी रहैं वे मानुष जो साधु विप्र की राखैं बड़ाई ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे कृपासिन्धु सुनिये रघुराई ६ (राग-भैरवी ३०२) मोहिलियो आजसखी मनमोर। दशरथ सुत नवल किशोर। कीटमकुट कर धनुष विराजै पीताम्बर शिरमौर १ अँग २ की छबि कहँलग बरणौं तिरछी चितवन चितचोर २ मैंजलभरनगई सरयूतट देखिदियो मेरी ओर ३ बैदेहीशरण कहैंकरजोरे मैं गुलाम प्रभु तोर ४(रागरामकली ३०३) रामको राजदेन नृपठानेरे। गुरु बशिष्ठ कुल पूज्य बुलायो। कीन्हो काम सयानेरे

१ शुभ नक्षत्र शुभघरी बिचास्यो सब मंत्रिन ने यह जानोरे २ मंगलचारहोन जब लागे केकयी के मन नाहिं मानोरे ३ मांगन आज मांगि मैं लेहों राज भरत उर आनोरे ४ वैदेही शरण कहैं करजोरे करताकी गतिको ऊ नाहिं जानोरे ५ (रागरामकली ३०४) दशरथ केकयी से कुछ हारेरे जब जी चही मांगि तबलेहों लगिहै काज हमारे १ भरत को सब राज्यदीजिये जो हमसे कियो करारेरे २, राजासुनि कठोर यह बानी मांग्यो प्राण हमारे रे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे बिधिका लिखाटरत नहिं टारेरे ४ (रागआसावरी ३०५) ऐसो बचन कुटिल तू कहेरी। मेरो कंतभयो तेरेबश जानि बूझिकै दंड दयेरी १ राम लषण बन वास पठायेई दुखना अब जात सहेरी २ हेविधितेरो काहनशायों जिनयह बैरिनि सवति दयेरी ३ राम चलत लक्ष्मण जब चलिभे सीता चलत मेरे अंग दहेरी ४ बैदेही शरण कहें करजोरे चित्रकूट में बास लयेरी ५ (रागआसावरी ३०६) अब बन चलिगये सियरघुराईरे। दशरथ परे धरणि में तलफैं राम राम रटिलाइरे १ मातु सुमित्रा औ कौशिल्या अँसुवन की झरिलाईरे २ भरत आयदेखि गृह सूनो बैरिनिमातु भई दुखदायीरे ३ पिता कर्म कीन्हो बहु बिधिसे राम चरण चित लाईरे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे बिलखतहैं सबलोग लुगाईरे ५ (रागआसावरी ३०७) चित्रकूट रमणीक भयेरी । राम लक्ष्मण औ सँगसीता पग पवित्र जब आय गयेरी १ रूठे वृक्ष पलोहन लागे पैसरनी से निरमल नीर बहेरी २ ऋषि मुनि जप तप

योगकरैं नित सब लोकन में यशछाय गयेरी ३ कूटी रचो यक परम सुन्दरी है प्रसन्नचित बास लयेरी ४ कछुक दिनाहरि चित्रकूटरहि पंचवटी को राहलयेरी ५ बैदेहीशरण देखुप्रभु लीलानैननके दुखभागिगयेरी ६॥

इतिश्रीरामचरित्रअनुरागावलीद्वितीयअयोध्या काण्डस्कन्धसमाप्तम् २॥

अथ तृतीयस्कन्धप्रारम्भः॥

(रागरामकली ३०८) मृगदेखि रामधनुष लै धायेरे। मायारूप कठोर मृग चंचल सुवरण को यह अंगबनायेरे १ करत कुलेल पकरि पावत रामक्रोध करि अतिरिसुवायेरे २ मार्‍यो बाणरघुनाथ तानिकै गिर्‍यो भूमि मांगन नहिंपायेरे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे ताको प्रभु सुरलोक पठायेरे ४ (रागरामकली ३०९) कपटी कुटिल वेष बनिआयो। शिरपर जटाहाथमें तोंबी रावणको नहिं नामबतायो १ भिक्षादेन लगीं बैदेही सुनतटेरलैके भागन कुछ शरमायो २ रामराम कहिं मात जानकी पक्षी यक धायो ३ चोंचनमारि महा युधकीन्ह्यो भयो लचार जान तबपायो ४ पितुसमान रघुनाथ कर्मकियो लैकै बिमान सुरलोक पठायो ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे ऐसीमुक्ति कोई नहिं पायो ६ (राग केदारो ३१०) मेरो कहा तात कुछ कीजै। पिता भये सुरपुर के बासी तुमतो कछुक दिन जीजै १ उनके दुख मैं बहुत दुखी हौं तुम अबना दुख दीजै २ उनसे अधिक तुम्हैं मैं रखिहौं जो मांगो सो लीजै ३ मारिकै दुष्ट लाय बैदेही श्रवणन सुख सुनि लीजै ४ बोले बि-

हँग बिहसि रघुबर से अब बिलम्ब नहिं दीजै ५ ऐसा औसर फिरि नहिं पैहौ नाथ मोह हरि लीजै ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे राम गिद्धपर रीझै ७ (राग कल्याण ३११) गृद्ध से अधिक भाग्य है काकी। राम काज में प्राण तजि दीन्हो कियो युद्ध बड़ी बांकी १ चोंचन मारि महायुध कीन्हो रावणकी अकिल बुधि थाकी २ तब असि काढ़ि काटि पर पाँवर भयो लचार भाग तब पापी ३ देखि नयन रघुनाथ बिहँग को कीन्हो कर्म्म भयो सुर बासी ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे बेद पुराण सबै हैं साखी ५ (राग कल्याण ३१२) गृद्धकी गति भई सबसे खासी। जो मूरति ऋषि मुनि नहिं देखैं निशिदिन रहत उपासी १ रावण आय हरो बैदेही बेष बनो झूठो हरि दासी २ राम राम कहि रामसिया अस बोले बिहँग धर्म्म युत रासी ३ पुत्रि पुत्रि लै जान न पैहै जब तक प्राण रहै मेरो बाकी ४ चोंचन मारि महा युध कीन्हो मारेनि बाण कठिन अपघाती ५ पिता समान गिद्ध को मानि हरि तिनको कियो सुरलोक को बासी ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे यमराजकी कुछ न बिसाती ७ (राग जयतश्री ३१३) जानत प्रीति रीति रघुबरकी। शवरी कोलकिरात महाखल आशलगी नितहरि चरणनकी १ जूठे फल चित हितसे चाख्यो जानि भक्ति मन बच क्रम उसकी २ दुर्योधन घर मेवा त्याग्यो भाजि रुचाँ घरजाइ बिदुरकी ३ कौन कौन गुण कहौं रामके जानि न जात बात इस घरकी ४ बैदेही शरण कहैंकर जोरे सूरति मोरि सुरतिपर यटकी ५ (राग होली ३१४)

राम कब ऐहौ मोर गली। निशिदिन आश लगा हिरदय में सूझी मोहिं बात भली १ रुचि रुचि फल शबरी चुनि चाखिके प्रीति रीति सों अली २ प्रोचन पड़ि मानि पितु बाचा लीन्हो सँग लषण बली ३ पंचवटी में बास प्रभु कीन्हो रावण सिय लैगा छली ४ बैजू कहैं फल चित से चाख्यो शवरी बैकुण्ठ चली ५ (राग सोरठ ३१५) जाउँ कहा पौरुख सब थाके। अरज सुनो दशरथ सुत बांके॥ हम अस पतित अनेकन तास्यो जान्यों नहींमैंकौनकहांके १ अजामील गज गणिका तास्यो खायो फल शवरी के यहांके २ बालापन लरिकन सँग खोयों ज्वान भयों कामिनि मुख झांके ३ माया मोह लोभ रह्यो घेरे झूठी बात में रहे चित छाके ४ संतनको सतसंग न कीन्हों बेदपुराणको हाल न जांचे ५ अबतो कृपा करो करुणानिधि करौ गुलाम दुआर रहौं ताके ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे तुम सिवाय को मित्रहै काके ७ (रागकल्याण ३१६) अब मनमानु मोर तू हटको। सांससांस पर रामराम कहु देत सिखावन तेरे हितको १ बिनहरिभजे पारकसजैहौ भवसागर का बड़ाहै खटको २ सुतदारा कोउ काम न ऐहै झूठि बातमें रहत क्यों अटको ३ जल थलमें सबमें ई व्यापित जानत हैं सबके घट घटको ४ बैदेहि शरण सबआश छोड़िके मन चित से चरणन में यटको ५ (रागकल्याण ३१७) मन रहु रामचरण में यटको। ऐसानाम आनि नहिं दूजो दूरि करत चिंता चित खटको १ और आश सब छोड़ि जगतकी माया मोह लोभ तन घटको २ पलक एक भूलै

नहिं चितसे हरि मूरत औ गुरुके पदको ३ जन्मजन्म के पातक जरि हैं चितहितसे जो जनिहै इनको ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे मैंतो गुलाम इन्हींके घरको ५ (रागकल्याण ३१८) मेरेतो रामचरण को भरोसो । बेपरवाह रहत मन मेरो इनहीं दिहिनि दिलकोसंतोषो १ जूठनि खात अघात रहत नित खुशी मिजाज पलँगपर सोतो २ इनकी खुशी से खुशी मनमेरो ईनहिं खुशी तो परा में रोतो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे औरको कौन नहीं कुछ होतो ४ (रागकेदारो ३१९) अबतो राम मेरीतन हेरो । जन्मजन्म भुलिहौं नहिं कबहूं रहिहौं चरणको चेरो १ सदा दीनपर दाया राखो वृन्दापामें फिकिरिन छोरो २ हौंलाचार बिचारकरि देख्यों हौंतोरक नोरो ३ दीनदयाल दान यह दीजे देखाकरौं मुखतेरो४ बैदेही शरण कहैं करजोरे बांहगहो कबहूं नहिं छोरो ५ (रागकेदारो ३२०) होसकरु मूरुख मन क्यों सोतो । जागु बेहोस ख्यालकरु कौलको मिथ्या जन्मपराक्यों खोतो १ सुतदारा परिवार में भूला इनके कष्ट परे तू रोतो २ यकपनबीते दुइपनबीते तिसरेउबीत चौथ क्यों खोतो ३ अबहीं चेतु हेतुकरु प्रभुसे नाहिंतो खैहै नरक में गोता ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे रामगुलाम जोहो तो५ निशिदिन हरिचरचा सुनि श्रवणन पढ़त बैठि ज्यों तोतो ६ (रागकेदारो ३२१) आश सब छोडु हेतकरु प्रभुसों । दुनियां दौलत माल खजाना ईरहतनहीं बेसटके १ सुतदारा परिवार त्यागिदे अंत समय साथी भे केहिके २ संतनकी सेवाकरै नित उठिये ईहै काम सुघर

नर तनके ३ बैदेहि शरण सब आश छोड़िके रहुमन रामचरण में यटको ४ (रागसोरठका भजन ३२२) सब विधि राम भरोसा तेरो। और काम मोहिं लागत भारो॥ यहि संसार झूठ सब नातो ना कोइ मोर न मैं कोईकेरो १ घरिपलक्षण मेरे चितसे न बिसरो राखो मोहिं चरणको चेरो २ ऋषि मुनि तुमका ध्यान करत हैं पावत नहीं देखि मुख तेरो ३ जापर कृपाकरो करुणा-निधि ताको कहत दास है मेरो ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे तुलसीकी तरहज्ञान करुमेरो ५॥

इतिश्रीरामचरित्रअनुरागावलीतृतीयआरण्यकाण्ड स्कन्धसमाप्तम् ३॥

अथ चतुर्थस्कन्ध प्रारम्भः॥

(रागकल्याण ३२३) रामसनेह करोमन साँचे। सकल पदारथकोफलयेई मिलिहै ना कुछ घर घर झाँके १ रामसनेह कियो प्रह्लादने तिनके गये कहुँबारन बाँके २ ऋषि मुनि नित उठि ध्यान करतहैं करि करि योग युगुति सबथाके ३ जापर कृपाकरो करु-णानिधि धन्यभाग बहुरे दिन वाके ४ सुत दारा परिवार में भूलाये साथी मतलबके यहाँके ५ माया मोहमें क्यों तू लपटा भूलिगये सब कौल वहाँके ६ बैदेही शरणकहैं करजोरे दरशदेउ मन चितरहै छाके ७ (रागकल्या-ण ३२४) जागु जड़जीव परा क्यों सोता। बारबार मैं तोहिं समझायो मानत नाहिं जन्म सब खोता १ पलक पलक पर राम राम कहु यहिके कहे बहुत सुख होता२ सुत दारा परिवारमें भूला अन्त समय साथीको होता३

सपने उ सुख नहिं होत रैन दिन जबतक दुबिधा जात न चितका ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे मैं जो गुलाम रामको होता ५ (रागरामकली ३२५) राम सुग्रीवसे नेह बढ़ायेरे। बालि बध्यो तृण ओट धनुषकरि नेम बिचार चित अस लायेरे १ रामराम कहि गिराधरणिमें व्याकुल भयो ज्ञानतब आयेरे २ तारा बिकल देखि रघुराया तेरोपति मैंदेत जियारेरे ३ बोले बालि बिहँसि मृदु बाणी ऐसा अवसर मुनिजन नहिंपायेरे ४ बैदेहीशरण कहैं करजोरे जन्मजन्म हरिपद उरलायेरे ५ (रागसोरठकाभजन ३२६) सुनियेरघुबंशिनकीबडाई। निदरगनी गरीबको आदर रीति सदा चलि आई। दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो साग बिदुर घरखाई १ शवरी कोल किरात महा खल हरिसे प्रीति बढ़ाई॥ जूठे फल हित चित से चाख्यो फिर बैकुण्ठ पठाई २ राजा दशरथ बाचाहारे केकई मांगन पाई॥ राम लक्ष्मण सहित जानकी ह्वै प्रसन्न बनजाई ३ चित्रकूट अति परमसुहावन कूटी रुचिर बनाई॥ पयस्विनी तट बिहरतहैं नित मुनिजन के सुखदाई ४ रावण वेष धरे तपसी को हरि सीता लै आई। बालि मारि सुग्रीव राज्य दै बिदा भये सुखदाई ५ बैदेहीशरण कहैं करजोरे दूरि करो दुबिधाई॥ बहुत दिनन से आश लगाये हमहूं दरशन पाई ६ (रागकल्याण ३२७) राम को नाम करतना धोखा। रामकहतप्रह्लाद उबरिगे खम्भफोरिनरसिंहनेदेखा १ दुर्योधनकी मेवात्यागिकै साग बिदुरकोलगाबहुचोखा २ जूठेफल शवरी के खायो गुण अवगुण एकौनाहिंदेखा ३

बैदेहीशरण कहैंकरजोरे मेरेतोएक यहीसंतोखा ४ (राग कल्याण ३२८) कृपाकरो हमतनहरिहेरो। जांचिचुक्यों बहुलोग घनेरो॥ तुमहीं जन्म दियो प्रभुमेरो। ऐसो हितू मिलत नहिंऔरो १ बाळापनसे बृद्धापालौंखरचा दियो कियोनहिंथोरो २ जोइच्छा भइ खायों खरच्योंकबहूंनहीं रुकासनमेरो ३ औषधिमूरि तुम्हींहौमेरे तुमहीं रोग हरौतनकेरो ४ बैजूकहैं दोऊकरजोरे जन्मजन्म मैं तो कनोरो ५ (रागमारूकल्याण ३२९) प्रीतिप्रतीति रामकी सांची। जो जो प्रीति कियोहै इनसे सो सो भये बैकुंठकेबासी १ हिरणाकुश प्रहलादभक्तको दियो त्रास देखानहिंजाती २ खम्भफारि नरसिंहरूपधरि मार्योदुरघटपापी ३ दुर्योधनकी मेवात्यागी भाजीबिदुरघरलागी आछी ४ हितचित से मैं तुमका चहतहौं जानतहौ घट घटकेबासी ५ बैदेहीशरणपर करहुकृपा अब काटो पाप दीजिये झांकी ६ (रागभजन ३३०) केवल रामनाम हित मेरे औरकाम झूठजगकेरे। सुतदारा परिवारमित्र सब ये साथीहैंमतलबकेरे १ मनचितसे याही नितमेरे सत्संग दरशप्रभुकेरे २ सांससांसपर याहीजपौनित झूठ देखावयोगजपकेरे ३ पितासे बैर लियो प्रहलादने नाम की डोर पलक नहिंछोरे ४ बैदेहीशरण कहैंकरजोरे रहिहौ सीतापति के चेरे ५ (राग भजन ३३१) हरितजि सेवत चरण बिराने। चाटत फिरत श्वान ज्यों पातरि कबहुँन उदर अघाने। मायामोह लोभपरनिन्दा निशि दिन कलिमलसाने १ संतनदेखि जिया नहिं हुलसत बिसवनहाथ बिकाने। अजहूंचेतत नामनमूरुख खोवत

कर्म पुराने २ अजहूं चेतुहेतुकरु प्रभुसे तीसरपननगिचाने। अंतसमय कोउ कामनऐहै ह्वैहैकाहपछिताने ३ बैदेहीशरण कहैंकरजोरे वेनर परमसयाने। मात पिता घरबन्धु छोड़िकै रामप्रीति लपटाने ४ (भजन२३२) राम पर्वतपर बासलियोरे। परवर्षण प्रफुल्लितह्वैगयो निशिदिनरहत दोऊ करजोरे। मंत्रिनसेसल्लाह मंत्रलियो कह्योदुःखजियकेरे॥ देखहुजाय कहां बैदेही लाओ हाल सबेरे १ जामवंत अति परमसयाने लैकपिसँगडगरे रे। चारोंदिशा भरमिजबआये क्षुधापियास बहुततन घेरे २ ऐसी वैसी याचनलागे अन्नपानि कहुँ मिलतन हेरे। आगेचले मिली यकमाया पूछत हाल कौनतुम कोरे ३ तबसब हाल बतायो हरिको भोजनदियो खुशी चितयेरे। सावधानमन भे जब सब के राहबाट कहुँ मिलतनहेरे ४ बोलीबचनयोगकी माया मूंदोनयन यहै हेनेरे। पलक एक बीतन नहिंपायो पहुँचेजाय सिन्धु तटओरे ५ इनका देखि खुशी भयोपक्षी मिलीजीविकाआजसबेरे। ताकोनामरहैसम्पाती बन्धुजटायू कोहैओरे६ सुन्योप्रभुहाल ज्ञान कुछआयो कह्योहाल सीताकेथोरे। तब सुनिबचन धीरभयो मनको सिद्धिकाम ह्वैगयेघनेरे ७ जामवन्त समुझायो कपिको कह्योहाल ऋषिमुनिकेजोभेरे। वायुपुत्र सुनि हाल पुरातन परबत भयो खुशीचित घेरे ८ बैदेहीशरण कहैं करजोरे हरोदुःख चलो लंकसवेरे ९॥

इतिश्रीरामचरित्रअनुरागावली चतुर्थकिष्किन्धाकाण्ड स्कन्ध समाप्त ४॥

अथ सुन्दरकांड प्रारम्भः॥

(रागभजन सादा ३३३) मोरासैयां बनिजरवाकहुँ आयरहे। जबसे छूटिमोरी खबरनलीन्हीं कौनकाम में लोभायरहे १ बिनदेखे मोहिं कलनपरतहै रहिरहिजिय घबराय रहे २ बावरोमनमानतनाहीं मायामोहलपटाय रहे ३ वैदेहीशरण कहैंकरजोरे हमकारामबचायरहे ४ (रागभजनबैरागियाधुन३३४) चले हनुमान प्रबल कैकै लंका। हालु सुन्यो मुख जामवंतका। ऐसी वैसी चहुँ दिशि धायो देखि लियो सब जगका। रामचरण को ध्यान कियो मन फांदि समुद्र पहुँचगे गढ़का १ अशोकबाटिकामें जब पहुँचे रूपधस्यो भुनगाका। मंदमंद बोलत हनुमानी हाल कह्यो सियसे रघुबरका २ प्रीति प्रतीति बहुत कुछ दीन्ह्यों रतनजटित मुंदरिका। तब निश्चय सियके मनआई खाहु पुत्रफल धरेहैं तुमका ३ ऐसे फल ई मधुरसुहावन कहां वृक्ष हैं इनका। मोहिं बताओ मात जानकी देर तनकना कीजे पलका ४ ऐसे वचन सुना जबकपिके हिरदय कांपा उनका। एक से एक कठिनभटयोधा पकरिकै कैदकरेंगे तुमका ५ बरजि रही बरजो नहिं मानै कियो काज कपि-प्रभुका। उजारिबाटिका फूंकि गढ़सगरो त्रास बिभीषणहैं बेखटका ६ जगदम्बाकेचरण पकरिकैलियो चिह्नकुछ हरिका। बैदेही शरण कहैं करजोरे सुफल मनोरथ सबहोइ मनका ७ (राग भजनसादा ३३५) देखि कपि आयो पलक में लंका। रघुनन्दन के चरण शीश धरि हाल कह्यो सब सियका॥ बैंदी चिह्न दियो जबकरमें बाढ़ो प्रेम नैन

जलढरका १ तब रघुपति बोले मृदुबानी जामवन्त तुम पुरिखा। करौ तयारी अब लड़िबेकी देरकीजिये ना यक छिनका २ बानर भालु लियो सब सेना चले सिन्धुके तटका। तीनरोज निशिदिन समुझायो ज्ञान न आयो मूढ़ जलनिधि का ३ तब प्रभुकोप कियो रिसियाने बाण लियो तरकसका। जल्दी राह जानकी दीजे नाहीं तो भस्म करतहौं तुमका ४ दोउ करजोरि सिन्धुतबआयो खता माफकर जनका। हम जड़जीव ज्ञान कहँ पाई आयन शरण दूरिकरो खटका ५ बाणअमोघ जाय नहिं खाली कहाँ चलाओ इनका। सो प्रभु छोंड़ि दियो पश्चिम को रहै सुकाल गिरै जहँ तिनका ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे बँधा सेतु अब गिरिका। सेतुबंधु रामेश्वर थाप्यो सुफल मनोरथ करि हैं मनका ७ ॥

(राग भजन सादा ३३६) आवैं दशकन्ध करावन पूजा। जामवन्त यह बात बतायो ऐस न पण्डित दूजा। सहित जानकी ताहि बुलाओ जाके युद्धका इश्क है गूंजा १ सुनत हाल तुरते द्विज आयो खुशी चित्त नाहिं रंजा। ग्रह औ चक्र धस्यो सब बिधि से सहित सिया रघुपति शिव पूजा २ भई प्रतिष्ठा रामेश्वरकी चढ़न लाग जल गंगा। बरषहिं सुमन देव सब हरषहिं भये प्रसन्न सकल दुख भंजा ३ तब रघुपति बोले रावणसे चही आजु कुछ तुमका। सत्य के सिन्धु जनक प्रण राख्यो महा कठोर धनुष जिन छंजा ४ तब निश्चर बोले हँसि प्रभु से अजर अमर नहिं अंगा। माँगन एक नाथ मोहिं दीजे सन्मुख लड़ौं रहै मन मंजा ५ बैदेही शरण

कहैं करजोरे हरि इच्छा सोइ सूझा । करता की गति कोउ नहिं जानै एक से एक दुष्ट दल गंजा ६ ॥

इतिश्रीरामचरित्रअनुरागावलीसुन्दर पञ्चमस्कन्धसमाप्तम् ५ ॥

अथ लङ्काकाण्डप्रारम्भः ॥

(राग भजन सादा ३३७) चले रघुबीर कोपकरि लङ्का । जामवन्त सुग्रीव मित्र सब बानर भालु बेशङ्का । चली फौज दिग्गज सब कांपे कुडुम कुडुम धुनि बाजत बहु डङ्का १ घेरि लियो गढ़ चारों ओर से भयो शोच सब पुरका । बार बार तिरिया समुझावे इनसे लड़ब नाहिं उचित है तुमका २ लैकै जाउ देहु बैदेही मिलौ जाय तुम प्रभुका । मानु सीख यह कंथ हमारी धर्म्म राखि लेउ अब द्विज कुलका ३ नाकुबुद्धि सुनु त्रिया सुलक्षिणि ज्ञानदियो किन तुमका । बानर भालु बंधु दोउ तपसी एतो अहार मोर यक दिनका ४ कुम्भकरण अस भाय हमारे मेघनाद अस लरिका । एक पलक में गर्द करैंगे आयगा काल निकट इन सबका ५ दास बिभीषण सुनि यह बानी भयो शोक बहु उनका । शरणागत आये वै प्रभुकी बाँह पकरि लङ्केश कह्यो तिनका ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे कौन कहै गुण हरिका । दियो अशीश अचल कियो उनको राखि लियो प्रण अपने जनका ७ (राग भजन सादा ३३८) सन्मुख दनुज देखि

मुख हरिका। एक से एक महा भट योधा घोर शब्द बहु उनका। डकरैं गरजैं करत कुलेलैं हमसे लड़न आये तपसी दो लरिका १ रावण से पूछ्यो अभिमानी हुक्म दीजिये हमका। गरद बरद करिदेव सबनको देरकीजिये अब नाहिं पलका २ बानर भालु लड़नको लाये शरम लागि नाहिं इनका। बेगि सँदेश दीजिये उनको अबहीं सबेर लौटिजायँ घरका ३ तब धावन भेजा दशकन्धने हाल लाउ जाय उनका। जो नहिं मानै तो कहु हम से प्राण लेउँ छिन में दुनहुनका ४ रघुनन्दन सुनिकै यह बानी कह्यो मनोरथ मनका। नारि हमारी को हरिलायो करो तयारी समर करिबेका ५ कह्यो सँदेश लौटिकै धामन बेहड हालु है उनका। बिन संग्राम कुशल नाहिं है छोंडि देहु चितका सब खटका ६ बैदेही शरणकहैं करजोरे प्रभु की को करै समता। भामति मन्द अन्ध दशकन्धर मरन चहत हैं अपने कुलका ७ (राग भजन ३३९) द्रियो रघुनाथ समरको डंका। सुनत हाल निश्चर कियो शंका। मेघनाद भट लियो घनेरे देर कियो नहिं छिनका। सन्मुखआय जुटा मुरचनपर पहिलबार हम करब ना तुमका १ तबरघुपति बोले यह बानी ये उचित नहीं अस हमका। वार चलाओ हम सहिलेई पीछे तमाशा देख्यो सब कपिका २ ऐसी बैसी योधा डहँके मानतना मन उनका। वज्रदंतबोला निशिचर से नाच दिखावन का लायो हमका ३ आगे पीछे कौनबातहै मारिलेब हम इनका। सन्मुख बाण चलावन लागो देखि युद्ध अंजनि सुत कड़का ४ युद्ध होनलागी

दोउदलसे खौफ नहीं कछु जियका। बज्रदंत मारागया पल में मेघनाद मुरचनपर अटका ५ युद्ध होनलागी लक्ष्मण से रामचंद्र धरिडपटा। खैंचिकै बाण नाथ ने मारा खण्ड खण्ड सब अंग भयो वहिका ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे देखिहाल दोउ दलका। कुम्भकरण सुनि के यह धायो धृगजीवन रण मारिगा लरिका ७ (राग भजन सादा ३४०) सन्मुखकुम्भकरण दलआयो। लागलीलने जैकपिपायो। पहिले समुझाय थका रावणको तुमहीं शत्रिबढ़ायो। नारिपरारी का हरिलायो कुलपरिवारका कालबुलायो १ मेघनाद जूझाभटरणमें हमहूंकादांवलगायो। महानिलज्जलाजनहिंतुमका नामपुलस्त्यका जगमेंधरायो २ तब निश्चरबोला कटुबानी भल यह ज्ञानबतायो। अबका ह्वै है मनपछितानै जानिगयन कुछ जियका डेरायो ३ तब रिसियायचला अभिमानी निकटरामके आयो। महाकरालघोरयुधकीन्हों हाहाकार चहूंदिशिछायो ४ मारोबाण तानिरघुनन्दन गिरयोधरणिअकुलायो। कछुकदेरमें मूर्च्छाजागोकरिफिरिक्रोधकपिनको भगायो ५ कठिनकठोरघोरयुध कीन्हेउ कालनिकटनगिचायो। फिरिलैबाणरामनेमार्‍यो जुझिगयो रावण सुनि पायो ६ धृगजीवन है अबजग मेरो पुत्र बन्धुको गँवायो। सन्मुखआय महायुध कीन्हेउ रघुबंशिनको मुख कुँभिलायो ७ तब बिचार मन में कियो रघुनरमुनि अगस्त पहँ आयो। हाल कह्यो अपने सब जियको ह्वै प्रसन्न मुनि मंत्रबतायो ८ आयो लौटि फेरि प्रभुरण में वाही मंत्र जगायो। आदित

हृदय नामहै वाको बचैंन दनुज काहू को बचायो ९ अमोघ बाण माखो सन्मुख प्रभु कालघेरि ज्यों आयो। रामरामकहि गिराधराणि में मन मांगे निश्चरफल पायो १० दशकन्धर सुरलोक पठायो राज्य विभीषणपायो। लैकपि संग सहित सियराघो ऋषि मुनि देव सकल सुखपायो ११ बैदेही शरण कहैं करजोरे हरिसे जीति को आयो। वेदपुराण जहांजहँ देखा कानन सुना यही सब गायो १२॥

इतिश्रीरामचरित्रअनुरागावली लंकाषष्ठ
स्कन्धसमाप्तम् ६॥

अथ उत्तरकाण्डप्रारंभः॥

(राग रेखता ३४१) भक्तिपद रामकोभारी। चहूं युगनामहै जारी। सदारहे संतहितकारी। दुष्टदल कोटि संहारी १ कियो दशकंध अतिभारी। मुनिन से दण्डलै छाँड़ी २ हरयो सीता सतीनारी। वेषधरि कपट भीखारी ३ गयो कपि लंकसबजारी। दासको एक घर छाँड़ी ४ मारिप्रभु दनुज संहारी। संग लियो जानकी नारी ५ कियो हरिलंक जगन्यारी। विभीषण राज्य बैठारी ६ कहैं बैजू ये आनारी। सुनो श्रीअवध बीहारी। शरणहों नाथ तीहारी। हरोसब पीर हामारी ७ (राग रेखता ३४२) चलोकरो अवध उजियारी। राह देखत हैं नरनारी। तुम्हैं बिन सूनि अँधियारी। दुखितहै मातु

तीहारी १ लियो प्रभु संगसब सैना। देखि के खुशभये नैना। जोरडंकोंकी धधकारी२ निकटजब नग्रके आये। सुनत सुख बंधु उठिधाये। प्रेमसे भेंटि हितकारी ३ कनक घटघरघर जातधरे। पताके बन्दनवार जड़े। खुशीसब छायगै सारी ४ तबै कुल पूज्य ऋषिआये। लोगसब जातबलिहारी ५ लुटे गज बाज नग हीरा। मणिन के ढेर गम्भीरा। खुशी सब नेगिऔचारी ६ कहैंबैजू ये आनारी। भक्ति मोहिं दीजिये भारी ७ (राग भजनसादा ३४३) मन मोहि लियो मेरो रामलला। जाके देखे दृग पापहरै कोटिन भानु प्रकाशकला १ धर्महेतु प्रभु वेष बनायो लैसीता बन जातचला २ जाको है दूत अंजनि को पूत सुनि नामपुरातम प्रबलचला ३ करधनुषबाण अतिधीरवान दहिना दिशि शोभित लषणलला ४ कपिजारिकै लंक विध्वंस किया गृह एक बिभीषण को न जला ५ प्रभु सेतु समुद्र में बांधि दिया जलके ऊपर उतरात शिला ६ सबरावण को दल जीति लियो दियोराज्य विभीषण अचलभला ७ कपिबांह गह्योहरिसाथ लियोसबसैना प्रभुकेसाथचला ८ बैजूयेकहैं करजोरिजोरि अब अचल रहैं नित राज्यतोरि दिन प्रति अबबाढ़ै राजकला ९ (रागभजन सादा ३४४) जब हरिसुनत दीनताजनकी। तबतब रूप अनेकन धारत करत देरनहिं छिनकी। हरणाकुश प्रहलाद भक्तको दीनदण्ड बहु अधकी। खंभफोरि नरसिंह रूप धरि मास्यो दुरघट कपटी १ गज औ ग्राह लड़त जल भीतर सुन्यो टेर जब गजकी। गजको बचाय छुटाय फंदसे राखि

लियो पति प्रणकी २ लंकामध्य विभीषण कोगृह तिन को बंधु बहुहट्ठी।मारिकै दनुज जीति सब सैना दीन राज्य उनको सब पुरकी ३ बैजूकहैं दोऊकरजोरे नाम तोर समदर्शी।हमहूं को प्रभु पारलगाओ माफकीजिये खफकी ४ (राग भजनसादा ३४५) भजुमन राम कामसब तजिकै। कौनतरा चरणन को रटिकै। अजा-मील गजगणिका तरिगई सुरपुर जात विमानन चढ़ि कै १ रामकहत प्रहलाद उबरिगे ध्रुवभे अचल कहुँजात चलिकै २ लंका मध्य बिभीषण को गृह दीनराज राव-णसे लड़िकै ३ बैजूकहैं दोऊकरजोरे कौनतरीफ़ करौं मैं हरिकै ४ (राग भजनसादा ३४६) बरणि गुण कौन सकैमहराज। युगनयुगन में हौतुम जाहिर करिहौ सु-न्दरकाज १ जहँजहँ परैदास तरेगाढ़े राखेउ उनकी लाज २ अजामील गज गणिका तरिगई शबरी को कीन्हेउ काज ३ बन्धु विभीषण को लड़ेउ रणमें तिन का दीन्हो राज ४ बैजूकहैं दोऊकरजोरे तुम कृपासिन्धु शिरताज ५ (राग रेखता ३४७) रूप दोउ हैं लीला कारी। किहेउ सब जगत उजियारी। इहां श्रीअवध बीहारी। उहां श्रीकृष्णमूरारी १ वजा दोनोंकीहैन्यारी। लागतीहै मुझे प्यारी २ रामइत हाथ धनुधारी। श्याम उत मूरली प्यारी ३ अवध में भक्ति अधिकारी। वृन्दा-वन रहस नित जारी ४ इहांदशकन्ध को मारी। वहां पापी कंसभारी ५ दोऊअवतार यकतारी। भस्मकरै तो हैं आनारी ६ भयेउ जबपाप अधिकारी। मनुजको रूप हरिधारी ७ सदारहेसंतहितकारी।हरोबैजूकोदुःखभारी ८

(राग रेखता ३४८) कह्यों गति लंककी सारी। अवधकी बात अबजारी। सुनो प्रभु संतहितकारी। रूप धरेउनाथउपकारी १ धर्मकीरोजअधिकारी। सुखी सब लोगनरनारी २ किह्यो लीलाबड़ी भारी। कहत सब वेद पूकारी ३ सुरति मोहिं लागती प्यारी। जातनहिं चित्तसे टारी ४ कह्यों तुम से कथासारी। सह्यों प्रभु दुःख अतिभारी ५ दीजियेदान धनुधारी। हरो सबपीर हामारी ६ किह्यों मैं पाप अतिभारी। खताकरो माफ हामारी ७ कहैं बैजू ये आनारी। शरणिहौंनाथतीहारी ८ (राग भजन ३४९) रण जीति राम अवधपुर आयेरे। लषणलाल औ सँग बैदेही बानरभालु खिलत सब पायेरे १ मारिकै दल तोरि गढ़लङ्का राज्य बिभीषणको बैठायेरे २ सुनत हाल भारत उठिधाये भेंटत हरषि परम सुख पायेरे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मिलिहै अराम नाम गुण गायेरे ४ (राग भजन सादा ३५०) राज तिलक के सब ढँग छायेरे। गुरुवशिष्ठ शुभघरी बिचारैं रामपरे चरणन शिरनायेरे १ देश देश के भूपति आये सुनत हाल तुरतै उठि धायेरे २ ऋषि मुनि देखि हरषि हिय हुलसै शेश महेश बैठि लव लायेरे ३ शुभ नक्षत्र शुभ लग्न मुहूरत लै गोदी भूसुर बैठायेरे ४ बैदेही शरण देखि छबि नयनन किमि बरणौं गुण जात न गायेरे ५ (राग भजन सादा ३५१) राम के राज सुखी सब रियाया। दीनदयाल दयाकेसागर नित उठि करत प्रजा पर दाया १ ऋषि मुनि जप तप योग करैं बहु पापगा भागि धर्म्म सब छाया २ मात केकई औ कौशल्या दुख

कोई सपनेउ नहिं पाया ३ रतन पदारथ के सब उद्यम सतयुग लौटि अवधपुर आया ४ बैजू कहैं दोऊ करजोरे प्रभु के बदौलत सब सुख पाया ५ (राग भजन सादा ३५२) कुछ प्रभु काज कियो न तिहारो। जौन करार करि आयो वहाँ से भूलि गयो सब सारो। अबतो कृपा करो प्रभु हमपर अपनी ओर निहारो १ समदर्शी मैं नाम सुनतहौं वेद पुराण पुकारो। आये शरणि तज्यो नहिं काहू एक से एक नकारो २ जब जब जन्म लियो मानुष को तब तब दुष्ट सँहारो। मेरे रिपुन को देर लगायो कब हरिहौ दुख पीर हमारो ३ राम रूप धरि रावण मारो लङ्क गरद करि डारो। राज बिभीषण को दियो पुरकी जानत सब संसारो ४ कृष्ण रूप धरि कंस को मार्यो मथुराकियो उजियारो। खम्भ फोरि प्रहलाद बचायो हरणाकुश को उद्र बिगारो ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे असंख्यकसूरहमारो। करुणानिधिकरुणा अब कीजे सीतापति मोहिं उबारो६(राग भजन सादा३५३) हरि गुण नित उठि काहे न गावत। भरमत फिरत मोह माया में मिथ्या जन्म गवाँवत। अजहूं चेतत ना मन मूरुख सुख सपनेहु नहिं पावत १ अजामील गज गणिका तारेउ सुरपुर गीध पठावत। बन्धु बिभीषण को लड़ेउ सन्मुख ते लङ्केश कहावत २ ऐसो नाम सुधाको सागर सन्तन को अति भावत। ओई सुजान नाम के भूखे प्रभु चरणन चित लावत ३ बैजू कहैं दोऊ करजोरे मूरुख नर थाह न पावत। जापर कृपाकरो करुणानिधि सो यह अमृत पियत पियावत ४ (राग भजन सादा

३५४) मन तुम भूल्यो न राम भजनका। पलक एक बिसरै नाहिं चित से जो सुख चह्यो आपने तनका १ सांस सांसपर याही जप्यो नित लाग रहै हिरदय बिच खटका २ यहि काया को कौन भरोसो कौल करार नहीं यक छिनका ३ दशरथ सुत श्रीजनकनन्दिनी ई सिवायँ को हितू है केहिका ४ यहि से अधिक दान तप नाहीं झूठा देखु जगतका टटका ५ बैदेही शरणकहैं करजोरे जितदेख्यों तित इनका ६ (राग भजन सादा ३५५) मानत नहीं मूढ़ मन बरजा। अमृत छोंड़ि बिषय रस चाखत लागतना तनको तोहिं लरजा १ सन्तन को सतसंग करत नहिं वेश्यन के घरकाहसि परजा २ परमाया को नित उठि धावत ब्यसहत जन्म जन्म का करजा ३ कर से दान देत नाहिं सपनेहु जोरि कै जमा जमीनमा धरिजा ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे रामका नाम जपे क्या हरजा ५ (राग भजन सादा ३५६) भरोसा मोहिं रावरेको रह्यो रे। लरिकाईं लरिकन सँग खोयो औचुक काम गह्यो रे १ ज्वान भयो कामिनि में लोभ्यो धर्म न कुछ ब्यसह्यो रे २ बृद्धापामें पौरुष थाके दण्ड न जात सह्योरे ३ बैदेही शरण सब आशा छोंड़ि कै रामहिराम कह्यो रे ४ (रागभजन सादा ३५७) राम बिना कोउ काम न ऐहै। अबहीं चेतु हेतु करु प्रभु से नाहिं तो फिरि पीछे पछितैहै १ दुनियां दौलत मालखजाना कुल परिवार साथ नाहिं जैहै २ अन्त समय यमराज घेरि हैं तब कहो तुमका कौन बचैहै ३ हे मन मूढ़ नाम जपो निशिदिन सपनेहु काल तीर नहिं ऐहै ४

बैदेही शरण सब आश छोंडि के सीताराम रैनि दिन गेहै ५ (राग लावनी ३५८) अब हम से चलाये नहीं जाता। बुढ़ापा आय गयो दाता। शिथिल भई इन्द्री औ सब गाता। कहत नहिं बनत है मुख से बाता। याद दिन ज्वानी को आता १ डरत नाहिं है रिपुजन कुत्र लोग। कहत हैं नित उठि बंचन कठोर। श्रवण सुनि सुनि मैं गम खाता २ लगे अरसाने घरके लोग भये बुढ़वा तुइ हमका रोग। बैठ चुप क्यों नाहिं तू रहता ३ कहैं बैजू दोऊ करजोर मानु मन मूरुख कहना मोर। सियापति हैं सब के दाता बैठि हरि गुण क्यों ना गाता ४ (राग भजनसादा ३५९) हम से कौन अधिक जग पापी। जौन करार करिआयो प्रभुसे किह्यो नहींएकौ सब बाकी। माता पिता बहुत समझायो पढ़िलेहु पुत्र होहु परतापी १ माया मोह लोभ रह्यो घेरे नेम बिचार की बात नभाती। करसे दान कछू नाहिंदीन्हो अंतसमय कै है को साथी २ नाहरि भज्यों संतनाहिंसेयों रसना नाम लेत अलसाती। मिथ्याजन्म बीतिगयो मेरो भवसागर को कोऊ नहिंसाथी ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सीता रामजपोदिनराती। सबबातनको मूलमन्त्र यह काटिदेत यमपुर फाँसी ४ (राग भजनसादा ३६०) माया मोह लोभ अपघाती। इनसे भजन करन नहिंपाऔं घेर रहत मोहिं दिन राती १ बालापन लरिकन सँगखोया नेम बिचार की बात न आती २ ज्वानभयो कामिनिमें लोभ्यो महा निलज्ज लाज नाहिंआती ३ यक पनबीता दुइ पनबीते मिथ्या उभ्यसबै मेरी जाती ४ सीता राम

जपो निशिबासर मानु मूढमन सुनु केशवा...
बुद्धि की बातहै साँची रामनाम यक पल नहि भूलो
सुरपुरके ह्वै हो तुमबासी ६ वैदेही शरण कहैं करजोरे
इनसे बचै सो बड़ापरतापी ७ (राग भजनसादा ३६१)
हैं जड़जीव जो नाम न गाते । भरमत फिरत मोह
माया में रामका नामलेत अलसाते १ सीतापति को
आश छोड़िकै ठगत जगत में हरामकाखाते २ हम पर
कृपाकरो करुणा निधि देउ खैरातगुलाम के नाते ३ दाया
धर्म बिचार न राखत अपने रंग में रहैं नितमाते ४
धृगजीवन जगशूकरओई बोलत झूठ न कुछ शरमाते५
सन्तन देखि जिया नहिं हुलसत बेश्यन के संग धर्म
गवाँते ६ बैजू कहैं महामैं मूरुख जो मैं गायों सो तुल-
सी बताते ७ (राग भजनसादा ३६२) जाँचि बहुलीन
लोग यहि जगके । साँची बात कहूं नाहिं देखा कसमैं
खात देत फिरि धोखे १ जो जस कहा सोई हम माना
एक से एक पतित बहुखोटे २ सब से पतित महा द्विज
द्रोही झूठ उड़ावत बैठपरोसे ३ वैदेही शरण आश नित
प्रभुके झूठे मरिखै हैं सब गोते ४ (रागलावनी ३६३)
हैं महा पतित चण्डाल कठिन अपराधी । हमका दि-
हिनि लड़ाय आप भे राजी । बनिबैठेहुंडिया साह जन्म
के त्यागी । हमका दिहिनि जवाब जाउ फरयादी १ ना
देब गवाही तोरिहोब नासाभी । चहोखफाहोउ महराज
चहौ रहौराजी २ सेहँगौ के मेला जावलाड़िहै लठिया
साजी । बिप्रनको दिहिनजवाबआपभेकाजी ३ बैजूकहैं
शोचबिचाररामअनुरागी।सुनिलेहुहमारीअरजतुरतकी

ताजी ४ (रागभजनसादा ३६४) मनरहौ राम सिया रँग माते। भरमत फिरत मोहमायामें पलक एक बिश्राम नपाते १ सुत दारापरिवार में भूला अंतसमय कोई काम न आते २ जब तक मोह लोभ नहिं त्यगिहै तबतक जीवसे दुःखनजाते ३ युगनयुगन मेंहै ई जाहिर वेदपुराण सबै यह गाते ४ नेह सनेह इन्हींसे राखो देखि चुक्यों झूठे जगनाते ५ जीवन जगमें याही एकफल अमृत छोड़ि विषै क्यों खाते ६ बैजूकहैं बुधिज्ञानहीनहौ जोमैं गायों सो तुलसी बताते ७ (राग भजनसादा ३६५) हमपर कृपाकरो रघुराई। हरिचरणन में रहौंरत निशि दिन दुबिधा बैर न दूरि बहाई १ दशरथ सुत मोरेप्राण पियारे जीवन मुक्ति जानकी माई २ गुरुपद हितसे चित से न बिसरै दरशकरौं नित बलि बलि जाई ३ आये शरण तज्यो नहिं काहू सदारीति याही चलिआई ४ बैजू कहैं दोऊकर जोरे तुलसि दासकी बात बताई ५ (राग भजनसादा ३६६) राखहु मोहिं चरणको चेरो। तुम हीं जन्म दियो मानुषको तुम सिवाय को हितूहै मेरो १ अजामील गज गणिका तारयो गुण औगुण एकौनहिं हेरो २ हमअस पतित अनेकन तारयो पूंछ्यो नहीं कौनकुल तेरो ३ खम्भफोरि प्रहलाद उबारयो शवरी दियो सुरलोक बसेरो ४ बैजू कहैं दोऊकरजोरे रहिहौं गुलाम सियापति तेरो ५ (रागभजन सादा ३६७) निश्चय आयगई मनमेरे। जो जो सुन्यों हाल प्रभुतेरे। सदासंग दासनके डोलत तिनके काल न आवतनेरे १ खम्भफोरि हरणाकुश मारयो काढ्यो फंद ग्राह गज

केरे २ जबजब जन्मलियो मानुषको तबतब माखो दुष्ट घनेरे ३ मेरेरिपुनको देरलगायो अबकाबाण मिलतनहिं हेरे ४ (राग भजनसादा ३६८) सहिकैसे जायँ चितवन की चोटैं। घरिपल क्षणमेरे चितसे न बिसरैं करत पीत पट ओटैं १ दशरथसुत श्रीजनकनंदिनी सूरत बनी अनोखैं २ जिनके इश्क जिगरमें इनको करत पलक नहिं ओटैं ३ पीरपरारी जानत हैं नित दासनको देतसंतोषैं ४ जीवन जन्म लाहु लोचनफल सुफल जन्म जातनई देखैं ५ बैजूकहैं बड़े तुम सब से तुमसेहैं सब छोटैं ६ (रागश्रद्धा ३६९) उमिरिया बीतीजात हमार। लरिकाई लरिकन सँग खोयों जान्यों न नेमबिचार १ ज्वानभयों कामिनि में लोभ्यों ताक्यों नारि परार २ मायामोह लोभमें अटक्यों भूल्यों कौलकरार ३ सीतापति को नाम न गायों धृग जीवन संसार ४ अबहीं चेतु हेतु करु प्रभु से सुनुमन मूढ़ गँवार ५ बैजू कहैं दोऊ करजोरे हमका नाम पियार ६ (राग भजन सादा ३७०) देखु मन एक ब्रह्म चहुँ ओर। वई रहे राम वई रहे मोहन वई दशरथ सुतनन्दकिशोर १ घट घट में सब केई व्यापित ऋषि मुनि खोजत हैं चहुँ ओर २ ढूंढ़त जन्म जन्म युग बीते पावा ना काहू छोर ३ जिनपर कृपाकरो करुणानिधि सो देखै मुख तोर ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे मोहि लियो मन मोर ५ (राग भजन सादा ३७१) लोचन देहु करों मैं झांकी। माया मोह धुंध मोहिं घेरे देखि परत नहिं सूरत बाँकी १ जन्म जन्म के कोटिन पापी

तिनके पाप न राखेव बाकी २ तुमसों काह छिपो करुणानिधि कीन्ह चहै कोउ कितनी चलाँकी ३ दशरथ सुत तलफौं मैं तुम बिन कब तकिहौ हमतन करि आंखी ४ बैदेही शरण की आश पूरिकरौ नित उठि राह रोज हम ताकी ५ (राग भजन सादा ३७२) मैं तो रहौं सियराम भरोसे। खाना खर्चा नित उठि भेजैं कियो नहीं कबहूं इन धोखे १ जो इच्छा भई सो सब पायों एक से एक पदारथ चोखे २ माता पिता यई सुत भ्राता मैं तो चहतहौं हित औ चित से ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मैंतो खुशी हौं दोऊको देखे ४(राग भजन सादा३७३) रहु मन राम सिया मुख देखे। युगन युगन में हैं ई जाहिर इनसे नहीं कोई सुघर अनोखे १ मेरो कहा गाँठि जो बँधिहै कबहूं ना खैहै फिर धोखे २ तीरथ बरत योग जप संयम कैहै काह जो ई रहैं रोखे ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे सदा रहौं चरणन के भरोसे ४ (राग अद्धा३७४) गठरिया रोज भीजै हमार। निशिदिन राम नाम गुण गाओ बरसैं बूंद पियार १ दशरथ सुत श्री जनकनंदिनी राखैं लाज हमार २ ज्यों ज्यों भीजै अधिक होइ भारी पावै न चोर लवार ३ भक्ति बीज पलटै नहिं कबहूं जानत सब संसार ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे मेरे नाम पियार ५ (राग भजन सादा ३७५) अब प्रभु राखि मोर प्रण लीजै। माफ खता सब कीजै। श्रावण बदी बार रवि दिन को द्वादश को जल दीजै १ प्रीत प्रतीत तुम्हीं से मेरी यतना कारज कीजै २ महा कराल उठैं घन कारे देर तनक ना कीजै ३ जब जब

कहैं मलार पियारी तब तब पानी दीजै ४ गरजि गरजि बरसैं जो मेघा ताल खेत भरि दीजै ५ बैदेही शरण कहैं करजोरे सीतापति सुनि लीजै ६ (राग मलार ३७६) कहा मेरा आजुइ किह्यो तुम राम। बरसि दियो पानी मूंदिगा घाम। परे शोचत रहैं यार किसान। जियब हम केहि बिधि से भगवान १ खेत में सूखत जिन के धान। नहीं खर्चा को कोई ठिकान २ पढ़े नाहीं कुछ वेद पुरा॰ न। भरो से तुम्हरे कहि दिहौं राम ३ फकत तुमहीं से मेरा अरमान। कोऊ नहिं जग में आप समान ४ कहैं बैजू करि करि परनाम। सियापति राखो मोर ज़बान ५ (राग भजनसादा ३७७) कर्मको हाल जानिनहिंजाता। उत्तम जन्म दियो ब्राह्मण को उमिरि बीति नितनाम तखाता १ नाहरि भज्यों संतनहिं सेयों मानतहैं राम गुलामका नाता २ एक से एक गुणी बहुदेखा सांची बात मोहिं कोई न बताता ३ बैजूदास पर करहु कृपा प्रभु निशिदिनरहौं तोरगुणगाता ४ (रागभजनसादा ३७८) मिथ्या जन्म मूढ़ क्यों खोता। यकपन बीते दुइपनबीते तिसरउ बीतपरा क्यों सोता १ सीताराम कहत नाहिं सपनेहुं चाहत है सुखसम्पति पोता २ हमहम करत जन्म सब बीते तनकनहीं राखत संतोखा ३ बिन हरि भजे सन्त बिनसेये जन्मजन्म खैहै तू धोखा ४ बैदेही शरण कहैं पाप न राखत जाको मनचित राममेंचोखा ५ (राग भजनसादा ३७९) भजुमन रामनाम तिरभंगी। पलक एक बिसरै नहिं चितसे जैसे फूल बिच भवँर मतंगी १ दशरथसुतश्रीजनकनन्दिनीजन्मजन्म इनको रहुसंगी २

ऐसी वैसी क्यों तू भरमत सांचीकरो यहप्रीति यकंगी३ बैजूकहैं दोऊ करजोरे यहिसे सुघर कोई कामनजंगी ४ (राग भजनसादा ३८०) भजुमन रामनाम चितहित से । बारबार मैं तोहिं समुझाओं समुझतनहीं वहुतदिनु बीते १ दशरथसुत श्रीजनकनन्दिनी इनसे अधिक जग कोई न नीके २ और कोई तेरे काम न ऐहै सांची बात मोरिरहु सीखे ३ सुतदारा नहिं तोहिं बचैहैं सुने बहुत अँखिनो तुइ देखे ४ (राग भजन मलार ३८१) कौन अरज ये करौंप्रभु मेरे । मेघारहतहैं रैनिदिन घेरे । तीन रोजबरसै निशिबासर अबकहिदीजेचलैबसेरे १ जबजब विनयकिहयों प्रभु तुमसे टार्यो नहीं बचन कुछ मेरे २ पन्द्रह रोज बायली कीजै कामचलैं दुनियां जग केरे ३ धान जोंधरीपर करोदाया उरदन की ब्योनी आइनेरे ४ बैजूकहैं दोऊकरजोरे सदागुलाम चरण के चेरे ५ (रागभजन मलारसादा ३८२) मेरा तुमही से बड़ा अरमान । बायली कीजे सीताराम । रैनिदिन बरसतहैं मेघ नदान । खेदिये घरको चलैं है वान १ बीसदिन पानीको नहिंकाम । भई खिलकत अब सबहैरान २ वेद को इल्मनहीं कुछ ज्ञान । एकतुमहीं से राखतहौंकाम ३ उमिरभरबीती करत अराम । एक केवल पदकोरह्योध्यान४ लगाखर्चाको मेरे जब काम । तबेतब भेज्यो पहलेदाम ५ कियो दुष्टन ने मुझे हैरान । मारिये उनको अग्निके बान ६ दीजिये इतना हमकोदान । जानिकै अपनामोहिं गुलाम ७ कहैंबैजू करिकरि परनाम । जायना खालीमोर जबान ८ (राग भजनमलार ३८३) दुष्ट मेघनको

कीजे दूर। रामतुम बड़े सजीवन मूर। जौन चाहौतुम सोई होय। आपकी समिताको नहिंकोय। किसानी दुनियाँ जातहैबूड़ि १ महाजड़ ऐसेहैंअज्ञान। बरसतेपानी अब बेकाम। मासयक पड़े उड़ावें धूरि २ करो अरजी मेरीमंजूर। फकततुमहींपरमोरगरूर। और कोईकीनहीं जरूर।कहैंबैजूसुनिलीजेहजूर।डारियेपापिनकोबलतूर ३ (राग भजन सादा ३८४) सीताराम नाम सुख करतो। वेद पुराण सराहत इनको बिना इन्हें कोई काम न सरतो १ ऋषि मुनि नित सब ध्यावत इनको रहत गुलाम चरणके तरको २ जपतप योग बैराग यतनकरि बिना हरि कृपा झूठ सब टटको ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे मेरो तो मन इनहिन सँग अटको ४ (रागभजन सादा ३८५) सीताराम नाम दोउ चोखे। बाम अंग श्री जनकनन्दिनी दाहिने कर लक्ष्मण जी छोटो १ जो जो प्रीति कियो है इनसे दिहिनि नहीं काहूको धोखो २ दासन के सँग निशिदिन घूमत पलक एक राखत नाहिं ओटो ३ जल बूड़त गजराज उबार्यो खम्भ फोरि प्रह्लाद को दोखो ४ बैदेही शरण सब आश छोड़ि कै केवल रहिये एक राम भरोसो ५ (राग भजन सादा ३८६) मेरे तो प्राण सिया रघुराई। पूरणब्रह्म अवधेश लाड़िलो आदि शक्ति जानकी माई १ और कोई मोहिं नीक न लागे इनका देखे हम बहुत जुड़ाई २ लक्ष्मण लालभरत शत्रूहन रघुपतिके छोटे लगैं भाई ३ घरिपल छिनमेरे चितसे न भूलै इनके चरणकी बलिबलिजाई ४ बैदेहीशरण कहैं करजोरे इनकी जूंठनि रोज हम खाई ५

(रागभजन सादा३८७) सबबिधि रामशरणीहौं तिहारो। जन्मजन्म तुमहीं मोहिंपाल्यो औगुणनहिंएकनिहार्‌यो १ लरिकाई से बूढ़ापा लौं खरचा दियो हमारो २ सीतापति करुणा अब कीजै देखिहौं ना और दुवारो ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे रघुपति आय कै मोहिं उबारो ४ (रागभजनसादा ३८८) रहुमन राम सियाको चेरो। भरमत फिरत मोहमायामें झूठ काम यह भोरो १ घरि पल छिन मेरे चितसे न बिसरो सुफल जन्म तबतेरो २ बारबार मैं तोहिं समुझाओं अबहीं चेतु सबेरो ३ बिन हरिभजे संतबिनसेये ज्यों शूकर जग केरो ४ बैजूकहैं दोऊ करजोरे सीखमानु यह मेरो। सीताराम जपो निशिवासर रहिहै ना कुछ थोरो ५ (राग भजनसादा३८६ अबतो राम मेरीतन हेरो। जन्मजन्म भुलिहौं नहिं कबहूं रहिहौं चरण को चेरो १ सदादीनपर दायाराखो बूढ़ापामें फिकिरि न छोड़ो २ हौंलाचार बिचारकर देख्यों रहिहौं तोर कनौंरो ३ दीनदयाल दानयह दजि देखा करौं मुख तोरो ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे बांहगहो कबहूं नहिं छोड़ो ५ (रागभजन सादा ३६०) मिथ्या जन्म बीतिगयो मेरो। नाहरिभज्यों संतनहिं सेयों औगुण किह्यों घनेरो १ तीरथबरत योग जप संयम कीन्हों नहीं कुछ बहुत न थोरो २ अन्त समय कैसी निबहैगी भवसागर में बड़ाहै अँधेरो ३ बैदेही शरण कहैंकर जोरे सीताराम भरोसातेरो ४ (रागभजन सादा ३६१) सीताराम बांह गहि लीजे। बारबार मैं अरज करतहौं दुःख तनक नहिंदीजे १ सुखकीसीवँ अवध आनँदछवि

हुवे बास चित दीजे २ गुणऔगुण एको नाहिं हेरो माफ खतासबकीजे ३ बैदेहीशरण कहैंकरजोरे नैननओट न कीजे४(रागभजनसादा३९२)ऐसो मूढ़ मन्द मनमेरो। भरि भरि उद्र बिषै नित चाखत रहत रैनि दिन घोरो १ सन्तन को सतसंग करत नाहिं महा कठिन अति भोरो २ कोटिन कोटि तरह समुझायो फिरत नहीं यह फेरो ३ हरि चरचा कबहूं नाहिं राखत वेश्यन के चरणन को चेरो ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे सीताराम भरोसा तेरो ५ (राम भजन सादा ३९३) अब मोहिं राम बली को भरोसो । भरमत फिरत मोह माया में खायो बहुत दिन धोखो १ जबतक जीहौं यह रस पीहौं रखि हौं मन सन्तोखो २ दशरथ सुत श्री जनकनन्दिनी इनसे को सुघर अनोखो ३ और काम मोहिं नीक न लागै यह है मीठो चोखो ४ बैजू कहैं दोऊ करजोरे कृपाकरो हमतन हरि देखो ५ (राग भजन सादा ३९४) राम तुमहीं से मेरा मन मोटो। तुमहीं जन्म दियो मानुषको किह्यो पलक नाहिं ओटो १ जगदम्बा श्रीजनकनंदिनी पूरण ब्रह्म दशरथ को ढोटो २ लरिकाईं से बुढ्ढापा लौं किह्यों काम सब खोटो ३ सन्तन को सतसंग न कीन्हों वेश्यन ने मेरा धन लूटो ४ बैदेही शरण सियराम रूप लखि ई हैं बड़े इनसे सब छोटो ५ (राग खेमटाहोली का ३९५) राम के हाथ अबीर लषण लीन्हें पिचकारी। मचिरह्यो फाग अवधपुर भीतर खेलत नर औ नारी १ नारद शारद ऋषि मुनि मोहे छबि देखत त्रिपुरारी २ बिमान चढ़े देवता सब देखैं भोजन भाव बिसारी ३

बैजू कहैं दोऊ करजोरे सीतापतिपर मैं वारी ४ (राग खेमटाहोली ३९६) फाग खेलत रघुनन्दन छबि है जग से न्यारी । भारत लषणलाल शत्रूहन संग लिहे सिय प्यारी १ ऋषि मुनि देखि हरषि हिय हुलसें योग युगुति औ बिसारी २ मचि रह्यो घोर शोर तिहुँपुर में आनँद सब नर नारी ३ बैदेही शरण ठाढ़ करजोरे हरि चरणन की बलिहारी ४ (राग खेमटा ३९७) अरी सिय प्यारी मैं तोरी बलिजाउँ । लोग करैं चरचा मैं बहुत लजाउँ । हमरे तुमरे बिछोह नहिं पलको विवेक बिचार कोहै यह दाउँ १ ऋषि मुनि के दरशन करि आओ लक्ष्मण जी जानत सब गाउँ २ करता की गति कोऊ नहिं जानै नेम बिचार कोहै यह ठाउँ ३ बैदेही शरण कहैं करजोरे प्रभु लीला सुनि बहुत जुडाउँ ४ (रागभजन सादा ३९८) सांची प्रीति को बिछोह न कीजे । भरमत होय धीर देदीजै । बारबार यह अरजकरतहौं गरज मोरिसुनि लीजे । मैं अधीन रघुबीर तिहारे बाँह पकरि गहिलीजै । माफ औगुण सब कीजे १ जबसे आई शरण तिहारी और पुरुष से मन नहिंरीझे । दुष्टलोग मिथ्या करैं चरचा कसम प्रतीत चहौ लैलीजै २ तुम सिवाय को हितूहमारे झूठीबातको ख्याल नहिं कीजै । मोहिं आश सबभांति तिहारी नैनओट नहिंकीजै । दुःखदारुण मतिदीजे ३ मन चितसे तुमही धनमेरे बिनती कहौं कानसुनि लीजै । दासी राखिये सदाचरण की और के द्वारजान नहिं दीजै ४ बैदेही शरण कहैं कर जोरे निशिदिन रहौं तुम्हीं में रीझे । वृद्धभये पौरुषसब

थाके लोभ मोह हरिलीजै। भजन करने अब दीजै५ (राग भजनसादा३९९) रामसियात्यागिदियो अब गृहसे। नितउठि लोगकरैं चरचासब सुनिनिजात बात यह हरिसे१ कै निराश आश बैदेही चली उदास हालकहै केहिसे २ बालमीक के लग पहुँचायो पूंछत हाल नैनजल सरसे३ बैदेही शरण कहैं करजोरे ऐसी रीति चली है तबसे ४ (राग भजनसादा ४००) रामयज्ञरची बेदकी बिधिसे। श्यामकरण घोड़ाकोछोंड़ा बँधिहै जौन लड़ब हमतेहि से१ देशदेशान्तरमें फिरिआयो बाँधत लोग जगत के सजके २ लौकुश बांधिलियो ताजीको सदानिडर तनको नहिं डरते ३ एकतो राजकुमार दोऊबालक दूसर दीन अशीश मुनिहितसे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे कैहैयुद्ध पिता औसुतसे ५ (रागभजनसादा ४०१) रामसुनि हाल चढ़े लड़बेको। ऐसो कौनभयेउ जगमाहीं बांधि लिहिसि हमरे घोड़ेको १ बानर भालु लियो कपिसैना जानत नहीं हाल दोउ सुतको २ ब्रह्मावर्त निकट जब पहुँचे हाहाकार मचो दोउ दलको ३ भारत लषणलाल शत्रुहन हनुमत बीर निडर बे खटको ४ सन्मुख युद्ध होनजब लागो बालमीक जानत लौकुशको ५ मूलमंत्र समुझाय दियो यह पितासे उचित लड़ब नाहिं तुमको६ तब मुनिलैकै पांव परायो माफ कसूर कीजिये इनको ७ श्याम करण को सँगलै लीन्हों चले देखि मिशिरिखकी वरको८बैजूकहैं दोऊकरजोरे रहौंगुलामसदाइसघरको९ (राग भजन सादा ४०२) यज्ञ को नेम राम फिरि ठानो। ऋषि मुनि देव मनुज सब आये गुर वशिष्ठ सुनि

किये पयानो १ नैमिषारण्य में यज्ञ रचोहै पायो हाल भूप सब आनो २ ग्रह औ चक्र धस्यो गुरु भूसुर कुम्भ औ कलश कनक के जानो ३ अग्नि कुण्डकी कियो प्रतिष्ठा बैदेही सुवरण की मानो ४ आहुति होनलाग चहुँवर से बालमीक लौकुश रिसियानो ५ यह अनुचित सिय देखि नयन से धृग जीवन जग धरणि समानो ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे बिधिका हाल कोऊ नहिं जानो ७ (राग भजन सादा ४०३) राम मिशिरिख से यज्ञ करि आयेरे । मंगलचार अवध में छाये घर घर बजत बधायेरे १ सुर नर मुनि सब करत प्रशंसा देवन हरषि सुमन बरषायेरे २ पितृन को सुरलोक पठायो लौकुश को सँग लै आयेरे ३ अचल राज रजधानी कीन्हो प्रजा अनन्द परम सुख पायेरे ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे सन्त बिप्र के अति मन भायेरे ५ (राग भजन सादा ४०४) राम से मिलन कालजी आयेरे । लक्ष्मणजी चौकीपर बैठे भीतर जान कोई नहिं पावैरे १ बिश्वामित्र क्षुधा के गर्जी लक्ष्मणजी से हाल जनायेरे २ तब मुनिकहा रामक्रोटेरो शाप देनको अतिधमकायेरे ३ लक्ष्मण गये खौफ के मारे रघुनन्दन से हाल बतायेरे ४ बोले काल भई यह अनुचित रीति भांति रही तुम्हरे बनायेरे ५ तब रघुपति लक्ष्मण से रोषे देखिहचों ना मुख परण छुटायेरे ६ बैदेही शरण कहैं करजोरे हरि इच्छा कोई जानि न पायेरे ७ (राग भजन सादा ४०५) लषण कह्यो धृग जीवन यहि जग में। पलक एक देखे बिन रघुपति तजिहौं प्राण तुरत यक छिन में १ जो सुख

सुरपुर में नहिं काहू सो सुखपायो हरिचरणनमें २ सो हरि हमैं दूरिकियो संग से रहिकै काह करब हम घरसें ३ सरयू निकट जायकै बैठे ध्यान कियो यह मनमें ४ तजिकै देह रामके दुख में शेशाकार भयो यक पलमें ५ वैदेही शरणकहैं करजोरे रामविरहसहिसके न तनमें ६ (राग भजन सादा ४०६) राम गये धाम अवध सब लैकै। कुल परिवार कह्यो सब ऋषि मुनि करिबे काह तुम्हैं बिन रहिकै १ हरिसे बिमुख रहे तीपुर में करि हैं काह देह यह बाचिकै २ यई अयोध्या बासी बाजे रोटी खात जगत में ठगिकै ३ वैदेही शरण कहैं करजोरे सुनि नहिं सकौं बात यह दुखकै ४ (राग भजन सादा ४०७) जो जन भजनई नित उठि गैहैरे । दशरथ सुत श्री जनकनंदिनी इनके चरणन मा मन चित लैहैरे १ ऋषि मुनि सन्तकरेंगे दाया पाप दोष कुछ तीर न ऐहैरे २ अन्त समय सुरपुर को जैहैं भक्ति अभय पद पैहैरे ३ हरि मूरति हिरदय बिच बसिहै काल तीर नहिं ऐहैरे ४ आवागमन रहित ह्वैजैहैं निडर रही कबहूं न डरैहैरे ५ निशिदिन राम सिया मुख देखिहैं अजर अमर ह्वै जैहैरे ६ वैदेही शरण कहैं करजोरे दुख सपनेउ नहिं पैहैरे ७॥ (रागमलार) जानिकै दुर्बल निपट अनाथ मोर प्रण राखिलिहो तुमनाथ १ हालसब जानतहो रघुनाथ नरषि दिहो पानी भयों सनाथ २ हानि औ लाभ दोऊतेरे हाथ रहतहो निशिदिन दासकेसाथ ३ कहैं बैजू चरणन धरिमाथ बांहमेरी गहिये श्रीपतिनाथ ३ (राग बिलावल) आजु अधिक छबि लगत भलीरी । रतन ज-

ड़ित सिंहासन बैठे दशरथसुत श्रीजनक ललीरी १ भ-
रत लषणलाल शत्रूहन मानो बेलिफल फूल फलीरी २
बरषहिं सुमन देवसब हरषहिं देखनको नरनारि चली-
री ३ बैदेही शरण कहहिं करजोरे धन्यभूमि धनि अ-
नँद घरीरी ४ (रागलावनी) साधु विप्रकी करैजो बु-
राई वह पापी यमपुर को जाई। सदारीति याहीचलि
आई वेद पुराण सबन यहिगाई १ कैहै पिंडरोगी युग
युग दुखभोगी सपनेउ सुख कबहूं नाहिंपाई २ तीरथवर्त
योगजप संयम कोटिकरै नत रोगनजाई ३ बैजूकहैं
सुनो जड़ मूरुख सब से कहतहौं मैं गोहराई ४ (राग
लावनी) हम से जनि कोई रारिकरै हम साथी भूषण
कबिकेहैं। भैरों दानी काली रानी बजरंग उसको लै
परते हैं १ राजा बानी गर्बी अभिमानी इनको नहिं
जरा से डरते हैं २ तहसीलदार युग युग बहाल थाने
को खौफ़ कुछ रखते हैं ३ जो ईमान्दार औ मेरे यार
पाजी मुझे देखिके जलते हैं ४ हम पूरुब जन्म में किया
योग खाने को पाते मोहनभोग सूमनका घेरे रहत रोग
पापी नित बहि बहि मरते हैं ५ बैजू को बिश्वास सिया
राम आश घर बैठे मौजै करते हैं ६ (राग लावनी)
सुनिये गणपति गिरिजा महेश मेरे शत्रुनकी ना राखो
रेख। जो हरत जीविका नित उठि हमेश तिनके ठोंको
बज्जरकी मेख १ हैं महापातित पापी बिशेष दाया को
तनक ना राखैं लेश २ हम का कहैं तुम से हननराज
यक पुरुष लिहिमि सब कुलकी लाज यहु जन्म जन्म
नहिं जैहै दोष ३ सुनिये कालीभैरों संदेश बैजू तुम्हर

चरणन भरोस ४ (राग लावनी) केवल यक आस बिश्वास नामकी इच्छा भोजन खाते हैं। गुरु चरणों में चित लाते हैं सिय राम रैन दिन ध्याते हैं १ कहुं आते हैं ना जाते हैं खरचा घर बैठे पाते हैं२ गर्बी अभिमानी पापी अपिमानी निज कर्म्मों से जलजाते हैं ३ जे साधु बिप्र से राखैं द्रोह तिनका प्रभु से युग युग बेछोह ते दुष्ट नरक को जातेहैं ४ बैदेही शरण कहैं करजोरे रघुनन्दन को देखि जुड़ाते हैं ५॥

इतिश्रीरामचरित्रानुरागावलीउत्तरसप्तम स्कन्धसमाप्तम् ७॥

अथ पुस्तक समाप्त के सम्वत् मास बारादि निर्णय।

दोहा॥

युग्म बाण ग्रह चन्द शुभ सम्बत बिक्रम भूरि॥
कृष्ण चौथि मधु मास गुरु पुस्तक हरि गुण पूरि १
शर निधि नागरु चन्द्र शुभ ईशा सन पहिचानि॥
मार्च वेद शशि वृहस्पति पूरण पुस्तक जानि २

मनहरण दण्डक॥

युग्म बाण नन्द चन्द सम्बत सुकृष्णपक्ष मधु मास चौथि तिथि गरुबार जानिये। राम रस रसिक जनन हित गानकीन आनँद उमंग अंग अंग हुलसानिये॥ उठत तरंग राम रंगपाप भंग काम क्रोध मोह लोभ बह्नि याहीसों बुझानिये। रामअनुरागावली पुस्तक ललित पद कीन्हीं बैदेही शरण चित्त हुलसानिये॥ १॥

इतिशुभम्भूयात्॥

इस मतबे में जितने तरहकी राग की किताबें हैं उन में से कुछ नीचे लिखी जाती हैं जिनका विशेष अभिप्राय पुस्तकावलोकनसे विदितहोगा जिनमहाशयोंको अभिलाषाहो वे इस मतबे की फेहरिस्त कुतुब जो बिलाकीमत भेजीजासक्ती है पत्रद्वारा मँगाकर कीमत अच्छीतरह जानलेवें ॥

सूरसागरजलीक़लम ॥

सूरदासजी विरचित-जिस में अत्यन्त ललित २५ हज़ार के अनुमान भजनहोंगे-जिनसे सैकड़ों कृष्णावतारकी विस्तारपूर्वक लीला वर्णित हैं ॥

रागप्रकाश ॥

राजामाधवसिंह कृत-इसमें अच्छे २ कल्याण, खेमटा, ठुमरी और अद्धा आदि हैं और सब रागोंके प्रमाण भी हैं ॥

ख़यालातमातादीन ॥

लखनऊ निवासी, लालामातादीन कायस्थ कृत—जिसमें ब्रह्मज्ञानके मार्गपर लावनी व ख़्याल हैं ॥

नवरत्नभाष्य वृन्दावनविलास ॥

बाबू श्यामलाल रचित—जिसमें रासलीला के सम्पूर्ण पद और गाने के दोहे लिखे हुये हैं ॥

बीणाप्रकाश ॥

तर्जुमा कानूनसितार भाषा पं० प्यारेलालकृत-इस में सितारों के ठाट, परदोंपर सीखने के लिये अंक, मिज़राब वग़ैरह की तरकीब और मीड़ोंके क़ायदे और अन्तमें सबराग और रागिनियां भी पद समेत लिखी हैं जिनसे गान विद्या में बहुतही जल्दी बोध होता है ॥

आनन्दसागर ॥

मुंशीजगन्नाथसहाय-संग्रहीत-इसमें अच्छे २ प्राचीन व वर्त्तमान समय के कवियोंके बनायेहुये उत्तम २ राग हैं ॥

सीतारामसंयोगपदावली ॥

बैजनाथजी कृत-इसमें राम जानकीका जन्म चरित्र चित्तके आनंद देनेवाले रागों में वर्णित है ॥

रागविनोद ॥

पं० महादेवसुकुलकृत-जिसमें श्रीकृष्ण और राधिकाका गुणानुवाद अनेक रागों में वर्णित है ॥

मनोहरमंजरी पण्डित दुलारेमिश्र कृत ॥

जिसको ज़िलाउन्नाव मौज़े बिग्रहपुर निवासी रामराखन मिश्रने तारगांव निवासी पण्डित रामविहारी सुकुलसे शुद्धकराय छापने को दिया जिस में अनेक प्रकारके राग रागिनियां और बारहमासे इत्यादि हैं ॥

श्री सियास्वयम्बर ॥

श्रीरामानंदचतुरदासकृत—जिसमें श्रीरामचंद्र व जानकी जी का स्वयंबरोत्साह उत्तमतासे अनेक प्रकारके रागोंमें वर्णित है ॥

सियास्वयम्बर ॥

श्रीमहाराजा माधवसिंह बहादुरकृत—इसमें भी श्रीराम और जानकीजी के स्वयम्बर की कथा अत्युत्तम रागों में वर्णित है ॥

धर्मोपदेश ॥

बाबा चतुरदास कृत—जिसमें श्रीकृष्णजी का गुणानुवाद खम्माच, ठुमरी और होरी आदिके अनेक रागों में वर्णित है ॥

श्री रासलीला ॥

सरयूशरणजीकृत—जिसमें परब्रह्मपरमेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र व श्री वृषभानु नन्दनीका विमल रासविलास बालचरित्रसे भ्रमरगीत तक अनेक प्रकार के पदों में वर्णित है ॥